1-го МАЯ 1893 ГОДА.

# КОСТРОМСКІЯ ЕПАРХІАЛЬНЫЯ ВѢДОМОСТИ.

Выходятъ 1 и 15 чиселъ. Цѣна за годъ 5 рублей; отдѣльно 25 коп. за номеръ.

Годъ VII.

№ 9.

Адресъ: Кострома, въ Редакцію КостромскихъЕпархіальныхъ Вѣдомостей.

Объявленія печатаются по 15 коп. за обыкнов. строку за одинъ разъ, по 10 коп. за два и болѣе раза.

## ОТДѢЛЪ 1. ЧАСТЬ ОФФИЦІАЛЬНАЯ.

### Распоряженія епархіальнаго начальства.

I. О томъ, что слѣдуетъ доносить консисторіи о каждомъ случаѣ присоединенія раскольниковъ къ православію *(ук. Костр. д. консисторіи № 2848).*

По указу Его Императорскаго Величества, Костромская д. консисторія слушали отношеніе канцеляріи Оберъ-Прокурора Св. Синода, отъ 13 февраля сего года за № 652, на имя г. секретаря консисторіи, слѣдующаго содержанія: „По производящемуся въ одной изъ духовныхъ консисторій дѣлу о погребеніи по раскольническому обряду лица, принадлежащаго къ православію, получены Оберъ-Прокуроромъ Св. Синода свѣдѣнія, изъ коихъ усматривается, что при повѣнчаніи причтомъ единовѣрческой цер-

кви раскольника съ дѣвицею православнаго исповѣданія, предварительно совершенъ былъ надъ нимъ обрядъ присоединенія его къ православію на правахъ единовѣрія, между тѣмъ епархіальное начальство не увѣдомило о семъ подлежащее гражданское начальство для исключенія присоединеннаго изъ списковъ раскольниковъ, вслѣдствіе чего онъ, и по присоединеніи къ православію, числился состоящимъ въ расколѣ и по смерти погребенъ былъ раскольническими лжепопами. Въ видахъ предупрежденія на будущее время подобнаго настоящему случая, канцелярія Оберъ-Прокурора Св. Синода, по порученію Его Высокопревосходительства, поставляетъ Васъ въ извѣстность, что о каждомъ случаѣ присоединенія раскольника къ православію, слѣдуетъ увѣдомлять то гражданское начальство, въ вѣдѣніи коего присоединившееся лицо состоитъ, для исключенія его изъ списковъ раскольниковъ". Съ утвержденія Его Преосвященства, приказали: о содержаніи сего отношенія канцеляріи г. Оберъ-Прокурора Святѣйшаго Синода объявить причтамъ церквей Костромской епархіи циркулярными указами и чрезъ напечатаніе въ Костромскихъ Епархіальныхъ Вѣдомостяхъ, съ тѣмъ, чтобы о каждомъ случаѣ присоединенія раскольника къ православію, они немедленно доносили консисторіи, которая обязана увѣдомлять то гражданское начальство, въ вѣдѣніи коего присоединившееся лицо состоитъ, для исключенія его изъ списковъ раскольниковъ. Апрѣля 12 дня 1893 г.

II. Объ именованіи по отчеству обратившихся въ православіе евреевъ *(изъ опредѣленія Костр. д. консисторіи отъ* $\frac{13\ марта}{5\ апрѣля}$ *1893 г. за № 991).*

Костромская духовная консисторія слушали отношеніе канцеляріи Оберъ-Прокурора Святѣйшаго Синода, отъ 22 февраля 1893 г. за № 822, на имя г. секретаря консисторіи, слѣдующаго содержанія: „Въ Центральномъ Управленіи духовнаго вѣдомства возникла переписка относительно именованія по отчеству обратившихся въ православіе евреевъ. Поводомъ къ этой пере-

пискѣ послужило слѣдующее обстоятельство: въ выдаваемыхъ означеннымъ прозелитамъ метрическихъ свидѣтельствахъ, нерѣдко, обозначается только имя ихъ, объ отчествѣ же не упоминается, а между тѣмъ по существующему порядку требуется, чтобы въ послужныхъ спискахъ лицъ, состоящихъ на государственной службѣ, обозначалось не только ихъ имя, но и отчество. Посему одно изъ учрежденій возбудило вопросъ,—какъ слѣдуетъ отмѣчать въ послужныхъ спискахъ отчество вышеупомянутыхъ лицъ. На это было отвѣтствовано сему учрежденію, что правилъ относительно отчества этихъ лицъ не установлено, практикуется же въ семъ случаѣ двоякій способъ, именно: они или удерживаютъ отчество по имени своего отца—еврея, или же принимаютъ отчество по имени воспріемника при св. крещеніи. Нынѣ учрежденіе, возбудившее изъясненный вопросъ, сообщило, что въ послѣднее время встрѣчаются отступленія отъ указаннаго способа относительно отчества обратившихся въ православіе евреевъ, а именно: въ свидѣтельствахъ, выданныхъ д. консисторіями о крещеніи нѣкоторыхъ лицъ, отчества ихъ показаны не по именамъ отцовъ ихъ—евреевъ и не по именамъ воспріемниковъ при св. крещеніи, а по тѣмъ именамъ, какія пожелали избрать произвольно сами новокрещенные. Вслѣдствіе сего канцелярія Оберъ-Прокурора Св. Синода, по порученію Его Высокопревосходительства, поставляетъ Васъ въ извѣстность, что при крещеніи евреевъ, отчество ихъ въ метрическихъ книгахъ и въ выдаваемыхъ изъ нихъ выпискахъ слѣдовало бы обозначать по имени отца—еврея, или по имени воспріемника". Съ утвержденія Его Преосвященства, **приказали**: о содержаніи сего отношенія канцеляріи Оберъ-Прокурора Св. Синода объявить духовенству Костромской епархіи къ руководству и исполненію, о чемъ и дать выписку въ редакцію Костромскихъ Епархіальныхъ Вѣдомостей для напечатанія.

# ОТЪ ГОСУДАРСТВЕННАГО БАНКА.

Таблица 5% банковыхъ билетовъ 2-го выпуска 1861 г., 4-го десятилѣтія, вышедшихъ въ тиражъ 19 марта 1893 г.

**100 р. достоинства.**

| №№ отъ | № до | Чис. лист. |
|---|---|---|
| 136673 | 137040 | 368 |
| 137046 | 177 | 132 |
| 182629 | 183128 | 500 |
| 189149 | 189237 | 89 |
| 248 | 658 | 411 |
| 199721 | 199733 | 13 |
| 841 | 870 | 30 |
| 873 | 200077 | 205 |
| 200079 | 330 | 252 |
| 207576 | 208056 | 481 |
| 208067 | 085 | 19 |
| 214005 | 214159 | 155 |
| 161 | 477 | 317 |
| 479 | 506 | 28 |
| 231192 | 231581 | 390 |
| 239608 | 240041 | 434 |
| 240047 | 089 | 43 |
| 091 | 113 | 23 |
| 259464 | 259527 | 64 |
| 540 | 541 | 2 |
| 543 | 550 | 8 |
| 553 | 782 | 230 |
| 259784 | 259964 | 181 |
| 968 | | 1 |
| 970 | 983 | 14 |
| 262038 | 262063 | 26 |
| 066 | 076 | 11 |
| 078 | 109 | 32 |
| 112 | 423 | 312 |
| 425 | 543 | 119 |
| 271550 | 271559 | 10 |
| 562 | 839 | 278 |
| 845 | 850 | 6 |
| 852 | 869 | 18 |
| 872 | 896 | 25 |
| 898 | 988 | 91 |
| 995 | | 1 |
| 998 | 272019 | 22 |
| 272022 | 025 | 4 |
| 027 | 071 | 45 |

Итого 5,390 бил. на сумму 539,000 руб.

**150 р. достоинства.**

| №№ отъ | № до | Число лист. |
|---|---|---|
| 21664 | 21877 | 214 |
| 885 | 894 | 10 |
| 896 | 904 | 9 |
| 907 | 908 | 2 |
| 911 | 22075 | 165 |
| 32448 | 32847 | 400 |
| 35822 | 36221 | 400 |
| 43544 | 43799 | 256 |
| 802 | 854 | 53 |
| 881 | 926 | 46 |

Итого 1,555 бил. на сумму 233,250 руб.

**500 р. достоинства.**

| №№ отъ | № до | Число лист. |
|---|---|---|
| 36521 | 36620 | 100 |
| 622 | 721 | 100 |
| 39157 | 39186 | 30 |
| 188 | | 1 |
| 190 | 205 | 16 |
| 212 | 213 | 2 |
| 218 | 225 | 8 |
| 227 | | 1 |
| 230 | 371 | 142 |
| 779 | 978 | 200 |
| 41988 | 42093 | 106 |
| 42095 | 188 | 94 |
| 49491 | 49583 | 93 |
| 585 | 691 | 107 |
| 56173 | 56272 | 100 |
| 274 | 313 | 40 |
| 315 | 326 | 12 |
| 328 | 329 | 2 |
| 331 | 361 | 31 |

Итого 1,185 бил. на сумму 592,500 руб.

**1,000 р. достоинства.**

| №№ отъ | № до | Число лист. |
|---|---|---|
| 7701 | | 1 |
| 711 | 7788 | 78 |
| 790 | 844 | 55 |
| 846 | 911 | 66 |
| 9113 | 9199 | 87 |
| 202 | 215 | 14 |
| 217 | 227 | 11 |
| 232 | 309 | 78 |
| 325 | 329 | 5 |
| 331 | 335 | 5 |
| 10212 | 10272 | 61 |
| 276 | 301 | 26 |
| 303 | | 1 |
| 313 | 333 | 21 |
| 377 | 391 | 15 |
| 398 | 400 | 3 |
| 409 | 473 | 65 |
| 479 | 486 | 8 |
| 12260 | 12283 | 24 |
| 285 | 355 | 71 |
| 357 | 379 | 23 |
| 381 | 388 | 8 |
| 390 | 414 | 25 |
| 416 | 464 | 49 |
| 33681 | 33702 | 22 |
| 704 | 750 | 47 |
| 752 | 785 | 34 |
| 787 | 801 | 15 |
| 803 | 811 | 9 |
| 814 | 815 | 2 |
| 818 | 888 | 71 |
| 45849 | 45929 | 81 |
| 931 | 939 | 9 |
| 941 | 982 | 42 |
| 984 | 993 | 10 |
| 995 | 998 | 4 |
| 46002 | 46051 | 50 |
| 053 | 056 | 4 |
| 51005 | 51043 | 39 |
| 244 | 404 | 161 |
| 53214 | 53413 | 200 |

| | | |
|---|---|---|
| 614 | 813 | 200 |
| 56341 | 56540 | 200 |
| 746 | | 1 |
| 749 | 751 | 3 |
| 753 | 948 | 196 |
| 82501 | 82700 | 200 |
| 138482 | 138492 | 11 |
| 494 | 505 | 12 |
| 507 | 511 | 5 |
| 515 | 550 | 36 |
| 553 | 572 | 20 |
| 574 | 588 | 15 |
| 599 | 624 | 26 |
| 626 | 627 | 2 |

Итого 2,527 бил. на сумму 2.527.000 р.

**5,000 р. достоинства.**

| №№ отъ | до | Число лист. |
|---|---|---|
| 1047 | 1062 | 16 |
| 64 | 87 | 24 |
| 4829 | 4834 | 6 |
| 840 | 852 | 13 |
| 863 | 883 | 21 |
| 5143 | 5182 | 40 |
| 7798 | 836 | 39 |
| 838 | | 1 |
| 9012 | 9039 | 28 |

Итого 188 билет на сумму 940.000 руб.

**10,000 р. достоинства.**

| №№ отъ | до | Число лист. |
|---|---|---|
| 211 | 214 | 4 |
| 216 | 217 | 2 |
| 222 | 226 | 5 |
| 229 | | 1 |
| 243 | 248 | 6 |
| 250 | 251 | 2 |
| 752 | 771 | 20 |
| 942 | 949 | 8 |
| 951 | 961 | 11 |
| 963 | | 1 |
| 3172 | 3181 | 10 |
| 183 | | 1 |
| 185 | | 1 |
| 187 | 194 | 8 |
| 339 | 356 | 18 |
| 360 | 361 | 2 |
| 5822 | 5824 | 3 |

Итого 103 билета на сумму 1.030,000 р.

**25,000 р. достоинства.**

| №№ отъ | до | Число лист. |
|---|---|---|
| 457 | 464 | 8 |
| 678 | 685 | 8 |
| 758 | 761 | 4 |
| 763 | 766 | 4 |
| 1218 | 1223 | 6 |
| 242 | 243 | 2 |
| 352 | 359 | 8 |
| 424 | 439 | 16 |
| 888 | 895 | 8 |
| 992 | 999 | 8 |
| 2143 | | 1 |
| 152 | 2153 | 2 |
| 156 | 158 | 3 |
| 161 | | 1 |
| 163 | | 1 |
| 3543 | 3550 | 8 |
| 4182 | 4189 | 8 |
| 879 | 884 | 6 |

Итого 102 билета на сумму 2.550,000 р.

Всего 11,050 бил. на сумму 8.411,750 р.

Теченіе процентовъ по симъ билетамъ прекращается съ 1 сентября 1893 г.

По вышедшимъ въ тиражъ билетамъ, капиталъ и проценты по купону на срокъ 1 сентября 1893 г., по положенію о сихъ билетахъ, будутъ выплачиваемы съ 1 сентября 1893 г. въ банкѣ, конторахъ и отдѣленіяхъ его. Желающіе же получить уплату по билетамъ ранѣе показаннаго выше срока 1 сентября, могутъ предъявлять для сего принадлежащіе имъ билеты въ банкъ, конторы и отдѣленія его и ранѣе 1 сентября, при чемъ если билеты предъявлены до 1 августа, то проценты по купону на срокъ 1 сентября 1893 года выдаются только по день предъявленія билета къ платежу. Билеты, предъявляемые къ платежу до 1 сентября, должны имѣть при себѣ купоны, начиная съ купона на срокъ 1 сентября 1893 г. включительно; предъявляемые же къ платежу послѣ 1 сентября, должны имѣть всѣ купоны, начиная со срока 1 марта 1894 г. включительно. За каждый недостающій купонъ соотвѣтствующая сумма будетъ удержана изъ капитальной по билету суммы.

## Отъ правленія Солигаличскаго д училища

Объявляется, что на составленіе стипендіи при Солигалич. д. училищѣ въ память 75-лѣтія его получены слѣдующія пожертвованія отъ духовенства 1 Солигаличскаго округа: причта Николаевской ц. с. Верхняго-Березовца 40 к.; причта Ильинской ц. с. Тутки 50 к.; причта Васильевской ц. с. Демьянова 50 к.; причта Николаевской въ Чудцѣ ц. 1 р.; причта Нижне-Березовской Успенской ц. 60 к.; причта Трехсвятительской ц. с. Одноушева 40 к.; причта Успенской ц. г. Солигалича 50 к.; причта Воскресенской ц. г. Солигалича 30 коп.; причта Ѳеодоровскаго женскаго монастыря 50 к.; свящ. Крестовоздвиженской ц. г. Солигалича Іос. Софійскаго 5 р.; псаломщ. той же ц. Груздева 10 коп.; причта Входоіерусалимской ц. г. Солигалича 1 р; причта Преображенской ц. г. Солигалича 20 к.; причта Солигаличскаго собора 50 к. Съ прежними пожертвованіями стипендіатскій капиталъ въ настоящее время простирается до 203 р. 27 к. Пожертвованія принимаются правленіемъ училища съ благодарностію.

---

## Правленіе Попечительнаго объ учащихся общества

Считаетъ своимъ долгомъ сообщить духовенству Костромской епархіи извлеченіе изъ отчета за 1892 годъ.

*Въ 1892 году на приходъ поступило:*

| | |
|---|---|
| 1. Процентовъ съ капиталовъ общества . | 287 р. 37 к. |
| 2. Взносовъ отъ дѣйствительныхъ членовъ . | 220 р. — |
| 3. Пожертвованіе Его Преосвященства Преосвящ. Виссаріона . . . | 50 р. — |
| 4. „ отъ Костр. каѳедр. собора | 35 р — |
| 5. „ о. настоятеля Желѣзно-Боровскаго монастыря . . . | 5 р. — |
| 6. Получено отъ приходовъ и духовенства чрезъ о.о. благочинныхъ . . . | 303 р. 72 к. |

| | |
|---|---|
| 7. Пожертвованіе неизвѣстнаго . . | 5 р. 68 к. |
| 8. Собрано членами общества по подписнымъ листамъ . . . . | 7 р. 40 к. |
| 9. Получено отъ Костром. губ. зем. управы пособія на 1892 годъ . . . . | 300 р. — |
| 10. Получено отъ концерта, устроеннаго любителями музыкальнаго искусства въ пользу воспитанниковъ гимназіи, окончившихъ курсъ въ 1892 году . . . . | 276 р. 75 к. |
| 11. Получено возмѣщенія 5% налога съ доходовъ отъ каниталовъ за 1892 годъ . | 4 р. 24 к. |
| 12. Возвращены изъ городскаго училища остатки суммы, неизрасходованной по назначенію . | 2 р. — |
| Итого деньгами . | 1496 р. 86 к. |
| „ билетами . | 600 р. — |
| Всего поступило | 2096 р. 86 к. |

*Въ 1892 году израсходовано:*

| | |
|---|---|
| 1. На покупку 5% банков. билета въ 100 р. | 103 р. 54 к. |
| 2. Передано, согласно Уставу, въ попечительный о бѣдныхъ комитетъ для отсылки въ совѣтъ Импер. человѣк. общества . . | 20 р. 77 к. |
| 3. За напечатаніе Устава, отчета и бланокъ | 62 р. — |
| 4. Писцу и разсыльному . . | 62 р. — |
| 5. Выдано пособій учащимся на сумму . | 1661 р. 73 к. |
| А именно: | |
| Воспитан. губернской гимназіи . . | 369 р. 30 к. |
| „ духовной семинаріи . . | 695 р. 15 к. |
| „ духовнаго училища . . | 103 р. 60 к. |
| „ реальнаго училища . . | 93 р. 35 к. |
| „ женской гимназіи . . | 101 р. — |
| „ городскаго училища . . | 107 р. 15 к. |
| „ Нерехтской прогимназіи . . | 10 р. 12 к. |

| | | |
|---|---|---|
| „ | женскаго городскаго училища . | 13 р. 80 к. |
| „ | Богоявленскаго женскаго училища . | 14 р. 85 к. |
| „ | Большесольскаго ремесленнаго учил. . | 21 р. 55 к |
| „ | Юрьевецкаго городск. училища . | 5 р. 10 к. |
| „ | Маріинскаго дѣтскаго пріюта . | 5 р. — |
| „ | перваго Александровскаго приходск уч. | 37 р. 65 к. |
| „ | втораго „ „ . | 19 р. 80 к. |
| „ | третьяго „ „ . | 22 р. 15 к. |
| „ | Константиновскаго приходскаго учил. | 11 р. 50 к. |
| „ | Матвѣевскаго сельскаго училища . | 17 р. 16 к. |
| „ | образцовой школы при семинаріи . | 27 р. 30 к. |
| | Всего израсходовано | 2109 р. 19 к. |

Правленіемъ разсмотрѣно 170 прошеній, изъ нихъ отклонено только 10.

Получивъ отъ духовенства Костром. епархіи *303 р. 72 к.*, Попечительное объ учащихся общество выдало пособій воспитанникамъ духовной семинаріи и училища на сумму *798 р. 75 к.* Обращая вниманіе духовенства на это обстоятельство, общество надѣется, что жертва духовенства на пособія бѣднымъ учащимся не будутъ оскудѣвать.

Предсѣдатель правленія,
Каѳедральный Протоіерей *І. Поспѣловъ.*

## Отъ Кологривскаго отдѣленія епархіальнаго учил. совѣта.

Очередныя засѣданія въ 1893 году имѣютъ быть: въ апрѣлѣ, маѣ, іюнѣ, іюлѣ, августѣ, сентябрѣ, октябрѣ и ноябрѣ въ 23-е число мѣсяца.

## Свѣдѣнія изъ Костр. дух. консисторіи.

Назначаются пенсіи: по представленію еп. начальства отъ 18 февр. 1893 г. за № 1579: *по 130 рублей*: Рождество-Богородицкаго собора г. Солигалича заштатн. свящ. Василію *Березовскому* съ 28 октября 1892 г., времени увольненія за штатъ, изъ Солигаличскаго у. казначейства,—подалъ прошеніе 26 окт. 1892 г.; Троицкой ц., что въ Ликургѣ, Буйскаго у., заштатн. свящ. Іоанну *Вишневскому* съ 24 ноября 1892 г., времени подачи прошенія, изъ Буйскаго казначейства, уволенъ за штатъ 3 окт. 1892 г.; Троицкой ц. с. Солтанова, Кологрив. у., заштатн. свящ. Ксенофонту *Зяблицкому* съ 15 декабря 1892 г., времени увольненія за штатъ, изъ Макарьевскаго у. казначейства, под. прош. 8 дек. 1892 г.; Николаевской ц. с. Порги, Макарьев. у., заштатн. свящ. Геннадію *Бѣлорукову* съ 5 января 1893 г., времени увольненія за штатъ, изъ Галичскаго у. казначейства, под. прош. 2 янв. 1893 г.

*По 65 рублей:* Троицкой ц. с. Сандогоры, Костр. у., заштатн. діакону Іоанну *Владимірову* съ 23 іюля 1892 г., времени подачи прошенія, изъ Костром. губ. казначейства, уволенъ за штатъ 20 ноября 1892 г.; Введенской ц. пог. Введенскаго, Кинешемскаго у., заштатн. діакону Марку *Воскресенскому* съ 17 ноября 1892 г., времени подачи прошенія, изъ Кинешемскаго у. казначейства, уволенъ за штатъ 30 окт. 1892 г.; Георгіевской ц. с. Каликина, Чухлом. у., свящ. Григорія Горчакова вдовѣ *Маріи* съ 25 ноября 1892 г., времени смерти мужа, изъ Чухлом. у. казначейства, под. прош. 3 дек. 1892 г.; Николаевской ц. с. Шанги, Ветлуж. у., свящ. Анемподиста Віолентова вдовѣ *Параскевѣ* со 2 октября 1892 г., времени смерти мужа, изъ Ветлуж. у. казначейства, под. прод. 7 дек. 1892 г.; Николаевской ц., что на Дорку, Чухлом. у., священника—пенсіонера Павла Орлова вдовѣ *Надеждѣ* съ 9 ноября 1892 г., времени смерти мужа, изъ Чухлом. у. казначейства, под. прош. 14 янв.

1893 г.; Воскресенской ц. с. Любовникова, Костр. у., протоіерея Капитона Толгскаго вдовѣ *Софіи* съ 10 января 1893 г., времени смерти мужа, изъ Костром. губ. казначейства, под. прош. 15 янв. 1893 г.; Николаевской ц. с. Семеновскаго, Костр. у., свящ. Ѳеодора Бардакова вдовѣ *Евфрасіи* съ 14 января 1893 г., времени смерти мужа, изъ Костром. губ. казначейства, под. прош. 27 янв. 1893 г.

Праздныя мѣста: а) *священническія:* въ селѣ Красныхъ-Усадахъ Мак. у., въ с. Гаряхъ того же у., въ с. Успенскомъ того же у., въ с. Кондомѣ того же у., въ с. Бобушкинѣ того же у., въ с. Троице-Одоевскомъ Ветл. у., въ с. Макарьевскомъ того же у., въ с. Лапшангѣ Варнав. у., въ с. Беберинѣ того же у., въ с. Вознесенскомъ того же у., въ с. Тонкинѣ того же у., въ с. Верхнемежскомъ Кологр. у., въ с. Понгѣ того же у., въ с. Угольскомъ Кинеш. у., въ с. Шилекшѣ того же у., въ с. Чудцѣ Солигал. у., въ с. Сумароковѣ Костр. у., въ с. Погаряхъ Галич. у., въ с. Ноймѣ того же у.

б) *Діаконскія:* въ с. Малышевѣ Костр. у., въ с. Родникахъ Юрьев. у., въ с. Дароватовѣ Ветл. у., въ с. Заболотьѣ того же у., въ с. Тонкинѣ Варн. у., въ с. Турани того же у., въ с. Георгіевскомъ на Волу того же у.

в) *Псаломщическія:* въ с. Тонкинѣ Варн. у., въ с. Толпыгинѣ Нерехт. у.

---

**Содержаніе оффиціальной части.** Распоряженія епархіальнаго начальства: о томъ, что слѣдуетъ доносить консисторіи о каждомъ случаѣ присоединенія раскольниковъ къ православію; объ именованіи по отчеству обратившихся въ православіе евреевъ. Отъ Государствен. банка. Отъ правленія Солигаличскаго д. училища. Отъ правленія Попечительнаго объ учащихся общества. Отъ Кологрив. отдѣленія сп. учил. совѣта. Свѣдѣнія изъ Костр. д. Консисторіи. Годичный благочинническій отчетъ благочин. 1 Макарьевскаго окр. свящ. А. Горицкаго; (стр. 25—40).

---

*Редакторы: Семинаріи Ректоръ Архимандритъ Менандръ.*
*Преподаватель Семинаріи В. Строевъ.*

Дозв. цензурою. 22 Апрѣля 1893 г. Кострома. Въ Губернской Типографіи

такъ что въ общемъ сумма вознагражденія за сорокоустъ восходитъ и до 30 р., а нерѣдко и болѣе. Посему при церквахъ *(указаніе)* рѣдко прерывается будничное богослуженіе, а при церкви *(указаніе)* оно совершается ежедневно въ теченіе всего года. При послѣдней и совсѣмъ не установлено опредѣленной платы за поминовеніе; довольствуются буквально „добровольными приношеніями“, отъ чего причтъ, не имѣя прихода, получаетъ содержаніе вполнѣ достаточное.

Относительно уставной точности божественная литургія всегда совершается безъ всякихъ измѣненій и опущеній; а службы утреннія и вечернія такъ совершаются только во дни воскресные и праздничные, съ небольшими сокращеніями лишь въ чтеніи каѳизмъ и тропарей канововъ. Въ будничномъ богослуженіи на утренѣ допускаются значительныя сокращенія въ чтеніи каѳизмъ и тропарей канона, такъ что въ слухъ вычитывается по одному псалму на каждую славу и по два тропаря на каждую пѣснь канона; не при всѣхъ церквахъ читаются малыя повечерія и полунощницы. Священники пожилые и любящіе уставную точность часто прочитываютъ ихъ у себя съ вечернимъ правиломъ къ св. причащенію; но по большей части опѣ или вовсе опускаются, или прочитываются псаломщиками въ храмѣ же „про себя“. Псаломщики—дьячки стараго времени, которые еще есть въ округѣ, по справедливости почитаютъ за грѣхъ всякія опущенія въ церковной службѣ и часто по личному усердію восполняютъ ихъ между утренею и литургіею, или до утрени, доколѣ нѣтъ въ церкви священника.

При всѣхъ церквахъ округа строго поддерживается обыкновенное древне-церковное распѣвное чтеніе и въ пѣніи нигдѣ не допускаются напѣвы произвольные. Кромѣ псаломщиковъ, читаютъ и поютъ и штатные діаконы, становясь для сего въ свободное отъ діаконскаго служенія время на клиросѣ; діаконовъ, уклонявшихся отъ сего по ложному и мелочному самолюбію, благочинный понудилъ особымъ распоряженіемъ отъ 2 января сего года

за № 2. Въ приходахъ округа съ каждымъ годомъ увеличивается число прихожанъ, взрослыхъ и дѣтей, которые принимаютъ участіе въ клиросномъ чтеніи и пѣніи и такимъ образомъ много способствуютъ торжественности и благолѣпію праздничнаго богослуженія, что въ свою очередь въ народѣ возбуждаетъ и укрѣпляетъ любовь къ церкви Божіей и къ церковному богослуженію. Изъ дѣтей поютъ и читаютъ на клиросѣ по преимуществу ученики ц.-пр. школъ и школъ грамотности, состоящихъ въ непосредственномъ и всецѣломъ вѣдѣніи духовенства, которое одно, въ предѣлахъ округа, и заботится и способно поставить дѣло народнаго образованія на надлежащую его высоту, въ смыслѣ воспитанія подрастающаго поколѣнія въ духѣ церковно-религіозномъ. Земскія начальныя училища есть въ округѣ при восьми приходахъ; но изъ нихъ только въ тѣхъ училищахъ собственно школа даетъ дѣтей, способныхъ къ церковному пѣнію и чтенію и любящихъ церковное богослуженіе, въ которыхъ мѣстное духовенство, въ лицѣ преподавателей Закона Божія, относится къ своимъ обязанностямъ съ полною любовію и энергіею. Таковы священни селъ (*указаніе*). При маломъ числѣ уроковъ славянскаго чтенія и при отсутствіи собственно церковно-богослужебныхъ книгъ, въ земскихъ начальныхъ училищахъ классное славянское чтеніе ограничивается чтеніемъ Евангелія на славяно-русскомъ нарѣчіи. Лично, какъ членъ уѣзднаго училищнаго совѣта, я наблюдалъ, что славянское чтеніе въ большинствѣ земскихъ училищъ сносно только по Евангелію; Часословы же и Псалтири, а тѣмъ болѣе другія церковныя книги читаются вяло, ошибочно и совершенно безсознательно. Такое чтеніе не только не возможно въ церкви, но и опасно, въ смыслѣ соблазна для молящихся и повода къ нареканіямъ на самыя школы. Это явленіе очень естественно, какъ по самому положенію о земскихъ начальныхъ училищахъ, которымъ для славянскаго чтенія назначено всего два урока въ недѣлю и для оканчивающихъ курсъ требуется только „умѣніе читать по Евангелію“, причемъ въ экзаменномъ спискѣ

нѣтъ даже и особой графы для славянскаго чтенія,—такъ и по составу преподавателей въ этихъ училищахъ. Они мужчины по преимуществу изъ мѣщанъ и крестьянъ, получившіе образованіе въ учительскихъ семинаріяхъ, и женщины по преимуществу того же или дворянскаго происхожденія, по образованію вышедшія изъ прогизназій, гимназій и учительскихъ женскихъ семинарій. Большинство изъ нихъ, при всѣхъ своихъ педагогическихъ достоинствахъ, сами не имѣютъ навыка въ чтеніи по церковнымъ книгамъ и на урокахъ славянскаго чтенія по Евангелію—ведутъ это чтеніе разговорнымъ тономъ, съ различными восклицаніями, что придаетъ чтенію характеръ свѣтскаго, частнаго чтенія, совсѣмъ неудобнаго въ церкви. Отсюда само собою вытекаетъ и то скорбное обстоятельство въ школьной жизни дѣтей, что Евангеліе для нихъ заурядная учебная книга, которую, какъ и „Родное Слово“ Ушинскаго, или „Дѣтскій міръ“, его же, можно бросить въ товарища, при школьныхъ шалостяхъ, или изорвать, испачкать различными надписями, иногда не дѣтскими и неприличными и на всякой свѣтской книгѣ. Только священникъ—законоучитель и можетъ оградить св. Евангеліе отъ безсознательнаго дѣтскаго поруганія и славянскому чтенію дать надлежащее положеніе среди другихъ школьныхъ предметовъ; это его нравственный долгъ, отъ выполненія котораго не мало зависитъ общее истинное благо народной школы, какъ просвѣтительницы нашего темнаго народа не только въ отношеніи общеполезныхъ знаній, но и въ отношеніи религіознонравственной жизни.

Уроковъ пѣнія въ земскихъ училищахъ и совсѣмъ не положено, и въ предѣлахъ округа свѣтскіе преподаватели совсѣмъ не занимаются пѣніемъ, хотя училищное начальство, при ревизіи училищъ, и замѣчаетъ имъ: „жаль, что вы не поете! не дурно бы пріучать дѣтей къ пѣнію“! Здѣсь также много добраго даетъ ученикамъ школы приходское духовенство; и даетъ не за деньги, и не по прямой своей обязанности, а безмездно, изъ любви къ дѣлу и къ дѣтямъ, съ тою цѣлію, чтобы изъ нихъ вышли не

только грамотеи, но и добрые христіане, и въ семьи свои постепенно внесли христіанскій, церковный духъ, къ чему пріурочены школы церковно-приходскія. Несомнѣнно и уже дѣйствительными фактами подтверждается и благотворное вліяніе лучшихъ дѣтей школьниковъ на ихъ родную семью: темные въ дѣлѣ вѣры родители ихъ и прочіе взрослые члены семействъ, слушая душеполезные разсказы дѣтей, вынесенные ими изъ школы, и ихъ умилительное пѣніе и толковое чтеніе въ церкви, научаются легче и болѣе понимать христіанское ученіе и любить свою православную церковь. Въ частности дѣтское хорошее чтеніе и пѣніе въ церкви замѣтно вліетъ и на благоговѣйное, молитвенное настроеніе молящихся въ храмѣ, такъ же какъ и благолѣпное и истовое совершеніе церковныхъ службъ и молитвословій самими священноцерковнослужителями.

Духовенство округа въ числѣ 5-ти священниковъ и одного діакона *(указаніе)* не мало трудится и не мало уже успѣло въ дѣлѣ устройства при своихъ церквахъ приличныхъ церковныхъ хоровъ изъ взрослыхъ любителей пѣнія и дѣтей школьниковъ; а чтеніе при сихъ церквахъ во дни воскресные и праздничные выполняется почти постоянно и все учениками мѣстныхъ училищъ. Для сего священники, преподаватели въ школахъ названныхъ селъ, при участіи способныхъ изъ діаконовъ и псаломщиковъ, въ ц.-пр. школахъ во время классныхъ занятій, а въ земскихъ по окончаніи классныхъ уроковъ, и особенно во дни праздничные, между утренею и литургіею, читаютъ съ дѣтьми по церковно-богослужебнымъ книгамъ, особенно Часословъ и Псалтирь, и поютъ всѣ церковныя службы и отдѣльныя церковныя пѣснопѣнія: тропари, задостойники и проч. Въ этомъ пѣніи,—спѣвкахъ,—когда оно бываетъ въ самомъ храмѣ или въ помѣщеніяхъ школьныхъ, но не въ учебное время, принимаютъ участіе и взрослые любители пѣнія, а иногда и обычные богомольцы. Такъ при церквахъ округа составляются церковные хоры, и крестьянскія дѣти, на радость своимъ родителямъ, становятся церковными чтецами,

Было бы не излишне этимъ юнымъ и съ благоговѣйнымъ трепетомъ исполняющимъ свое дѣло служителямъ церкви Божіей разрѣшать ношеніе стихарей, когда они выполняютъ и обязанности свѣщеноносцевъ, прислуживая въ св. алтарѣ.

Особенно хорошо поставлено дѣло церковнаго пѣнія и чтенія при церквахъ с. Устьнейскаго и Макарова и при соборной Воскресенской быв. гор. Унжи. Разъ, въ праздникъ Срѣтенія Господня, я прибылъ въ церковь с. Устьнейскаго во время литургіи. За тѣснотою, пришлось на нѣкоторое время остановиться у дверей храма. Пѣли „Милость мира“ и такъ стройно, съ такимъ чувствомъ, что съ перваго раза я невольно задался вопросомъ: откуда взялись пѣвчіе? Въ плотной толпѣ молящихся слышно было тихое, но складное подпѣваніе. Видимо, не только сердцемъ, но частію и устами пѣла „вся церковь“. Я долго стоялъ въ толпѣ въ благоговѣйномъ умиленіи, и, увлекшись примѣромъ окружающихъ, тихо пѣлъ. Уже въ концѣ литургіи я пришелъ къ алтарю и увидѣлъ слѣдующую картину... Во всю длину солеи, прямо противъ нея, правильными рядами чинно стоятъ дѣти, число до 150, то были ученики и ученицы (ихъ мало) школъ земской, церковно приходской и трехъ школъ грамотности. Впереди стояли у праваго клироса священникъ, а у лѣваго псаломщикъ; они руководили пѣніемъ. За дѣтьми тоже въ полномъ спокойствіи, стояли мужчины взрослые, ни мало не стѣсняя дѣтей, не смотря на общую въ церкви крайнюю тѣсноту. Пѣли, оказалось, всѣ дѣти; но одни, стоявшіе на самыхъ клиросахъ и близъ ихъ, пѣли смѣло и громко, какъ умѣющіе, а другіе за ними тихо и робко, какъ начинающіе. Съ дѣтьми подпѣвали и взрослые. Слышны были и нѣжные женскіе голоса. Нѣчто подобное наблюдалъ я и въ другихъ церквахъ округа, но въ меньшихъ размѣрахъ и въ другомъ порядкѣ.

Такимъ образомъ, при участіи учащихся въ школахъ, при церквахъ округа вводится и общее народное церковное пѣніе постепенно и само собою, безъ всякаго принужденія. Это медлен-

ный, но болѣе вѣрный путь къ упроченію въ народѣ самаго желанія къ общему церковному пѣнію: невольно, такъ сказать, они втянутся въ пѣніе и со временемъ пристрастятся къ нему, не имѣя повода сказать, что имъ навязали „эту новость“ въ церковной службѣ. Тамъ, гдѣ духовенство пробовало настойчиво и разомъ вести общее пѣніе за богослуженіемъ, уже говорятъ: „всѣхъ мужиковъ и бабъ хотятъ сдѣлать дьячками .. что-то чудно“.

Ученики Устьнейскихъ школъ, 14 и 16 сентября сего года, имѣли счастіе встрѣтить и конечно порадовать и Ваше Преосвященство своимъ дѣтскимъ и довольно стройнымъ пѣніемъ не только въ приходскомъ храмѣ, но и на улицѣ, въ дер. Якимовѣ, даже въ ночное время. Въ деревнѣ они пѣли одни, безъ руководителя: на столько въ одинъ годъ существованія церковно-приходской школы они успѣли въ пѣніи церковныхъ пѣснопѣній. Поистинѣ, церковно-приходская школа, при достойныхъ и ревностныхъ преподавателяхъ въ ней, каковы три священника и діаконъ церкви с. Устьнейскаго, можетъ принести великую пользу церкви Божіей и ея вѣрнымъ чадамъ,—нашему все еще простому и темному народу.

Торжественныя вечерни, во дни воскресные и праздничные, согласно опредѣленію дух. консисторіи, отпечатанному въ № 11 Епархіальныхъ Вѣдомостей, съ 14 сентября совершаются въ церквахъ округа, съ акаѳистами и вѣроучительными собесѣдованіями. Причтъ села (*указаніе*), доселѣ сѣтовавшій, что „не смотря на многократныя внушенія священниковъ о хожденіи въ церковь за вечерни, бываетъ за оными всего 2 или много 10 человѣкъ изъ прихожанъ“, нынѣ, напротивъ, радуется, видя по 100 и болѣе молящихся за вечернями, которые приходятъ изъ ближайшихъ къ церкви деревень. Подобные отзывы получаются и отъ причтовъ другихъ церквей округа. Еще опытъ предыдущихъ лѣтъ показалъ, что за праздничныя вечерни осенью и зимою, когда онѣ будутъ совершаемы не опустительно и дѣйствительно торжественно, прихожане церквей округа будутъ приходить въ храмъ Божій,

Только причтъ *(указаніе)* совершенно умалчиваетъ о вечернихъ и, какъ дознано мною, доселѣ еще не приступилъ къ совершенію ихъ; а причты при двухъ церквахъ *(указаніе)* установили между собою очередь въ совершеніи вечерень. Посему мною уже сдѣлано надлежащее внушеніе названнымъ причтамъ.

## Б. Требоисправленія.

Въ общемъ, всѣ причты округа въ совершеніи приходскихъ требъ вполнѣ исправны, и случаевъ произвольнаго и намѣреннаго опущенія со стороны священниковъ не было. Всѣ священники округа трезвые, всегда бываютъ готовы и способны къ совершенію требъ, если по какимъ либо надобностямъ не отлучатся изъ дома. Особенно аккуратны и даже предупредительны они въ напутствіи больныхъ и въ крещеніи младенцевъ. Прихожане церквей округа лично мнѣ съ благодарностію высказывались о своихъ священникахъ, что они и днемъ и ночью, въ зимнія вьюги и осеннія непогоды, по первому приглашенію, отправлялись въ деревни для причащенія больныхъ. Священникъ церкви села *(указаніе)* иногда пѣшкомъ, пробираясь для сокращенія пути лѣсными тропинками ходитъ съ св. Дарами въ отдаленныя отъ церкви деревни за 25 и 15 верстъ. Къ людямъ бѣднымъ, не имѣющимъ своихъ лошадей, особенно въ лѣтнее рабоче время, въ ближайшія отъ церкви селенія, для совершенія неотложныхъ требъ, ходятъ и другіе священники. Разъ, случайно, я самъ встрѣтилъ священника села *(указаніе)*, идущаго со св. Дарами въ деревню за 5 верстъ. Разговорились, и выяснилось слѣдующее: пріѣхала за нимъ женщина на чужой плохой лошади, до села она ѣхала болѣе часу, а больной опасенъ. „Я же", закончилъ священникъ: „прямымъ путемъ (съ перелазами чрезъ полевые огороды) дойду въ полчаса". Радуясь за него, я поспѣшилъ разстаться съ нимъ. Подобные случаи въ округѣ нерѣдки.

Въ предупрежденіе опущеній со стороны самихъ прихожанъ, священники убѣждаютъ ихъ не откладывать напутствіе больныхъ

до опаснаго состоянія, а людей престарѣлыхъ располагаютъ говѣть и пріобщаться св. Таинъ при церкви, во дни воскресные и праздничные или въ посты. И прихожане видимо слушаютъ своихъ пастырей. Въ церквахъ округа я наблюдалъ, что въ посты Петровъ и Рождественскій и особенно въ Успенскій бываетъ не мало исповѣдниковъ, изъ людей престарѣлыхъ и слабаго здоровья, а при исправленіи пастырскихъ обязанностей въ земской больницѣ, гдѣ врачуется большая часть больныхъ изъ приходовъ округа, я узналъ, что почти всѣ больные, прежде чѣмъ отправиться въ больницу, пріобщались св. Таинъ „еще на ногахъ", т. е. въ приходской церкви, при началѣ болѣзни. Посему случаи выѣзда священниковъ въ приходъ для причащенія больныхъ бываютъ не особенно часто.

Въ исправленіи требъ неотложныхъ, при церквахъ двухклирныхъ и трехклирныхъ, священники не считаются между собою по частямъ прихода, или по количеству требъ: кто дома и свободенъ, тотъ и спѣшитъ въ приходъ съ требою. Въ селѣ же *(указаніе)* при трехъ священникахъ, съ начала настоящаго года, установленъ такой порядокъ: на каждый день недѣли одинъ священникъ непремѣнно остается при церкви для совершенія могущихъ быть требъ, другіе два, послѣ занятій въ школѣ, могутъ отлучаться отъ церкви и по своимъ надобностямъ.

Крещеніе младенцевъ, по установившемуся порядку, совершается всегда при церкви, если младенецъ не родился очень слабымъ, и совершается въ самомъ храмѣ, а не въ сторожкѣ, какъ это дѣлалось до настоящаго года. Прихожане не только не тяготятся такимъ порядкомъ, но и довольны имъ, такъ какъ чрезъ это соблюдается экономія во времени и сокращаются денежные расходы. Посему же и винопитіе, съ каковымъ прежде соединялось крещеніе младенцевъ, теперь совершенно прекратилось.

За напутствіе больныхъ, какъ и при общей исповѣди прихожанъ, опредѣленнаго вознагражденія не установлено священниками, но добровольныя приношенія они принимаютъ и за сіи

требы . . . . . .

. . . . . .

. . . . . .

За крещеніе младенцевъ при всѣхъ церквахъ округа взимается плата, отъ 20 до 40 копѣекъ, но обыкновенно по совершеніи крещенія, и если въ домѣ, у людей недостаточныхъ, не бываетъ денегъ, то неуплаченная сумма считается долгомъ и записывается въ особую причтовую тетрадь.

Стѣсненное въ средствахъ содержанія духовенство округа весьма несочувственно относится къ совѣтамъ о совершенномъ прекращеніи вознагражденія хотя бы за напутствіе больныхъ и за общую исповѣдь какъ въ св. четыредесятницу, такъ и въ другіе посты. Однако ропота и жалобъ на духовенство округа по этому предмету не было и не замѣтно.

Молебствія въ домахъ, крестные ходы вокругъ селеній и въ поля, а также и браки по давнему мѣстному обычаю, по большей части совершаются за опредѣленную плату, предварительно договоренную, а при бракахъ и впередъ полученную. При этомъ бываютъ недоразумѣнія и пререканія между духовенствомъ и прихожанами, кончающіяся иногда взаимными неудовольствіями. Особенно при бракахъ нѣкоторые священники округа бываютъ настойчивы и требовательны. Но въ настоящемъ году не было замѣчено случаевъ прямаго со стороны причтовъ вымогательства въ вознагражденіи за браки, и жалобъ по этому поводу къ благочинному не поступало.

Всѣ таинства и молитвословія, какъ въ церкви такъ и въ домахъ и въ селеніяхъ приходскихъ совершаются своевременно, чинно и согласно съ церковными и гражданскими правилами. Никакихъ произвольныхъ молитвословій духовенствомъ не совершается.

Въ случаяхъ общественныхъ бѣдствій, какъ засуха и бывшая нынѣ эпидемія холерная, священники усиленною проповѣдію располагаютъ прихожанъ къ особымъ молебствіямъ, съ крест-

ными ходами въ селенія и поля и совершаютъ сіи молебствія съ особыми торжественностію и усердіемъ, но безъ всякаго со стороны прихожанъ вознагражденія. Прихожане цѣнятъ этотъ трудъ и молитвенно благодарятъ за него своихъ пастырей.

## В) Назиданіе паствы.

Религіозно-просвѣтительная дѣятельность духовенства округа за послѣднее время съ каждымъ годомъ замѣтно усиливается и оживляется. Она выражается: проповѣданіемъ слова Божія въ церкви, пастырскимъ учительствомъ въ домахъ и въ селеніяхъ приходскихъ, внѣ-богослужебными собесѣдованіями и религіозно-нравственными чтеніями, учрежденіемъ при церквахъ книжныхъ складовъ для продажи книгъ прихожанамъ, улучшеніемъ церковныхъ библіотекъ, съ раздачею изъ нихъ книгъ для чтенія и устройствомъ и открытіемъ церковно-приходскихъ школъ и школъ грамоты.

1. Въ церквахъ на литургіи, во всѣ воскресные и праздничные дни, неопустительно произносятся поученія, по преимуществу на темы изъ евангельскихъ и апостольскихъ чтеній, такъ что церковная проповѣдь становится необходимою принадлежностію богослуженія. При церквахъ одноклирныхъ такія поученія произносятся по большей части непосредственно послѣ евангелія, а при церквахъ двухклирныхъ неслужащимъ священникомъ во время причащенія священнослужителей, вмѣсто причастнаго стиха. Священники молодые часто говорятъ проповѣди по тетради, своего сочиненія, составленныя нарочно къ извѣстному дню, или сохранившіяся отъ прежнихъ лѣтъ. Нѣкоторые изъ изъ нихъ говорятъ и экспромптомъ, но рѣдко. Достаточнымъ навыкомъ и умѣлостію въ импровизаціяхъ никто изъ священниковъ округа не обладаетъ. Въ церковномъ проповѣдничествѣ въ наиболѣе частомъ употребленіи печатныя проповѣди протоіереевъ: Путятина, Нордова, Поспѣлова и священниковъ: Красовскаго, Якимова, Бѣлоцвѣтова,—пользуются также поученіями, издаваемыми въ видѣ

приложеній при журналѣ „Руководство для сельскихъ пастырей“, „Проповѣдническимъ листкомъ“. „Пастырскимъ собесѣдникомъ“, и другими проповѣдническими изданіями При этомъ священники предварительно прочитываютъ проповѣди, выбирая изъ нихъ болѣе подходящія къ потребностямъ своихъ слушателей по ихъ нравственному состоянію, доступныя для нихъ по степени ихъ умственнаго развитія и отличающіяся назидательностію. Но бываютъ случаи, когда священники читаютъ проповѣди безъ всякой предварительной подготовки; тогда и впечатлѣніе на слушателей проповѣдь производитъ слабое. Вообще же обычныя проповѣди, произносимыя на литургіи, несомнѣнно полезныя для народа, тогда только достигаютъ желанной цѣли—воздѣйствія на умъ и сердце слушателей, когда онѣ самимъ проповѣдникомъ прочувствованы и именно произносятся, а не читаются, внятно, выразительно и съ чувствомъ. Къ этому и стремятся особенно молодые священники—проповѣдники *(указаніе)*. У нихъ и выборъ печатныхъ проповѣдей всегда удачный и свои проповѣди, не отличаясь литературною отдѣлкою, вполнѣ цѣлесообразны. Какъ они, такъ и нѣкоторые другіе священники умѣло подбираютъ или сами составляютъ иногда цѣлый рядъ проповѣдей, направленныхъ или къ уясненію извѣстныхъ истинъ вѣры и правилъ христіанской нравственности, или къ обличенію выдающихся въ народной жизни пороковъ: пьянства, сквернословія, непочтенія къ родителямъ и другихъ. Эти послѣднія проповѣди имѣютъ особое благотворное значеніе въ смыслѣ религіознонравственнаго просвѣщенія прихожанъ: онѣ не только временно возбуждаютъ слушателей, какъ обычныя проповѣди на различныя темы, располагая ихъ къ сердечному умилепію, къ сознанію своихъ духовныхъ немощей и къ раскаянію въ нихъ, но и дѣйствительно врачуютъ эти немощи у людей вѣрующихъ и нравственно еще не совсѣмъ испорченныхъ. Священникъ села *(указаніе)* свидѣтельствуетъ, что рядомъ поученій, направленныхъ противъ уклоняющихся отъ исповѣди и св. причащенія, между прочимъ, по

убѣжденію въ безполезности сихъ таинствъ при обычныхъ условіяхъ жизни супружеской, при невоздержаніи въ нескромныхъ словахъ, въ пищѣ и питьѣ, относительно ихъ количества и проч., достигъ того, что многіе изъ небывшихъ у исповѣди по 10 и даже по 20 лѣтъ нынѣ были у исповѣди и св. причастія; нѣкоторые изъ нихъ, при этомъ, несутъ и продолжительные подвиги воздержанія въ супружескихъ сношеніяхъ и вообще послѣ исповѣди стали внимательнѣе и строже въ образѣ своей жизни. Единичные случаи отрезвленія пьяницъ, упорядоченія семейныхъ отношеній, примиренія враждующихъ и другіе усматриваются и въ прочихъ приходахъ округа, и нерѣдко сами исправившіеся свидѣтельствуютъ, что ихъ „вразумилъ отецъ духовный въ своихъ проповѣдяхъ“. Такіе проповѣди еще болѣе принесутъ пользы, если съ ними по своему содержанію будутъ имѣть связь и внѣбогослужебныя собесѣдованія, когда, напр., для этихъ собесѣдованій будутъ подбираемы изъ Библіи, изъ житій святыхъ и изъ позднѣйшей церковно-приходской жизни такія событія, которыми бы наглядно выяснялись весь вредъ той или другой порочной страсти, или, наоборотъ, вся польза той или иной христіанской добродѣтели.

Проповѣди въ церкви многіе священники округа произносятъ и при совершеніи требъ, особенно при бракахъ и погребеніи умершихъ. При бракахъ чаще всего выясняются обязанности супруговъ другъ къ другу и къ тѣмъ семействамъ, къ которымъ принадлежатъ женихъ и невѣста. Въ виду явнаго въ наше время извращенія родственныхъ отношеній вообще и въ частности несогласій между родителями и дѣтьми, между братьями и сестрами, и прочими членами семействъ, такія поученія необходимы и полезны. При погребеніи умершихъ священники напоминаютъ о пользѣ и необходимости поминовенія усопшихъ, говорятъ и о тѣхъ лишеніяхъ и затрудненіяхъ, какія неизбѣжны въ жизни семействъ, осиротѣвшихъ по смерти отца или матери, располагая слушателей къ должному почитанію родителей при жизни и по смерти, и подобн.

2. Кромѣ церковной проповѣди, уроки христіанскаго вѣроученія и нравственности простому народу преподаются и при частныхъ сношеніяхъ пастырей съ пасомыми, въ бесѣдахъ и наставленіяхъ при посѣщеніи приходскихъ домовъ и селеній.

Въ округѣ есть священники, вполнѣ оправдывающіе почтенное званіе „приходскихъ пастырей". Они внимательно слѣдятъ не только за нравственнымъ состояніемъ прихода вообще, но и за отдѣльными семействами и лицами въ приходѣ, наблюдая ихъ взаимныя отношенія въ семействахъ и въ обществѣ и личныя нравственныя качества. Выдающіеся пороки однихъ и случайныя паденія другихъ, особенно непочтеніе дѣтей къ родителямъ, выражающееся иногда въ самой грубой формѣ, до побоевъ, развратъ мужа или жены, пьянство и подобныя, для нѣкоторыхъ приходскихъ пастырей составляютъ съ одной стороны причину ихъ душевныхъ страданій, а съ другой—предметъ ихъ постоянныхъ заботъ и усиленныхъ стараній: однихъ утѣшить и ободрить, другихъ обличить, вразумить и исправить. Съ этою цѣлію они—добрые пастыри—нарочно посѣщаютъ дома прихожанъ и иногда сряду нѣсколько разъ. Часто и сами прихожане, видя отеческія отношенія къ нимъ своихъ священниковъ, приходятъ къ нимъ въ домы, чтобы повѣдать имъ свое семейное горе, или открыть предъ ними тяжкое бремя грѣха и получить отъ нихъ назиданіе и совѣтъ. Между нѣкоторыми священниками и прихожанами, такимъ образомъ, создаются такія тѣсныя и прямыя отношенія, какія бываютъ между добрыми отцами и дѣтьми по плоти. И кто какъ успѣетъ, кому какъ вѣщаетъ доброе пастырское сердце, каждый священникъ разрѣшаетъ недоразумѣнія своихъ духовныхъ чадъ, направляя свои бесѣды съ ними всего болѣе къ молитвѣ, терпѣнію, покаянію, прощенію и къ другимъ христіанскимъ мѣрамъ возстановленія порядка въ семьѣ и мира въ собственной совѣсти. Такія отношенія къ прихожанамъ и такія пастырскія бесѣды лицомъ къ лицу, безъ сторонникъ свидѣтелей, будучи дѣйствительнѣе всякой церковной проповѣди, нѣсколько семействъ

удержали отъ раздѣловъ, а съ ними и отъ обѣдненія, иныхъ отъ судебныхъ процессовъ и продолжительной вражды, и немало отдѣльныхъ лицъ, предавшихся той или другой постыдной и гибельной страсти, образумили и направили на путь христіанской жизни. Особеннымъ довѣріемъ и любовію прихожанъ за такое пастырски-участливое отношеніе къ нимъ пользуются священники селъ *(указаніе)*.

Обычными же во всѣхъ приходахъ случаями посѣщенія приходскихъ домовъ и селеній, каковы икононошенія, напутствіе больныхъ и другія требы, а частію и различные сборы въ приходахъ сельскими продуктами, пользуются и другіе священники округа для назиданія прихожанъ. При этомъ обращается вниманіе и на внѣшнюю сторону домашней христіанской жизни. Въ журналахъ пастырской дѣятельности священниковъ мною, между прочимъ, усмотрѣны записи о домашнихъ наставленіяхъ: „какъ неприлично и грѣхъ быть въ комнатѣ въ шапкахъ“, „курить близъ божницъ и держать на нихъ карты и другія пустыя вещи“, „ѣсть и пить безъ молитвы и не перекрестясь“ и под.; объ увѣщаніяхъ: мужу „быть кроткимъ и благоразумнымъ въ обращеніи съ женою“, „мачихѣ любить своихъ пасынковъ, какъ и рожденныхъ отъ нея дѣтей“ и проч., в) внѣ-богослужебныя вѣроучительныя собесѣдованія съ прихожанами ведутся при всѣхъ церквахъ округа, и въ настоящемъ году много исправнѣе, нежели прежде, какъ по количеству собесѣдованій, такъ и по постановкѣ ихъ. Всѣхъ собесѣдованій за годъ было въ селахъ 246. Нѣкоторые священники округа иногда нарочно для собесѣдованій отправляются въ отдаленныя отъ церкви деревни, или при случайныхъ посѣщеніяхъ тѣхъ деревень для бесѣды собираютъ жителей ихъ зимою въ одинъ домъ, а лѣтомъ въ часовню. Священникъ села *(указаніе)* въ деревняхъ отъ 15 до 25 верстъ отъ церкви во время Великаго поста совершаетъ богослуженія вечерню и часы, причемъ желающихъ, а особенно людей престарѣлыхъ исповѣдуетъ и св. Таинъ пріобщаетъ и со всѣми ведетъ собесѣдованія.

При церквахъ одноклирныхъ собесѣдованія ведутся обыкновенно между утренею и литургіею, въ самомъ храмѣ, причемъ людямъ слабымъ не возбраняется сидѣть на скамьяхъ и даже на полу; а при церквахъ двухклирныхъ и трехклирныхъ, гдѣ обыкновенно бываютъ раннія литургіи, собесѣдованія ведутся послѣ утрени же, въ зданіяхъ мѣстныхъ школъ или въ церковныхъ сторожкахъ. При сихъ церквахъ въ веденіи собесѣдованій соблюдается очередь между священниками, по предварительному соглашенію между ними, какъ о времени и мѣстѣ собесѣдованій, такъ и о предметахъ ихъ. Въ настоящемъ году при всѣхъ церквахъ округа объясняются начальныя истины вѣры, при изученіи начальныхъ молитвъ и Символа вѣры. При этомъ прочитываются или изустно разсказываются имѣющіе отношеніе къ главному предмету собесѣдованій библейскія событія изъ Ветхаго и Новаго завѣта, или житія святыхъ. Послѣднія въ нѣкоторыхъ приходахъ округа читаются и на утрени между каѳизмами или послѣ шестой пѣсни канона. Библейскіе разсказы и житія святыхъ особенно любитъ простой народъ и всегда слушаетъ ихъ съ полнымъ вниманіемъ и умиленіемъ. При церкви села *(указаніе)* доселѣ не было полнаго собранія житій святыхъ. Прихожане любители собрали 16 руб. и чрезъ мѣстнаго священника, въ собственность церкви, пріобрѣли житія святыхъ, составленныя архіепископ. Филаретомъ, изд. книгопрод. Тузова. Собесѣдованія заканчиваются нравственными уроками для слушателей, вытекающими изъ содержанія бесѣдъ. Изложенное на собесѣдованіяхъ вѣроученіе повторяется самими слушателями, въ видѣ отвѣтовъ на данные вопросы, только еще при 4-хъ церквахъ *(указаніе)*; при другихъ церквахъ священники какъ-то не могутъ справиться съ этимъ дѣломъ, не могутъ завлечь прихожанъ во взаимную бесѣду и возбудить въ нихъ любознательность. Нѣкоторые священники *(указаніе)* самыя вѣроучительныя чтенія ведутъ неохотно, исполняя это дѣло какъ повинность, и вовсе не заботятся о томъ, чтобы прочитанное было понятно и усвоено. Церковное пѣніе

на собесѣдованіяхъ практикуется только при церквахъ *(указаніе)*.

О всѣхъ случаяхъ пастырскаго учительства священники ведутъ записи въ особыхъ шнуровыхъ книгахъ, данныхъ благочиннымъ еще въ январѣ мѣсяцѣ 1891 г. Въ этихъ „проповѣдническихъ журналахъ“ кратко излагается содержаніе сказанныхъ поученій, вѣроучительныхъ собесѣдованій и домашнихъ наставленій, съ обозначеніемъ мѣста, времени и численнаго порядка ихъ и съ указаніемъ источниковъ, изъ которыхъ заимствованы поученія, составленныя самими священниками, или авторомъ, проповѣди которыхъ произнесены по книгамъ. Благочинный, обозрѣвая церкви, свидѣтельствуетъ журналы и дѣлаетъ на нихъ соотвѣтствующія отмѣтки. Только одинъ священникъ *(указаніе)* доселѣ не ведетъ такого журнала, не смотря на неоднократныя личныя напоминанія ему и настойчивое оффиціальное предписаніе отъ 7 ноября сего года за № 360; г) въ дѣлѣ религіозно-нравственнаго просвѣщенія простаго народа не малую пользу приносятъ и книжные склады при церквахъ, каковые учрежденыпы въ концѣ 1890 г. въ пяти сельскихъ приходахъ; они усердно и съ успѣхомъ поддерживаются и нынѣ. Въ этихъ складахъ, кромѣ книгъ и листовъ духовнонравственнаго содержанія, имѣются также крестики и иконы, вполнѣ приличныя для христіанскаго употребленія и доступныя по цѣнамъ. Прихожане изъ сихъ складовъ всегда покупаютъ крестики для крещаемыхъ младенцевъ; часто иконы для своихъ домовъ; особенно же большой спросъ изъ складовъ бываетъ на Троицкіе листки и книжки. Всѣхъ книжекъ и листковъ изъ пяти церковныхъ книжныхъ складовъ въ теченіе года продано свыше 1000 экземпл. Склады, вначалѣ основанные на церковныя суммы, теперь пополняются уже вырученными отъ продажи деньгами и затраченный на нихъ капиталъ возвращенъ церквамъ. Ревнующіе о духовномъ просвѣщеніи своихъ прихожанъ священники располагаютъ ихъ покупать книжки изъ складовъ какъ для домашняго чтенія вообще, такъ особенно для дѣтей,

# ОТДѢЛЪ II. ЧАСТЬ НЕОФФИЦІАЛЬНАЯ.

## СЛОВО

### ПО ПОВОДУ БЕЗЖАЛОСТНАГО ИСТРЕБЛЕНІЯ ПТИЦЪ.

*Не пять ли птицъ цѣнится пѣнязема двѣма? и не едина отъ нихъ нѣсть забвена предъ Богомъ* (Мѳ. 6, 24).

Если Отецъ Небесный заботится о птицахъ небесныхъ, если Онъ, по слову писанія, даетъ пищу *птенцамъ врановымъ призывающимъ Его* (Псал. 146, 9); то намъ ли, служителямъ Божіимъ, не сказать своего слова въ защиту этихъ тварей Божіихъ?

Было очень недавно (не знаю только, прошло ли еще совсѣмъ это время), когда по всей Россіи бродили особые скупщики убитыхъ сорокъ. Простолюдины везли убитую птицу этой породы на всѣ ярмарки; гдѣ скупщики покупали ихъ цѣлыми партіями, и затѣмъ этими птицами на желѣзныхъ дорогахъ нагружали цѣлые вагоны для отправки ихъ за границу. Думаете—для чего? Для женскихъ нарядовъ. При повсемѣстномъ истребленіи сорокъ, птицъ этихъ уже стало не видно. Дождемся, пожалуй, того, что въ угоду суетной модѣ, примемся за истребленіе малиновокъ, скворцовъ, галокъ и другихъ птицъ.

Начиная съ весны, когда все въ природѣ призывается къ веселію и радости, алчность человѣческая не даетъ птицамъ покоя. Появляются охотники, которые съ ружьями и собаками бродятъ вездѣ и повсюду, занимаясь истребленіемъ птицъ, не смотря на то, что весной у всѣхъ птицъ бываетъ кладка яицъ и высиживаніе птенцовъ. Иные изъ охотниковъ, пробуя ружье, ради потѣхи цѣлятся въ нихъ въ чемъ неповинную птицу и убиваютъ ее. Весною же истребляютъ птицъ и малыя дѣти, ради своей шалости: разоряютъ птичьи гнѣзда, обираютъ изъ нихъ яйца и безжалостно убиваютъ въ гнѣздахъ птенцовъ.

Давно пора подумать, что, безжалостно истребляя птицъ, мы причиняемъ себѣ большой вредъ. Господь ничего въ мірѣ не создалъ лишняго, но все при твореніи *расположилъ мѣрою и числомъ и вѣсомъ* (Прем. Сол. 11, 21), слѣдовательно, не сотворилъ лишнихъ и птицъ. При наступленіи всемірнаго потопа, когда всему живущему на землѣ угрожала конечная гибель, Господь повелѣлъ Ною, вмѣстѣ съ прочими тварями, взять въ Ковчегъ также и *изъ всѣхъ птицъ по роду ихъ* (Быт. 6, 20), а не сказалъ того, чтобы такихъ-то дескать не брать, какъ лишнихъ. Промыслъ Божій сохранилъ всѣ роды ихъ, очевидно, для того, что онѣ на землѣ будутъ полезны человѣку, какъ высшему и любимому созданію Божію. И вотъ, мы видимъ, что птицы небесныя постоянно исправляютъ самую дорогую для насъ службу. Не говоря о томъ, что всѣ окружающія насъ птицы—галки, сороки, вороны, вѣроны, грачи, скворцы, ласточки, чижики, малиновки, воробьи и друг., оживляютъ своимъ присутствіемъ высоту небесную, иныя услаждаютъ насъ своимъ пѣніемъ и веселятъ насъ своимъ игривымъ летаніемъ по воздуху,—всѣ онѣ самые лучшіе сторожа нашихъ полей, огородовъ, садовъ и лѣсовъ отъ опустошенія ихъ разными насѣкомыми и гадами. Птицы въ несмѣтномъ количествѣ истребляютъ появляющихся въ нашихъ поляхъ, огородахъ, садахъ и лѣсахъ разныхъ вредныхъ бабочекъ, мошекъ, жуковъ, червей, лягушекъ, даже мышей и змѣй (какъ, напримѣръ: вороны, вѣроны, ястребы, аисты и др.), употребляя ихъ въ пищу себѣ, такъ что не будь птицъ—намъ житья бы не было отъ этихъ насѣкомыхъ и гадовъ и мы половины бы не стали собирать хлѣба, овощей и ягодъ съ нашихъ полей, огородовъ и садовъ и въ тоже время лишились бы многихъ лѣсовъ отъ опустошенія ихъ червями.

Птицы небесныя безъ всякой платы работаютъ на насъ каждый день съ утра до вечера, истребляя въ несмѣтномъ множествѣ нашихъ враговъ. Что это правда—вы можете видѣть каждый разъ весною и лѣтомъ, когда пашете землю. Каждый изъ

васъ видалъ, какое множество птицъ—галокъ, воронъ, грачей и проч.—ходятъ и летаютъ за вами, выклевывая изъ вспаханной вами полосы червей, жуковъ, хрущей, которые, выползши въ свое время изъ земли, могли бы вредить посѣянному хлѣбу. Правда, что птицы оклевываютъ иногда сжатый на нашихъ полосахъ хлѣбъ, нѣкоторыя изъ нихъ похищаютъ иногда нашихъ домашнихъ птицъ, а иногда истребляютъ нѣсколько и пчелъ. Но этотъ вредъ очень незначителенъ въ сравненіи съ тою пользою, которую онѣ намъ приносятъ Многіе породы птицъ, какъ, напримѣръ: вороны, вороны, грачи и подоб., сверхъ истребленія гадовъ, истребляютъ валяющуюся на землѣ падаль, которая, сгнивая поверхъ земли, заражала бы нашъ воздухъ. Такимъ образомъ, истребляя безжалостно птицъ, мы сами себѣ причиняемъ большой вредъ.

Безжалостно истребляя птицъ, мы дѣлаемъ и большой грѣхъ; потому что подвергаемъ страданіямъ ни въ чемъ неповинную тварь Божію. Если, по слову писанія, Господь печется о каждой птицѣ небесной (Мѳ. 6. 24) и съ отеческою любовію внимаетъ крику *птенцовъ врановыхъ, взывающихъ къ Нему*: то не думайте, чтобы Онъ не внималъ страданіямъ и жалобѣ убиваемой нами безъ всякой необходимости птицы и оставилъ насъ безъ наказанія. Вотъ мы нерѣдко жалуемся на то, что то въ одномъ, то въ другомъ мѣстѣ червь поѣлъ озими, или появился вредный жучекъ, который поѣдаетъ хлѣбъ еще въ колосьяхъ; въ иныхъ мѣстахъ стали жаловаться, что червь и вредная мошка начали чаще прежняго портить наши овощи и плоды въ огородахъ и садахъ Не потому ли, частію, Господь сталъ наказывать насъ этими насѣкомыми, что мы безжалостно и безпощадно обращаемся съ птицами небесными? Допуская малыхъ дѣтей разорять птичьи гнѣзда, мучить и убивать птенцовъ, мы незамѣтно пріучаемъ ихъ къ жестокости. Приходилось мнѣ слышать, какія иногда звѣрскія жестокости производятъ малыя дѣти надъ птицами и птенцами въ гнѣздахъ: инымъ отрываютъ голову,

другихъ убиваютъ о землю, инымъ выкалываютъ глаза, или привязавши за бечевку, мучатъ бѣдныхъ птицъ. Неужели, безжалостно мучимая и убиваемая птица тѣмъ и виновата, что не можетъ высказать намъ своей боли и со слезами умолять насъ: „за что, дескать, вы меня и дѣтей моихъ обижаете? Какое я вамъ зло сдѣлала? „Не думаю, чтобы у малаго ребенка, въ первый разъ совершающаго звѣрскія истязанія надъ птичкою, не сжималось сердце отъ жалости и не обливалось кровью при видѣ страданій птицы. Дѣтское сердце мягко и отзывчиво къ страданіямъ другихъ. Но малый ребенокъ дѣлаетъ такъ, перенимая примѣръ отъ старшихъ. О, родители! Ради Бога, не допускайте дѣтей до подобной жестокости. Ребенокъ, съ малыхъ лѣтъ пріучившись безжалостно мучить птичку, со временемъ очень равнодушно будетъ смотрѣть на страданіе ближняго и жестоко обходиться съ домашними. Не говорю я еще о томъ, что и сами родители строго отвѣтятъ предъ Богомъ за допущеніе въ дѣтяхъ жестокости.

Малымъ дѣтямъ еще сколько нибудь извинительна ихъ жестокость съ птицами, потому что они глупы и ихъ не унимаютъ старшіе. Но чѣмъ извинить безпощадное и безвременное истребленіе птицъ нашими охотниками, которые, во время ранней весны, съ ружьями и собаками бродятъ повсюду, истребляя птицъ, не смотря на то, что весною, какъ я сказалъ выше, начинается у птицъ кладка яицъ и высиживаніе птенцовъ? Господь далъ, чрезъ Моисея, слѣдующую заповѣдь: „если попадется тебѣ на дорогѣ птичье гнѣздо на какомъ либо деревѣ или на землѣ съ птенцами, или яйцами и мать сидитъ на яйцахъ: то не бери матери съ дѣтьми. (Вт. 11, 6). Видите, Господь еще въ глубокой древности имѣлъ попеченіе о птицахъ небесныхъ. Да и по гражданскимъ нашимъ законамъ запрещается стрѣлять и ловить птицъ тенетами, цѣвками и всякими другими орудіями съ 1-го марта по Петровъ день (12 т. ч 2 Св. зак. изд. 1886 г.). Но наши охотники не хотятъ знать никакихъ законовъ ни Божескихъ, ни граждан-

скихъ противъ безвременнаго истребленія птицъ, не говоря о томъ, что истинному христіанину всего естественнѣе имѣть жалость къ созданіямъ Божіимъ. Что за дѣло нашимъ охотникамъ до того, что, умерщвляя птицу во время кладки яицъ, или высиживанія птенцовъ, они чрезъ это лишаютъ жизни вмѣстѣ съ матерью, цѣлые десятки будущихъ птицъ и содѣйствуютъ быстрому исчезновенію со свѣта полезныхъ для всѣхъ птицъ! Что имъ также за дѣло до того, что, умерщвляя мать, они дѣлаютъ нерѣдко сиротами цѣлыя семейства птенцовъ, обрекая ихъ на страданіе и вѣрную погибель. За то, у нихъ есть для стола лишнее лакомое блюдо.

О, бр.! Будьте, ради Бога жалостливы къ птицамъ небеснымъ. Пользуйтесь ими благоразумно. Внушайте и дѣтямъ жалость къ этимъ тварямъ Божіимъ. Не забывайте никогда, что всякая несправедливость къ нимъ и жестокость не останутся для насъ безпаказанными отъ Бога, Который любитъ всякое созданіе Свое и печется о немъ.

Свящ. *Алексѣй Либеровъ.*

---

## Честный трудъ поселянина, какъ его священная обязанность, какъ основа его благосостоянія и условіе нравственнаго его усовершенствованія *).

Въ минувшій и настоящій годы весьма часто приходилось и приходится слышать отъ многихъ сельскихъ жителей нашихъ мѣстъ такія слова: „нынѣшнія времена очень трудныя; совсѣмъ обѣднѣли мы отъ недородовъ и неурожаевъ хлѣба, отъ дороговизны на жизненные припасы и отъ разныхъ моровыхъ повѣтрій и болѣзней; если бы не помощь отъ Царя-батюшки, то и жить не знали бы какъ; послѣ Бога одна надежда на него и

*) Изъ „Нижегород. Еп. Вѣд.“, съ незначительными сокращеніями.

впредь..." То вѣрно, что нашъ самодержавный и православный Государь послѣ Бога первый нашъ благодѣтель и покровитель. Онъ, подобно отцу родному, любитъ своихъ вѣрноподданныхъ дѣтей и всегда готовъ помогать имъ въ ихъ нуждахъ и потребностяхъ. Кто не помнитъ, какъ Онъ, какъ только прослышалъ о бѣдствіи нашемъ, сейчасъ же, не теряя нимало времени, распорядился чрезъ поставленныхъ имъ начальниковъ собрать свѣдѣнія о всѣхъ нуждающихся по нашей губерніи и по другимъ мѣстамъ своего обширнаго царства и всѣмъ, кому слѣдовало, съ щедротами и милостями истинно царскими раздавалъ пособіе и деньгами, и хлѣбомъ, и топливомъ.. Но гробъ свой мы должны благодарить Его Величество за оказанную намъ милость и ежеминутно должны молиться за Него Богу. Однако въ одномъ ли этомъ должна выражаться наша благодарность нашему благодѣтелю-Царю? Нѣтъ, этого мало. Помня, какія заботы и попеченія прилагалъ нашъ Царь-отецъ къ пресѣченію постигшаго насъ прошлогодняго несчастія, заставившаго такъ сильно болѣть и скорбѣть его сердце, и зная, какъ много израсходовано по этому случаю его государевой казны, мы должны и сами на будущее время употреблять всѣ силы и средства, чтобы избавиться отъ повторенія нашихъ прежнихъ бѣдъ и не заставить нашего Царя-батюшку вновь скорбѣть и пещись о насъ, какъ о малыхъ, неразумныхъ и неспособныхъ дѣтяхъ. Сами мы должны умѣть избывать наши бѣды и горя, какъ постигающія насъ отъ неурожаевъ хлѣба, такъ и происходящія отъ другихъ причинъ. А избывать ихъ мы можемъ, при помощи Божіей, своимъ честнымъ, усерднымъ и постояннымъ трудомъ, соединеннымъ съ строгою бережливостію въ употребленіи и расходованіи плодовъ отъ трудовъ нашихъ праведныхъ. Сего именно ожидаетъ отъ насъ и Царь-батюшка, нашъ православный Государь и сего требуетъ Царь царей Господь нашъ, отъ котораго исходятъ всякое даяніе благо и всякъ даръ совершенъ и который, смотря по мѣрѣ трудолюбія нашего и по степени нашего нравственнаго состоянія,

или благословляетъ наши труды и посылаетъ намъ времена плодоносныя, или за наше нерадѣніе и нечестіе наказуетъ насъ, дѣлая, по слову св. писанія, „небо мѣднымъ“, такъ что оно не даетъ дождя, и землю дѣлая „желѣзной“, не могущей приносить плодородія (Втор. 28, 23 и 24 ст.). Такимъ образомъ открывается, что въ бѣдствіяхъ, постигающихъ насъ отъ неурожаевъ нашихъ полей, и проистекающей отсюда нашей скудости и бѣдности мы немало виноваты и сами. Виноваты тѣмъ, что, забывъ заповѣди Господни о богоугодной и трудолюбивой жизни, мало трудимся и „много спимъ, и лѣнивы“ (Притч. 6, 9) и нерадивы въ сбереженіи трудовъ своихъ, такъ какъ иные изъ нихъ идутъ въ „чужіе домы“, куда бы имъ не слѣдовало идти, и „силою нашею насыщаются чужіе“, кого бы не слѣдовало насыщать (Притч. Солом. 5, 10).

Въ предотвращеніе повторенія подобныхъ испытаннымъ нами бѣдствій и вообще для нашего назиданія поразмыслимъ внимательно о томъ, какъ важенъ, необходимъ, священенъ и обязателенъ для насъ трудъ, соединенный съ молитвою и бережливостью къ пользованіи тѣмъ, что имѣемъ,—сей существенный и несомнѣнный залогъ и условіе нашего благосостоянія и нравственнаго усовершенствованія.

Одна изъ существеннѣйшихъ и важнѣйшихъ заповѣдей, данныхъ Богомъ человѣку, есть заповѣдь о трудѣ. „Въ потѣ лица твоего снѣси хлѣбъ твой“, сказалъ Господь прародителю нашему, за непослушаніе изгнанному изъ рая (Быт. 3, 19). Сію же заповѣдь о трудѣ Господь изрекъ и на горѣ Синаѣ чрезъ пророка Моисея, сказавъ Израилю, а въ лицѣ его и всякому человѣку: „шесть дней дѣлай и сотвори въ нихъ вся дѣла твоя, день же седьмый—суббота Господу Богу твоему“. Древній Боговдохновенный писатель и мудрѣйшій изъ царей земныхъ, Соломонъ, въ книгѣ „Притчей“ своихъ, размышляя о трудѣ, ставитъ его въ непосредственное отношеніе съ нашимъ житейскимъ благосостояніемъ или неблагосостояніемъ, достаткомъ или убо-

жествомъ и такъ говоритъ о трудолюбивомъ и лѣнивомъ человѣкѣ: „если ты будешь не лѣнивъ, то, какъ источникъ, придетъ жатва твоя, скудость же далеко отбѣжитъ отъ тебя; если же будешь спать и дремать сложа руки, то придетъ, какъ прохожій, бѣдность твоя и нужда твоя, какъ разбойникъ“ (Прич. 6, 10, 11). Тотъ же священный учитель указуетъ и образецъ, которому должно подражать въ постоянствѣ и неутомимости труда. Не любящему и избѣгающему труда онъ говоритъ: „пойди къ муравью, лѣнивецъ, посмотри на дѣйствіе его и будь мудрымъ. Нѣтъ у него ни начальника, ни приставника, ни повелителя; но онъ заготовляетъ лѣтомъ хлѣбъ свой, собираетъ во время жатвы пищу свою. Или пойди къ пчелѣ и познай, какъ она трудолюбива, какую почтенную работу она производитъ“ и проч. (Притч. 6, 6—11). Въ Новомъ Завѣтѣ самъ Основоположитель его Іисусъ Христосъ, возвѣстившій намъ ученіе о царствіи Божіемъ и о путяхъ къ достиженію онаго, въ числѣ Своихъ божественныхъ заповѣдей и повелѣній преподалъ и ученіе о необходимости труда для каждаго человѣка. Онъ училъ труду, когда всѣхъ призывалъ взять и нести Его благое иго (Матѳ. 11, 29), когда въ лицѣ апостоловъ заповѣдывалъ всѣмъ идти и приносить плодъ (Іоан. 15, 16) и совершать этотъ плодъ въ терпѣніи (Лук. 8, 16),—училъ труду, когда уподоблялъ царствіе Божіе виноградарю, въ которомъ съ утра до вечера происходятъ работы (Мѳ. 20, 1—16), когда одобрялъ трудолюбивыхъ рабовъ, пріумножившихъ данные имъ таланты, и осуждалъ лѣниваго раба, не хотѣвшаго употребить во благо данный ему отъ Господа даръ (Матѳ. 25, 20—28). Поучая труду Своимъ словомъ, Господь Іисусъ Христосъ поучалъ тому же еще болѣе Своимъ примѣромъ. Ходя съ проповѣдію по градамъ и весямъ, раскрывая Свое божественное ученіе и предъ избраннымъ числомъ Своихъ учениковъ, и предъ многочисленными массами народа, поучая и прямо, и прикровенно—въ причтахъ, притомъ совершая вездѣ многочисленныя чудеса, Онъ, равно какъ и Его сотрудники—уче-

ники, до того были преданы своему высокому служенію, что, по свидѣтельству св. Евангелія, не имѣли иногда возможности даже „хлѣба ясти“ (Марк 3, 20). Св. апостолы, послѣдователи, преемники и проповѣдники Христова ученія, съ особенною силою повторяли людямъ заповѣдь своего Божественнаго Учителя о трудѣ. Они именемъ Господа Іисуса Христа умоляли вѣрующихъ работать и трудиться, называя только тотъ хлѣбъ собственностію людей, который заработанъ собственнымъ ихъ трудомъ: „дѣлающе свой хлѣбъ ядятъ“, училъ одинъ изъ апостоловъ (Солун. 3, 12), тогда какъ не трудящіеся, лѣнивые, по тому же апостольскому ученію, недостойны ѣсть хлѣбъ: „аще кто не хощетъ дѣлати, ниже да ястъ“ (2 Сол. 3, 10). Ученіе свое о трудѣ св. апостолы подтверждали и всею своею жизнію и всѣми дѣяніями. Одинъ изъ наиболѣе потрудившихся въ благовѣствованіи имени Христова, св. ап. Павелъ въ бесѣдахъ къ пресвитерамъ Ефесской церкви такъ свидѣтельствовалъ о себѣ: „ни серебра, ни золота, ни одежды я ни отъ кого не пожелалъ; сами знаете, что нуждамъ моимъ и нуждамъ бывшихъ при мнѣ послужили руки мои сіи“ (Дѣян. Апост. 20, 33—34). Онъ же въ посланіи къ Ѳессалоникійскимъ христіанамъ уже отъ имени всѣхъ апостоловъ такъ говоритъ: „сами знаете, какъ должны вы подражать намъ, ибо мы не безчинствовали у васъ; ни у кого не ѣли хлѣба даромъ, но занимались трудомъ и работою ночь и день чтобы не обременить кого изъ васъ; не потому, чтобы мы не имѣли власти, но чтобы себя самихъ дать вамъ въ образецъ для подражанія намъ“ (2 Солун. 3, 7—9). Послѣ св апостоловъ преемники ихъ служенія и ученія—св. отцы, пастыри и учители церкви и другіе угодники и подвижники Христовы учили вѣрующихъ непрестанному и нелѣностному труду и свое ученіе о трудѣ со всею очевидностію и наглядностію подтверждали примѣромъ своей жизни и дѣятельности. Такъ, одни изъ таковыхъ отцовъ и подвижниковъ, въ качествѣ іерарховъ и священноначальниковъ, служили въ церкви Божіей и управляли хри-

стіанскими общинами, другіе несли разнообразные виды послушанія; иные, напр., посвящали себя непрестанной молитвѣ, другіе проповѣдывали слово Божіе, писали книги, обучали меньшихъ братій своихъ грамотѣ, раздавали милостыню, ухаживали за больными, погребали умершихъ,—третьи строили келліи, копали землю, воздѣлывали нивы, насаждали дерева, плели кошницы или вообще занимались какимъ либо рукодѣльемъ... *); словомъ, всѣ въ своемъ мѣстѣ и дѣлѣ трудились не щадя силъ, а въ часы свободные отъ тѣлеснаго труда воздѣвали руки свои къ небу и молились Богу.

Св. церковь—мать наша, учительница и хранительница спасительныхъ отеческихъ преданій, за каждымъ своимъ богослуженіемъ внушаетъ вѣрнымъ чадамъ своимъ любовь къ труду и дѣланію всего добраго и полезнаго; она учитъ труду, когда испрашиваетъ для онаго помощи и благословенія Божія и молится о всѣхъ „труждающихся, плодоносящихъ и добродѣющихъ“, какъ въ храмахъ Божіихъ, такъ и на другихъ добрыхъ и полезныхъ поприщахъ. Сверхъ сего, св. церковь, въ своемъ материнскомъ попеченіи о направленіи путей жизни нашей и о благоустроеніи нашихъ дѣлъ и состояній, душевныхъ и тѣлесныхъ, установила особыя чинопослѣдованія и молебныя пѣнія для благосовершенія и освященія почти всѣхъ добрыхъ начинаній и работъ, какія встрѣчаются въ нашемъ житейскомъ быту. Такъ, строитъ ли кто домъ, или копаетъ кладезь, или начинаетъ воздѣлываніе полей, или пасеніе стадъ, ловленіе рыбы, собираніе огородныхъ и древесныхъ плодовъ, или какой либо другой честный промыселъ, св церковь поспѣшаетъ къ тому на

*) Въ житіи преподобнаго отца нашего Сергія Радонежскаго чудотворца, чествуемаго по всей Россіи, сказано, что сей угодникъ Божій при жизни своей не чуждался никакого труда, ибо „и пшеницу толчаше и меляше, и муку сѣяше, и дрова сѣчаше, и обувь и порты крояше и шіяше, и воду на своемъ си рамѣ на гору возношаше. И тако служаше Богу отъ своихъ праведныхъ трудовъ тщашеся быти учитель и дѣлатель“. (Житіе, составл. Епифаніемъ, ученикомъ Сергія преподобнаго).

помощь съ своими молитвами и молебными пѣніями и тѣмъ самымъ узаконяетъ, возвышаетъ, облагораживаетъ и освящаетъ трудъ человѣка.

Заповѣдь о трудѣ сколько божественная, столько же и общественная. И общество, къ которому принадлежитъ каждый человѣкъ, какъ членъ его, необходимо должно требовать и требуетъ отъ своего сочлена постояннаго и усерднаго труда, ревностнаго занятія своимъ дѣломъ, потому что лѣнивый, не исполняющій никакой работы и не добывающій своимъ трудомъ себѣ хлѣба, есть тунеядецъ, попросту говоря—дармоѣдъ, живущій на чужой счетъ и истощающій народныя силы. Онъ, какъ моль платье, подтачиваетъ народное благосостояніе и вреденъ обществу почти столько же, сколько воръ, съ тѣмъ лишь различіемъ, что воръ крадетъ тайно и силой, а тунеядецъ обкрадываетъ общество явно, на глазахъ у всѣхъ, лишь лживо прикрываясь какимъ либо благовиднымъ предлогомъ, напримѣръ—болѣзнію или внезапнымъ и непредвидѣннымъ обнищаніемъ вслѣдствіе какихъ либо несчастныхъ случайныхъ обстоятельствъ. Напротивъ, трудолюбивый человѣкъ, ревностно занимающійся своимъ дѣломъ и собственными руками добывающій себѣ хлѣбъ, не только не уничтожаетъ чужихъ трудовъ, но еще даетъ возможность обществу пользоваться его трудами, которые, какъ-бы, повидимому, ни были черны и маловажны, необходимы ему. Трудолюбивый земледѣлецъ, садовникъ, плотникъ, каменщикъ, кузнецъ, портной..,—вообще всякій ремесленникъ и чернорабочій, дѣлающіе свое дѣло съ знаніемъ и добросовѣстностію, такъ же полезны и нужны обществу, какъ купецъ, фабрикантъ, воинъ, чиновникъ, блюститель порядка и проч. Съ другой стороны трудящіеся честно и добросовѣстно на своихъ поприщахъ уже тѣмъ самымъ важны въ обществѣ и дороги для него, что подаютъ собою хорошій примѣръ и наставительный урокъ другимъ. Такіе уроки и примѣры не остаются безъ добрыхъ послѣдствій. Честные и трудолюбивые люди внушаютъ къ себѣ до-

вѣріе, уваженіе и находятъ себѣ подражателей и послѣдователей—такихъ же любителей труда, тогда какъ праздные, лѣнивые, никакой пользы не доставляющіе обществу, поступаютъ, какъ говоритъ слово Божіе, „безчинно“ и соблазнительно (2 Сол. 3, 11), увлекая на свой ложный и пагубный путь и другихъ людей, слабыхъ волею и наклонныхъ къ лѣности и пустому препровожденію времени. Св. ап. Павелъ выразительно назвалъ праздножительство безпорядкомъ или безчиніемъ. Дѣйствительно, лѣнивый выходитъ изъ порядка, Богомъ, церковію и обществомъ установленнаго. Богъ назначилъ для покоя одинъ день въ седьмицѣ, а лѣнивый всѣ дни обращаетъ въ праздникъ по народной укоризненной поговоркѣ, что „празднымъ—всякій день праздникъ“, и этимъ извращеніемъ порядка, установленнаго Богомъ, лѣнивецъ производитъ безчиніе. А такъ какъ несомнѣнна та истинна, что праздность есть мать пороковъ, то, сверхъ безчинія или безпорядка въ распредѣленія времени, праздность весьма часто влечетъ за собой и безобразіе въ нравственномъ состояніи человѣка, выражающееся нерѣдко въ пьянствѣ, буйствѣ и другихъ тяжкихъ порокахъ и грѣхахъ, и все это вмѣстѣ неизбѣжно доводитъ человѣка до оскудѣнія и нищеты. Въ этомъ отношеніи на лѣнивомъ и праздномъ человѣкѣ со всею поразительною очевидностію исполняется слово Божественнаго писанія, свидѣтельствующее, что къ „лѣнивому и бездѣятельному человѣку приходитъ нужда, какъ разбойникъ“ (кн. Притч. 6, 6—11). Именно, какъ разбойникъ, лѣность грабитъ человѣка, раздѣваетъ и разуваетъ его и оставляетъ почти нагимъ. Въ самомъ дѣлѣ, у лѣниваго все его скудное и жалкое хозяйство въ крайнемъ безпорядкѣ: поле его своевременно не убрано, домъ его покривился и грозитъ скорымъ разрушеніемъ, дворъ его не покрытъ и на немъ въ зимнее время мерзненъ захудалая лошаденка, если только она есть,—сусѣки и закромы его пусты, жена его убита горемъ, дѣти голодны и холодны, и самъ лѣнивецъ—заспанный, растрепанный, неряшливый, грязный представ-

ляетъ изъ себя видъ жалкаго нищаго; а пойдетъ таковой съ сумой по міру, чтобы пробавляться милостыней, и Бога прогнѣвитъ и добрыхъ людей введетъ въ грѣхъ осужденія, потому что пришелъ такой человѣкъ въ бѣдность и нищету не вслѣдствіе какихъ либо независящихъ отъ него несчастныхъ обстоятельствъ *), а единственно—по собственной винѣ.

Напротивъ, человѣкъ, честно трудящійся и неутомимый въ своемъ трудѣ, рѣдко когда впадаетъ въ бѣдность и нищету, ибо не ложно слово Божіе, говорящее, что „дѣлаяй свою землю исполнится хлѣбовъ“ (кн. Притч. Солом. 12, 11) и что человѣкъ трудолюбивый и боящійся Господа „будетъ ѣсть отъ трудовъ рукъ своихъ“ (Псал. 127, 2, ст. въ русск. пер.). Какъ бы такіе люди ни были впачалѣ бѣдны, впослѣдствіи, при неослабномъ трудѣ, они мало-по-малу начинаютъ пріобрѣтать средства, по крайней мѣрѣ на столько, чтобы имѣть съ семействомъ насущный—собственный хлѣбъ, одежду и другія вещи, необходимыя для жизни. Люди же, начинающіе свой трудъ, уже имѣя нѣкоторое свое состояніе, унаслѣдованное, наприм., отъ родителей, обыкновенно чрезъ постоянное усердіе и стараніе увеличиваютъ свое состояніе до степени довольства и обезпеченности. При значительномъ же богатствѣ, умѣ и предпріимчивости трудолюбивые дѣятели получаютъ полную возможность не только благоустроить свою частную—семейную жизнь и сдѣлать ее образцомъ порядка, полнаго довольства и заслуженнаго счастія, но обыкновенно такія лица и по отношенію къ обществу являются весьма полезными и желательными его членами. Именно: они

*) Конечно, бываетъ нерѣдко, что и честно трудящійся нуждается и бѣдствуетъ; бываютъ обнищевающіе не отъ слабости своей и нерадѣнія, а отъ другихъ посторонпихъ причинъ,—тогда обнищаніе невинно и неукоризненно и достойно не порицанія, а полнаго сожалѣнія и помощи нуждающимся, каковая помощь и заповѣдуется словомъ Божіимъ; см.: Втор. 15, 11; Исаіи 58, 4—11; Псал. 3, 5; 40, 2; Притч. 19, 17; Сир. 4. 5—8; 18, 25. Матѳ. 5, 42; 25, 31—46, Лук. 6, 36; 14, 13; 1 Петр. 4, 8; Іак. 2, 15—16; 2 Кор. 9, 6 и во многихъ другихъ мѣстахъ.

нерѣдко ознаменовываютъ свою жизнь и дѣятельность различными благотвореніями и богоугодными дѣлами; наприм., усердствуютъ при построеніи и обновленіи храмовъ Божіихъ, открываютъ училища для дѣтей, учреждаютъ пріюты для бѣдныхъ, строятъ богадѣльни и больницы и основываютъ другія благотворительныя учрежденія, за что имена ихъ сохраняются надолго въ благодарной памяти потомства, а что всего важнѣе—записываются на небесахъ (Лук. 10, 20).

Впрочемъ такихъ добрыхъ плодовъ и послѣдствій отъ труда даже весьма богатыхъ и состоятельныхъ людей можно ожидать только тогда, когда трудъ такихъ людей соединяется съ бережливостію въ пользованіи тѣмъ, что получается отъ трудовъ,—съ бережливостію не въ томъ отношеніи, чтобы ничего не удѣлять отъ своихъ средствъ въ пользу неимущихъ братій своихъ: это было бы дѣло небогоугодное, ибо Господь во св. Евангеліи Своемъ сказалъ: „просящему у тебе дай“ (Матѳ. 5, 42), „благотворите и взаимъ дайте ничесоже чающе“ (Лук. 6, 35), „продавайте имѣнія ваша и давайте милостыню“ (Лук. 12, 33) и исполняющій сіи заповѣди хотя „щедритъ и даетъ“, но по благоволенію Божію „всегда изобильствовати будетъ“ (кн. Притч. Солом. 13, 11). При трудѣ требуется бережливость въ другомъ смыслѣ, въ смыслѣ ограниченія тратъ и расходовъ на предметы роскоши, на удовлетвореніе чувственныхъ потребностей нашихъ и разныхъ прихотей и грѣховныхъ наклонностей. Безъ такой бережливости никакое состояніе не можетъ быть прочно и надежно, какъ и увѣряетъ слово Божіе, свидѣтельствующее, что „имѣніе поспѣшаемо съ беззаконіемъ, умалено бываетъ“ (Притч. Солом. 13, 11). Дѣйствительно, расточительность весьма часто доводитъ людей до бѣдности и жалкаго состоянія. Прожить даже и значительное состояніе и свести домокъ, какъ говорится, въ одинъ уголокъ—нѣтъ ничего легче. Велико судно—карабль, а если образуется въ немъ хотя одна щель, весь онъ пойдетъ ко дну. Малыя же суденышки, какъ наши, у которыхъ щелей

не одна, а много, тонутъ еще чаще. За примѣрами ходить не далеко. Кто изъ теперешнихъ пожилыхъ людей не помнитъ жившихъ по здѣшнимъ мѣстамъ нѣкоторыхъ стариковъ—хозяевъ, въ семействахъ коихъ младшіе члены были въ строгомъ подчиненіи старшему въ домѣ и въ союзѣ и мирѣ между собою, а домы тѣхъ хозяевъ были, какъ полная чаша, полны всякимъ добромъ; на дворахъ у этихъ хозяевъ было вдоволь всякаго рода скотины и домашней птицы, а въ амбарахъ и одоньяхъ хранились большіе запасы хлѣба, котораго ставало на нѣсколько лѣтъ,—и все это зависѣло отъ того, что помянутые хозяева были трудолюбивы и со всѣмъ стараніемъ и бережливостію хранили всякій прибытокъ отъ своихъ трудовъ про запасъ, на черный день. Но вотъ старики померли, а молодые наслѣдники богатства, нажитаго стариками,—дѣти и внуки, забывъ завѣты и совѣты стариковъ, стали жить по-своему. Старики бывало держались пословицъ, что „земля человѣка кормитъ“ и „изъ земли дорогой товаръ ростетъ“, потому попрепмуществу занимались земледѣліемъ, заботливо воздѣлывая свои нивы; дѣти же и внуки, тяготясь земледѣліемъ, какъ тяжелымъ и будто неприбыльнымъ трудомъ, охотнѣе стали стремиться добывать средства къ жизни чрезъ отхожіе промыслы, откуда нерѣдко возвращаются съ пустыми карманами, да съ заносными, заразительными болѣзнями. Старики бывало слѣдовали правилу, что „одно сегодня лучше двухъ завтра“ и потому старались кончать всякое дѣло, не откладывая его до будущаго времени; дѣти же и внуки предпочли этому правилу свое ложное мудрованіе и что нужно бы поберечь до завтра (наприм., изъ пищи), тратили сегодня, а что нужно сдѣлать сегодня, откладывали до завтра и послѣзавтра. Къ привычкѣ не трудить себя тяжелой работой, а подольше отдохнуть, да послаще поѣсть и повеселѣе пожить присоединилась наклонность къ излишнимъ нарядамъ, къ покупкѣ болѣе красивой одежды и обуви, на что стали тратить немалыя деньги. Къ сему же присоединилось желаніе у каждаго члена семьи

быть большакомъ и не знать подчиненія старшимъ, отчего между членами бывшихъ прежде въ согласіи семействъ пошли раздоры, несогласія, ссоры и, наконецъ, дѣлежи,—и вся эта неурядица привела къ тому, что дѣти стали жить бѣднѣе своихъ отцовъ, а внуки дѣдовъ и совсѣмъ поразорились и дошли до нищеты.

Итакъ, честный трудъ и соединенная съ нимъ бережливость существенно необходимы для каждаго человѣка и составляютъ лучшіе и надежнѣйшіе залоги и задатки его житейскаго довольства и благополучія, тогда какъ лѣность и расточительность суть первыя прискорбныя причины людскаго обѣдненія и скудости, почему вышеуказанныхъ пороковъ, въ корень разстраивающихъ благосостояніе человѣка, и должно всѣми мѣрами избѣгать.

Честный трудъ необходимъ и обязателенъ для всѣхъ насъ не только въ цѣляхъ устроенія внѣшняго нашего благополучія и удовлетворенія тѣлеснымъ и житейскимъ нашимъ нуждамъ и потребностямъ, но, что еще важнѣе—онъ необходимъ для воспитанія и усовершенствованія нашей души со всѣми ея силами и способностями. Трудъ постоянный, усердный и внимательный развиваетъ умъ трудящагося и сообщаетъ ему искусство въ своемъ дѣлѣ. Надъ чѣмъ мы потрудимся, поработаемъ, то обыкновенно лучше понимаемъ и знаемъ. До чего же трудъ нашъ не коснулся, то меньше и знаемъ. Умъ нашъ господинъ только надъ тѣми предметами, надъ которыми онъ достаточно поработалъ; тутъ онъ дома у себя, тутъ онъ развязенъ и свѣдущъ. Пословица справедливо говоритъ, что „дѣло мастера боится“, а мастеровъ дѣлаетъ трудъ. Это народное изреченіе вполнѣ согласно и съ словомъ Божіимъ, которое говоритъ; „терпѣніе содѣлываетъ искусство“, т. е. искусство достигается терпѣніемъ и трудомъ (Римл. 5, 3. 4). Ремесленникъ, земледѣлецъ и всякій рабочій своимъ прилежнымъ трудомъ узнаютъ и изыскиваютъ средства къ улучшенію своего промысла и своихъ работъ, отчего послѣд-

нія дѣлаются и легче, и совершеннѣе и приносятъ больше выгодъ Тогда трудящіеся бываютъ уже не слѣпыми подражателями другихъ, но самостоятельными дѣлателями, руководящими другихъ въ тѣхъ же работахъ, иначе—изъ учениковъ они дѣлаются учителями и примѣрными мастерами своего дѣла, такъ что уже другіе начинаютъ у нихъ перенимать способы, пріемы и виды труда. Не то мы видимъ въ праздныхъ и лѣнивыхъ людяхъ. Отъ праздности они постепенно утрачиваютъ въ себѣ добрые задатки, теряютъ предпріимчивость и изобрѣтательность и нейдутъ далѣе того, съ чего начали. Жизнь наша подобна потоку: если запрудить и остановить его, онъ потечетъ назадъ или въ сторону. И наши способности трудомъ развиваются, изощряются и усиливаются, а безъ труда слабѣютъ и тупѣютъ.

Честный трудъ, обогащая умъ человѣка разными свѣдѣніями о тѣхъ предметахъ. надъ которыми онъ трудится, кромѣ того, еще укрѣпляетъ волю его на добро, дѣлаетъ человѣка болѣе добродѣтельнымъ, болѣе совершеннымъ по душѣ, чистымъ и нравственнымъ. Трудящемуся некогда праздно шататься по улицамъ, заходить въ гостинницы, трактиры и питейные дома и тамъ бражничать, проматывая послѣднія деньги. Занятому дѣломъ некогда празднословить или прислушиваться къ разнымъ глупымъ толкамъ и баснямъ, тѣмъ болѣе—увлекаться какими либо постыдными дѣлами и предпріятіями. Ему не такъ опасны и сторонніе соблазны и искушенія, какъ праздному, который „ничего не дѣлаетъ и безчинно обходитъ“ домы и людей (2 Солун. 3, 11), самъ подвергаясь и другихъ подвергая искушеніямъ и соблазнамъ; поэтому трудящійся человѣкъ всегда пользуется довѣріемъ, любовію и уваженіемъ отъ всѣхъ, какъ человѣкъ дѣльный, добрый и полезный... Удаляя человѣка отъ суетныхъ развлеченій и утомляя его духовныя и тѣлесныя силы, трудъ ослабляетъ грѣховныя страсти въ человѣкѣ и ограничиваетъ его прихоти, которыя отъ праздности сильно ростутъ и увеличиваются,—очищаетъ помыслы и желанія, умягчаетъ нравъ, облаго-

раживаетъ вкусъ и дѣлаетъ особенно пріятными только невинныя удовольствія, которыя для празднаго, привыкшаго къ удовольствіямъ губымъ и шумнымъ, обыкновенно становятся скучными и малозначущими. Отрадное сознаніе полезно употребленнаго времени, отдохновеніе послѣ труда за чтеніемъ или размышленіемъ о какомъ либо душеспасительномъ предметѣ, мирный и дѣловой разговоръ съ благонамѣреннымъ и опытнымъ человѣкомъ, особенно же посѣщеніе храма Божія и пребываніе въ кругу роднаго семейства—вотъ что попреимуществу составляетъ пріятное развлеченіе и утѣшеніе для многотрудящагося человѣка. Если къ тому онъ видитъ еще Божіе благословеніе на своихъ дѣлахъ и начинаніяхъ, то по истинѣ такой человѣкъ счастливъ и имѣетъ право, по слову Господню, „пріявши часть свою (отъ своихъ трудовъ праведныхъ) возвеселиться о трудѣ своемъ, какъ дарѣ Божіемъ“ (Екклес. 5, 18). Тогда не только бодрственное состояніе человѣка радостно и успокоительно, но и сонъ его сладокъ, какъ и сказано въ писаніи: „сонъ сладокъ работающему“ (Екклес. 5, 11).

Сверхъ исчисленныхъ благихъ послѣдствій отъ честнаго труда, можно указать еще на то, что онъ способствуетъ къ наиболѣе правильному и угодному служенію Богу. „Чти Господа отъ праведныхъ трудовъ твоихъ“, учитъ насъ слово Божіе (Притч. 3, 9),—и дѣйствительно мы истинно чтимъ Господа тогда, когда чтимъ Его трудами своими,—т. е. когда наши даянія и приношенія, наприм., въ храмъ Божій, бываютъ пріобрѣтены нашимъ стараніемъ, усиліями и самоотверженіемъ. Такая жертва Богу есть самая достойная и лучшая, хотя бы она и казалась незначительной и скудной. Богъ смотритъ не на огромность и цѣнность жертвы, а на усердіе приносящаго и внутреннее достоинство приносимаго. Богу пріятна и малая свѣча, которая поставляется къ Его св. иконѣ, если эта свѣча куплена на деньги, выработанныя честнымъ и добросовѣстнымъ трудомъ. Напротивъ Ему не угодна и богатая жертва, когда то, что приносится Ему,

добыто насиліемъ и неправдами. Упоминаемая въ св. Евангеліи бѣдная вдовица, положившая въ кружку Іерусалимскаго храма двѣ лепты, по словамъ Господа, пожертвовала болѣе всѣхъ другихъ, такъ какъ пожертвовала все, что имѣла добытаго ея трудомъ на ея пропитаніе (Лук. 21, 2—4).

Итакъ, вотъ въ какихъ многоразличныхъ отношеніяхъ благополезенъ и необходимъ честный трудъ для каждаго человѣка въ какомъ бы званіи и состояніи и при какомъ бы видѣ занятій и промысловъ человѣкъ тотъ ни находился. Честный трудъ, содѣйствуя устроенію внѣшняго благополучія и благосостоянія трудящагося, развиваетъ его духовныя силы и совершенствуетъ его нравственно, а чрезъ это способствуетъ человѣку въ главной цѣли его жизни—наслѣдовать царствіе Божіе, „восхищаемое“, по слову Евангелія, только „нуждницами“ (Мѳ. 11, 13), т. е. людьми, честно, богоугодно трудящимися.

---

*Годичное собраніе Костромскаго Ѳеодоровско-Сергіевскаго братства.* 11-го апрѣля въ часъ пополудни въ зданіи духовной консисторіи происходило годичное собраніе членовъ Ѳеодоровско-Сергіевскаго братства, состоящаго подъ покровительствомъ Его Высочества Великаго Князя Сергія Александровича. На собраніи присутствовали слѣдующія лица: Его Преосвященство Преосвященнѣйшій Виссаріонъ, начальникъ губерніи д. с. с. А. Р. Шидловскій, губернскій предводитель дворянства А. И. Шиповъ, предсѣдатель окружнаго суда А. С. Негребецкій, директоръ народныхъ училищъ В. А. Петровскій и многіе другіе мѣстные члены братства. Выслушавъ отчетъ о дѣятельности братства за 1892 годъ, прочитанный секретаремъ братства А. Е. Юницкимъ, собраніе постановило отчетъ утвердить и отпечатать въ Костромскихъ Епархіальныхъ Вѣдомостяхъ. Затѣмъ казначеемъ братства свящ. Н. А. Краснопѣвцевымъ былъ прочитанъ докладъ ревизіонной комиссіи о ревизіи суммъ и книгъ братства за 1891 и 1892 годы. Храненіе, расходованіе суммъ и веденіе книгъ признано правильнымъ. Вниманію общаго собранія членовъ предложенъ былъ затѣмъ докладъ Совѣта братства, прочитанный предсѣдателемъ Совѣта прот. І. Г. Поспѣловымъ. [Согласно докладу

Совѣта, общее собраніе постановило: 1) пригласить и въ 1893 году для собесѣдованія съ раскольниками Макарьевскаго и Варнавинскаго уѣздовъ противораскольническаго миссіонера А. Е. Шашина, много потрудившагося въ истекшемъ и въ началѣ текущаго года на поприщѣ просвѣщенія раскольниковъ Костромской епархіи; 2) поручить Совѣту братства пригласить надежныхъ лицъ для занятія должностей противораскольническихъ миссіонеровъ въ Макарьевскомъ и Варнавинскомъ уѣздахъ и назначить имъ вознагражденія по 300 руб. каждому ежегодно; 3) ходатайствовать предъ Его Преосвященствомъ объ учрежденіи благочинническихъ библіотекъ въ центральныхъ селахъ всѣхъ округовъ епархіи или, по крайней мѣрѣ, въ зараженныхъ расколомъ и вмѣнить въ обязанность благочиннымъ епархіи открыть нѣсколько складовъ для продажи книгъ и брошюръ религіозно-нравственнаго и противораскольническаго содержанія въ каждомъ благочинническомъ округѣ; 4) пригласить оо. протоіереевъ и іереевъ г. Костромы и всѣхъ уѣздныхъ городовъ, настоятелей и настоятельницъ монастырей, благочинныхъ и состоятельныхъ священниковъ епархіи быть членами братства; 5) установить на будущее время такой порядокъ разслѣдованія дѣлъ о злоупотребленіяхъ раскольниковъ: о сообщенныхъ священниками злоупотребленіяхъ раскольниковъ Совѣтъ братства долженъ доносить епархіальному начальству, отъ котораго зависитъ возбужденіе дѣлъ о злоупотребленіяхъ раскольниковъ; 6) просить его превосходительство начальника Костромской губерніи войти въ сношеніе съ предсѣдателями уѣздныхъ земскихъ управъ по вопросу о пособіи на открытіе и содержаніе церковно-приходскихъ школъ въ тѣхъ приходахъ зараженныхъ расколомъ, гдѣ нѣтъ ни приходскихъ, ни начальныхъ училищъ.—Послѣ обсужденія и утвержденія доклада Его Преосвященство Преосвященнѣйшій Виссаріонъ предложилъ выразить благодарность за усердные труды по дѣламъ братства предсѣдателю Совѣта братства, товарищу предсѣдателя, членамъ Совѣта секретарю и казначею. Предложеніе Преосвященнаго принято собраніемъ. Въ заключеніе общее собраніе постановило выразить благодарность Его Преосвященству Преосвященнѣйшему Виссаріону за его пожертвованія на нужды братства. Собраніе выразило также благодарность причту и старостѣ Костромскаго каѳедральнаго собора, настоятелямъ съ братіею и настоятельницамъ съ сестрами монастырей: Макарьево-Унженскаго архимандриту Іову, Николо-Надѣевской пустыни игумену Амвросію, Галичскаго Пансіева игумену Іосифу, Богоявлен-

ско-Анастасіинскаго игуменьѣ Евпраксіи, Николо-Бабаевскаго игумену Ильѣ, Тихоновско-Лухскаго архимандриту Платону, Авраамієва-Городецкаго игумену Гавріилу, Бѣлбажскаго игуменьѣ Ерміонии, и. д. настоятеля Троицкой Кривоезерской пустыни игумену Алексію, Богородицко-Ѳеодоровскаго игуменьѣ Серафимѣ, казначею Богородицкаго Игрицкаго іеромонаху Мелитону, правленію Костромскаго Ипатіевскаго монастыря и всѣмъ приносившимъ жертвы на пользу братства деньгами или трудами. Предсѣдателемъ общаго собранія Его Преосвященствомъ Преосвященнѣйшимъ Виссаріономъ собраніе было объявлено закрытымъ. Собравшіеся члены пропѣли „Свѣтися, свѣтися...“

## Епархіальная хроника.

— 11-го апрѣля, въ недѣлю женъ мироносицъ, Его Преосвященство Преосвященнѣйшій Виссаріонъ служилъ въ каѳедральномъ Богоявленскомъ соборѣ и во время литургіи произнесъ слово, въ которомъ раскрылъ значеніе служенія Христу мироносицъ во время земной Его жизни и во время Его смерти. Послѣ литургіи Преосвященнѣйшій, при участіи соборнаго и приходскаго духовенства совершилъ торжественное молебствіе по случаю дня рожденія Его Высочества Великаго князя Владиміра Александровича (10-го апрѣля) и В. К. Маріи Павловны (6-го апрѣля).

— 18-го апрѣля Его Преосвященство Преосвященнѣйшій Виссаріонъ служилъ въ каѳедральномъ Богоявленскомъ соборѣ и во время литургіи произнесъ слово, въ которомъ по случаю поздней весны и упорно продолжающейся стужи не только въ сѣверныхъ но и въ южныхъ странахъ, въ успокоеніе смущающихся этимъ необычнымъ явленіемъ, указалъ на обѣтованіе Божіе, объявленное Ною послѣ всемірнаго потопа: *Во вся дни земли сѣятва и жатва, лѣто и весна не престанутъ* (Быт. 8, 22), и замѣтилъ, что землѣ суждено погибнуть не отъ стужи, а отъ огня. Послѣ литургіи Его Преосвященство, при участіи соборнаго духовенства, отслужилъ молебенъ Спасителю и Божіей Матери и привелъ къ присягѣ гласныхъ Костромской городской думы, избранныхъ на четырехлѣтіе съ 1893 по 1897 годъ. Предъ присягою Преосвященнѣйшій обратился къ гласнымъ съ рѣчью, въ которой поздравилъ ихъ съ довѣріемъ къ нимъ гражданъ г. Костромы и выразилъ надежду, что они постараются оправдать это довѣріе добросовѣстнымъ исполненіемъ возложенныхъ на нихъ обязанностей, руководствуясь страхомъ Божіимъ и присягою.

— 20-го апрѣля Его Преосвященство Преосвященнѣйшій Виссаріонъ посѣтилъ Костромское духовное училище во время занятій. Владыка посѣтилъ уроки Закона Божія, русскаго языка, ариѳметики и латинскаго языка. Владыка задавалъ воспитанникамъ вопросы изъ пройденнаго Во время перемѣны Преосвященнѣйшій въ помѣщеніи правленія духовнаго училища бесѣдовалъ съ преподавателями о ходѣ учебно-воспитательнаго дѣла.

— 21-го апрѣля, въ день Преполовенія, Его Преосвященство Преосвященнѣйшій Виссаріонъ служилъ въ каѳедральномъ Богоявленскомъ соборѣ и послѣ литургіи принималъ участіе въ крестномъ ходѣ на рѣку Волгу для освященія воды.

— 22-го апрѣля, въ 9 ч. утра Его Преосвященство Преосвященнѣйшій Виссаріонъ предпринялъ обозрѣніе церквей г. Костромы, принадлежащихъ къ 2-му благочинническому округу. Владыка посѣтилъ церкви: Предтеченскую, Спасскую, что въ Гостиномъ дворѣ, Ильинскую, Богословскую, что на Каткиной горѣ, Борисоглѣбскую, Всѣхсвятскую, Стефановскую, Христорождественскую, что на Дебрѣ. Во всѣхъ церквахъ Его Преосвященство Преосвященнѣйшаго Виссаріона встрѣчали мѣстное духовенство и прихожане, къ которымъ Владыка обращался съ словами назиданія. Въ церкви всѣхъ святыхъ Владыку встрѣтили пѣніемъ питомцы колоній для малолѣтнихъ преступниковъ. Въ Христорождественской церкви Владыка осматривалъ древній антиминсъ, освященный архіепископомъ Ростовскимъ Іоакимомъ. Кромѣ названныхъ церквей Преосвященнѣйшій посѣтилъ Воскресенскую церковно-приходскую школу, гдѣ провѣрялъ познанія воспитанниковъ по Закону Божію и другимъ предметамъ.

— 23-го апрѣля Его Преосвященство посѣтилъ Цареконстантиновскую церковь г. Костромы. Отсюда Владыка проѣхалъ на Лазаревское городское кладбище, а затѣмъ въ находящійся недалеко отъ кладбища тюремный замокъ. Арестанты были собраны въ тюремной церкви и здѣсь Владыка обратился къ нимъ съ поученіемъ, въ которомъ разъяснилъ имъ, какъ они должны смотрѣть на свое заключеніе. Изъ тюремнаго замка Преосвященнѣйшій отправился въ губернскую земскую больницу, гдѣ обошелъ палаты благословляя больныхъ и обращался къ нимъ съ словами утѣшенія. Въ больничной церкви Владыку встрѣтили мѣстное духовенство, врачи и служащіе въ больницѣ. Преосвященнѣйшій сказалъ присутствующимъ нѣсколько назидательныхъ словъ объ обязанностяхъ ихъ по отношенію къ страждущимъ.

# ОБЪЯВЛЕНІЯ.

## ПИСЬМО ВЪ РЕДАКЦІЮ.

*Милостивый Государь*
*Господинъ Редакторъ.*

Увѣренный въ просвѣщенной готовности Вашей, выразить мнѣ содѣйствіе Ваше, по предпринятому мною собиранію отечественныхъ пословицъ и поговорокъ, я позволяю себѣ обратиться къ Вамъ, Милостивый Государь, съ усерднѣйшею моею просьбою, не отказать мнѣ, чрезъ напечатаніе настоящаго письма моего въ Вашей газетѣ, довести до всеобщаго свѣдѣнія, что лица, которыя пожелали бы сообщить мнѣ, всякаго рода **мѣстныя** пословицы, поговорки, присловія, скороговорки, присказки, побасенки, приговорки, рѣченія, обиняки, иносказанія, окольныя выраженія, и всякаго рода другія, характерныя и общеупотребительныя выраженія, и обороты устной рѣчи, могутъ присылать ихъ на имя мое, въ открытыхъ, простыхъ и по желанію заказныхъ письмахъ, адресуя: Полтава. Дѣйствительному Статскому Совѣтнику Н. П. Тимофѣеву. Собственный домъ.

Примите Милостивый Государь увѣреніе въ моемъ совершенномъ почтеніи и преданности.

---

## КОЛОКОЛО-ЛИТЕЙНЫЙ ЗАВОДЪ
## СЕРАПІОНА НИКОЛАЕВИЧА
## ЗАБѢЛКИНА,

**въ селѣ Шунгѣ, близъ гор. Костромы.**

Принимаю отливку новыхъ и переливку старыхъ колоколовъ, для церквей, различнаго вѣса, съ ручательствомъ за полное ихъ достоинство, какъ въ качествѣ, такъ и звукѣ. Съ заказами лично или письменно, прошу адресоваться, какъ указано выше.

*С. Н. ЗАБѢЛКИНЪ.*

4—3

# ПОУЧЕНІЯ О БОЖЕСТВЕННОЙ ЛИТУРГІИ

въ 3-хъ выпускахъ

Свящ. А. Либерова.

**Цѣна за всѣ три выпуска:** на обыкновен. бумагѣ **70** коп., съ перес. **85** коп.; на лучш. бум. **85** коп., съ пересыл. **1** руб.

**Цѣна выпускамъ отдѣльно:** 1-му: на обыкновен. бумагѣ **20** коп., съ перес. **25** коп.; на лучш. бум. **25** коп., съ перес. **30** коп.; 2-му и 3-му выпускамъ: на обыкн. бум. по **25** коп., съ перес. по **30** коп.; на лучш. бум. по **30** коп., съ перес. по **35** коп.

Выписывающіе не менѣе 10 экз. всѣхъ 3-хъ выпусковъ за пересылку не платятъ; выписывающіе не менѣе 50 экз., сверхъ сего, пользуются 10% уступки.

Адресоваться въ Редакцію Костром. Епарх. Вѣдомостей, въ Кострому, Тамъ же продаются:

**I. Лѣтопись Макарьева-Унженскаго монастыря.** *И. Херсонскаго.* Вып. 1-й. Ц. **35** коп., съ перес. **40** коп.

**II. Поученія на Символъ вѣры.** Цѣна **75** коп. съ перес., безъ перес. **55** коп.

Мелкія суммы за всѣ изданія могутъ быть присылаемы почтовыми марками.


---


**Содержаніе неоффиціальной части.** Слово по поводу безжалостнаго истребленія птицъ. Честный трудъ поселянина, какъ его священная обязанность, какъ основа его благосостоянія и условіе нравственнаго его усовершенствованія. Годичное собраніе Костромскаго Ѳеодоровско-Сергіевскаго братства. Епархіальная хроника. Объявленія. *Приложеніе.* „Галичская десятина“ стр. 153—160.


---


*Редакторы: Семинаріи Ректоръ, Архимандритъ Менандръ.*

*Преподаватель Семинаріи В. Строевъ.*

Дозв. цензурою. Апрѣля 22 дня 1893 г. Кострома. Въ Губернской Типографіи.

1746 г. Николая чудотворца въ селѣ Андреевскомъ 67½ копѣекъ.

## 83

## Сольгалецкая на посадѣ.

Церковь Воскресеніе Христово церковь Дмитрія Селунскаго у Соли Галитцкие на посадѣ, дани вдвое два рубли пятнатцать алтынъ две денги, десятильничихъ две гривны.

И октября въ 20 день на нынѣшней на 136 годъ тѣ деньги *взято*, платилъ попъ Гарасимъ *).

137 г. ноября 25 тѣ денги взято, платилъ онъ же попъ Герасимъ. Данныя и вѣнечныя пошлины платили: села Одноушева пустынки старецъ Викентій 140 г., Солдовскаго монастыря игуменъ Герасимъ 143, 147, 148 г., деревни Липихиной крестьянинъ 150 г., попъ Афонасій 156 г.

164 г. положено дани: 4 рубли 29 алтынъ 4 денги заѣзда гривна.

Съ 188 г. въ Усольской десятинѣ. § 3.

---

185 г. марта 6 подана къ подпискѣ Галич. уѣзда церкви Воскресенія Хр., что у Соли на погостѣ, грамота попа Никифора Герасимова.

## 84.

Церковь Николая чудотворца да церковь Преображение Спасова у соли Галитцкой на посадѣ, дани вдвое четыре рубли, десятильничихъ две гривны

Генваря въ 30 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ денги *взято* **).

137 г. генваря 12 тѣ денги взято, платилъ попъ Антипа. 138 г. декабря 10 Солигалицкія церкви Николая чудотворца, что на по-

---

*) Двойная.
**) Двойная.

садѣ, прошлаго 137 году съ 7 отроковъ да съ почеревной пошлинъ 21 алтынъ 3 деньги взято да нынѣшняго 138 г. съ 5 отроковъ да съ двоеженца 17 алтынъ взято. 140 г. по книгамъ за рукою попа Антипы 139 г. съ 5 отроковъ, да съ 2 двоеженцовъ да съ 2 похоронныхъ 28 алтынъ съ денгою, да 140 г. съ 3 отроковъ да съ двоеженца да съ почеревые 15 алтынъ 2 денги взято. Данныя и вѣчныя пошлины платили: Солдовскаго монастыря игуменъ Герасимъ 148 г., Усолицъ посадской человѣкъ Андрюшка Никитивъ 149, 150, 151 г., попы Семіонъ и Лаврентій 156—160 г., попы Лаврентій и Иванъ 161 г.

164 г. положено дани 4 руб. 18 алтынъ 3 денги, заѣзда гривна, отмѣчено: писать Преображенія Господня съ придѣлы.

Съ 188 г. въ Усольской десятинѣ. § 15.

---

183 г. іюнія 12 подана къ подпискѣ Солигалицкія церкви Николая чуд., что на посадѣ, грамота діакона Василія Васильева, принесъ братъ его дьякона Григорій Ивановъ, что живетъ у крестоваго царицина священника Никиты, дьячекъ Григорій Ивановъ брата его грамоту взялъ и росписался.

184 г. февраля 29 подана къ подпискѣ Солигалицкой съ посаду церкви св. Николая чуд. грамота попа Матвѣя Борисова.

## 85.

Церковь Рождество Пречистыя Богородицы на посадѣ, дани рубль восемь алтынъ три денги, десятильничихъ и заѣзда гривна

Генваря въ въ 30 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ денги *взято*.

164 г. положено дани рубль 30 алтынъ 5 денегъ заѣзда гривна.

Съ 188 г. въ Усольской дѣсятинѣ. § 1.

---

## 86.

Церковь святыя мученицы пятницы у соли на посаде, дани три алтына четыре денги, десятильничихъ и заѣзда гривна.

Генваря въ 30 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ денги *взято*.

164 г. положено дани 10 алтынъ, заѣзда гривна, писать Входъ во Іерусалимъ.

Съ 188 г. въ Усолнской десятинѣ § 2.

## 87.

Церковь святыхъ мученикъ Бориса и Глѣба у соли на посаде, дани вдвое рубль семнадцать алтынъ четыре деньги, десятильничихъ две гривны.

И октября въ 20 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ денги *взято*, платилъ попъ Ондрей.

138 г. генваря 5 Солигалицкія церкви св. мученикъ Бориса и Глѣба вѣнечныхъ прошлаго 137 г. съ отрока да съ двоеженца пошлинъ 7 алтынъ взято. 139 г. генваря 7 по книгамъ церкви Бориса и Глѣба, что у Соли галицкія на посадѣ, вѣнечныхъ прошлаго 138 г. 1 отрока 2 ал. 3 д. взято, да нынѣшняго 139 г. со 1 двоеженца 4 ал. 3 д. взято. 140 г. по книгамъ за рукою попа Андрѣя съ 5 человѣкъ отроковъ 12 ал. 3 д. взято. Данныя и вѣнечныя пошлины платили: Гавриловской слободы Архангельской попъ Иванъ 148 и 150 г., боярыни Ульяны Ѳедоровны Семеновы жены Васильевича Головина человѣкъ 194 г., посадской человѣкъ Андрюшка Никитинъ 151 г., попъ Іоакимъ 156, 158—161 г.

164 г. положено дани рубль 11 алтынъ 4 денги, заѣзда гривна, писать Воздвиженія честнаго креста Господня.

Съ 188 г. въ Усольской десятинѣ. § 16.

---

152 г. іюля 4 запечатана благословенная грамота по челобитью Солигалицкіе съ посаду Борисоглѣбскаго попа Ерофеи съ прихожаны

на одинъ престолъ Воздвиженія честнаго креста Господня, пошлинъ гривна.

## 88.

Церковь Николы чюдотворца влосеве рамене, дани двадцать восемь алтынъ две денги, десятильничихъ и заѣзда две гривны.

Генваря въ 30 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ денги *взято*.

164 г. положено дани 2 руб. 28 алтынъ 4 денги заѣзда гривна.

Съ 188 г. въ Усольской десятинѣ. § 5.

## 89.

Церковь Николы чюдотворца вкорцовѣ, дани вдвое три рубли одинъ алтынъ две денги, десятильничихъ две гривны.

И декабря въ 13 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ денги *взято*, платилъ князь Ивановъ человѣкъ Волконскаго Лучка Юдинъ *).

137 г. декабря 28 тѣ деньги взято, платилъ князь Левъ Волконской. 139 г. декабря 18 по книгамъ Галицкаго уѣзда Усольскія осады въ церкви Николая чуд., что въ Карцовѣ Раменьѣ, вѣнечныхъ съ 3 отроковъ съ 2 двоеженцевъ 139 г. пошлинъ 16 алтынъ 3 денги взято. 140 г. по книгамъ Николая чудотворца, что въ Карцовѣ Раменьѣ за рукою попа Евтихея нынѣшняго 140 г. съ 4 отроковъ да съ 2 человѣкъ вторымъ бракомъ вѣнечныхъ пошлинъ 19 алтынъ взято. 148 г. февраля 27 церкви Николая чудотворца, что въ Усольѣ въ Карцовѣ Раменьѣ, по росписи за рукою попа Авдокима нынѣшняго 148 г. вѣнечныхъ пошлинъ съ отрока полтретья алтына взято. Данныя и вѣнечныя пошлины платили: князь Львова человѣкъ Волконскаго Ѳедоръ Тарбѣевъ 143 г., князь Ивана Ѳедоровича Волконскаго человѣкъ 147 г., Семена Васильевича Головина жены Ульяны Ѳедоровны человѣкъ 148 и 151 г., тое жъ церквки попъ Ѳеранонтъ 158 г.

164 г. положено дани 3 руб. 2 алтына съ деньгою, заѣзда гривна.

Съ 188 г. въ Усольской. § 17.

---

*) Двойная.

## 90.

Церковь святаго мученика Георгія вхолму вшареве на рѣкѣ на солде, дани вдвое рубль двадцать восемь алтынъ, десятильничихъ две гривны.

Генваря въ 4 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ денги *взято.* платилъ прихожанинъ Левка Незговоровъ *).

137 г. февраля 4 тѣ деньги взято, платилъ Ивановъ человѣкъ Волконскаго Ондрюшка Огарковъ. 138 г. февраля 15 Солигалицкія церкви св. муч. Георгія Холму Шарьева вѣнечныхъ пошлаго 137 г. съ 4 отроковъ 10 алтынъ, да нынѣшняго 138 г. съ 3 отроковъ 7 алтынъ 3 денги. 138 г. по книгамъ вѣнечныхъ пошлинъ съ 10 отроковъ 25 алтынъ взято, да 4 отроковъ вѣнечныхъ пошлинъ 10 ал. взято. 139 г. по книгамъ съ 2 отроковъ да съ 1 двоеженца 19 алтынъ 3 денги взято. 140 г. по книгамъ 139 г. съ 2 отроковъ вѣнечныхъ пошлинъ 5 алтынъ, да 140 г. съ 5 отроковъ 12 алтынъ 3 денги взято. Данныя и вѣнечныя пошлины платили: князь Ивана Хилкова крестьянинъ 140 г., Зубченинъ Матвѣй Карцевъ 143 г., Семена Челюскина крестьянинъ 147—148 г., Гавриловской слободы что на Поганомъ прудѣ, попъ Иванъ 149 и 157 г., попъ Петръ 156—158 и 160 г., попъ Селивестръ 159 и 161 г.

164 г. положено дани 3 руб. 9 алтынъ 4 денги заѣзда гривна; писать Благовѣщенія Пречистыя Богородицы.

Съ 188 г. въ Усольской. § 18.

---

152 г. іюля 8 запечатана благословенная грамота по челобитью Усольскія осады, что на рѣкѣ на Солгѣ, Георгіевскаго попа Петра на три престола Благовѣщенія Пресв. Богородицы, да Рождества Іоанна Предтечи, да Николы чудотворца, пошлины 10 алтынъ.

184 г. февраля 23 подана къ подискѣ Галиц. уѣзда села Хорошева церкви св. вел.муч Георгія страстотерпца грамота попа Ѳеодосія Антипіева.

---

*) Двойная.

## 91.

Церковь святаго Дмитрія Селунскаго Жилинскіе волости, дани вдвое два рубли осмнатцать алтынъ, десятильничихъ двѣ гривны.

Генваря въ 7 день на нынешнеи на 136 годъ тѣ деньги *взято*, платилъ попъ Иванъ.

138 г. марта 4 Галицкія десятины Усольскія осады церкви св. Димитрія, что въ Жилинской волости, вѣнечныхъ пошлинъ прошлаго 137 г. съ 3 отроковъ съ 1 двоеженца 12 алтынъ взято, да нынѣшняго 138 г. съ 3 отроковъ 7 алтынъ 3 деньги взято. 139 г. марта 7 по книгамъ за рукою Дмитріевскаго попа Ивана прошлаго 138 г. съ 2 отроковъ да съ 2 двоеженцовъ вѣнечныхъ пошлинъ 14 алтынъ да нынѣшняго 139 г. съ 2 отроковъ 5 алтынъ взято. 140 г. по книгамъ за рукою попа Павла 139 г. съ 2 отроковъ 5 алтынъ, да 140 г. съ 6 отроковъ 15 алтынъ. Данныя и вѣнечныя пошлины платили: Галиченинъ Давыдъ Пушкинъ 140 г., Солдовскаго монастыря игуменъ Герасимъ 143 г., Ѳедоръ Парской 148 г., попъ Нефедій 155 г., попы Иванъ и Нефедій 157—159 г., попъ Иванъ 160—161 г.

164 г. положено дани 3 руб. 5 алтынъ заѣзда гривна, писать Успенія пречистыя Богородицы.

Съ 188 г. въ Усольской. § 19.

## 92.

Церковь Николы чюдотворца на погостѣ Желинскія волости, дани вдвое двадцать восемь алтынъ четыре денги, десятильничихъ двѣ гривны.

Генваря въ 5 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ деньги взято, платилъ Петръ Бехтѣевъ *).

137 г. іюня 22 тѣ деньги взято, платилъ вѣкошникъ Михаилъ Косовъ. 138 г. марта 6 Усольскія осады церкви Николая чуд. Жилинскія волости вѣнечныхъ нынѣшняго 138 г. съ 2 отроковъ пошлинъ

*) Двойная.

5 алтынъ взято. 139 г. марта въ 10 день по книгамъ церкви Николая чуд. попа Родіона нынѣшняго 139 г. съ отрока вѣнечныхъ пошлинъ 2 алтына 3 деньги взято. Данныя и вѣнечныя пошлины платили: Казеннаго Приказу сынъ боярской Давыдъ Поповъ 140 г., Бѣлянинъ Григорій Маринъ 143 г., Солдовскаго монастыря игуменъ Герасимъ 147, 148, 149, 150 г., попъ Григорій 155, 156, 160—161 г.

164 г. положено дани рубль 9 алтынъ заѣзда гривна; писать Преображенія Господня.

Съ 188 г. въ Усольской. § 20.

---

185 г. февраля 12 подана къ подпискѣ Усольскія осады Жилинскія волости церкви Николая чуд. грамота попа Ѳедора Ѳерапонтова.

## 93.

Церковь Успеніе пречистыя Богородицы внижнемъ Березовце на рѣкѣ на Костромѣ, дани четырнадцать алтынъ три деньги, десятильничихъ и заѣзда гривна.

Генваря въ 30 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ деньги *взято* *).

139 г. дана грамота, велѣно дань платить вдвое и декабря въ 5 дня тѣ деньги на 139 годъ рубль 2 алтына 2 деньги взято сполна, платилъ попъ Борисъ. 140 г. по книгамъ за рукою попа Бориса 139 г. съ 5 отроковъ да съ 2 двоеженцовъ вѣнечныхъ пошлинъ 21 алтынъ 3 деньги взято. 143 г. по книгамъ за рукою попа Гавриды вѣнечныхъ пошлинъ 142 г. съ 3 отроковъ да съ двоеженца 12 алтынъ взято. Данныя и вѣнечныя пошлины платили: Солдовскаго монастыря игуменъ Герасимъ 149—150 г., попъ Нефедей 155 г., попъ Гавріилъ 156—161 г.

164 г. положено дани 2 рубля 5 алтынъ заѣзда гривна.

Съ 188 г. въ Усольской. § 31.

---

*) Двойная.

## 94.

Церковь Николы чюдотворца вверхнемъ березовце на рѣкѣ на Костромѣ, дани рубль одинъ алтынъ три денги, десятильничихъ и заѣзда гривна.

Генваря въ 30 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ деньги *взято*. 164 г. положено дани 2 руб. 27 алтынъ заѣзда гривна.

Съ 188 г. въ Усольской. § 6.

## 95.

Церковь Успеніе Пречестые Богородицы Всолдовской волости особной монастырь на рѣкѣ на Солдѣ, дани вдвое два рубли пять алтынъ, дясятильничихъ и заѣзда гривна.

И декабря въ 29 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ деньги *взято*, платилъ попъ Григореи *).

137 г. генваря 12 тѣ деньги взято, платилъ попъ Григорій. 138 г. генваря 29 Галицкія десятины съ церкви Успенія Пр. Богор. Особнаго монастыря, что въ Солдовской волости, вѣнечныхъ пошлинъ прошлаго 137 г. съ 4 отроковъ да съ двоеженца 14 алтынъ 3 денги взято, да нынѣшняго 138 г. съ 3 отроковъ, да съ двоеженца да съ похоронной 15 алтынъ 2 деньги взято. 139 г. генваря 12 по книгамъ за рукою Успенія Преч. Богор. Особнаго монастыря Солдовскаго попа Григорья вѣнечныхъ пошлинъ прошлаго 138 г. съ 7 отроковъ да съ 4 двоеженцевъ рубль 2 алтына съ деньгою, да 139 г. съ 5 отроковъ да съ 3 двоеженцевъ 25 алтынъ, обоего рубль 28 алтынъ съ деньгою взято. 140 г. по книгамъ за рукою попа Семіона 139 г. съ 2 отроковъ да съ 2 двоеженцевъ 14 алтынъ да 140 г. съ 3 отроковъ 7 алтынъ 3 деньги взято. 143 г. по книгамъ за рукою попа Григорья Солдовскаго монастыря вѣнечныхъ пошлинъ 138 г. съ 7 отроковъ да съ 4 двоеженцовъ да 139 г. съ 5 отроковъ да съ

*) Двойная.

15-го МАЯ 1893 ГОДА.

# КОСТРОМСКІЯ ЕПАРХІАЛЬНЫЯ ВѢДОМОСТИ.

Выходятъ 1 и 15 чиселъ. Цѣна за годъ 5 рублей; отдѣльно 25 коп. за номеръ.

Годъ VII.

№ 10.

Адресъ: Кострома, въ Редакцію КостромскихъЕпархіальныхъ Вѣдомостей.

Объявленія печатаются по 15 коп. за обыкнов. строку за одинъ разъ, но 10 коп. за два и болѣе раза.

## ОТДѢЛЪ 1. ЧАСТЬ ОФФИЦІАЛЬНАЯ.

### Распоряженія епархіальнаго начальства.

1. Объ обращеніи остатковъ, свободныхъ по случаю закрытія въ 1892 году нѣкоторыхъ священноцерковнослужительскихъ вакансій въ Костр. еп., на жалованье священникамъ бѣднѣйшихъ, зараженныхъ расколомъ, приходовъ *(ук. Костр. д. консисторіи № 3334).*

По указу Его Императорскаго Величества, Костромская д. консисторія слушали указъ Св. Правит. Синода, послѣдовавшій на имя Его Преосвященства, отъ 5 апрѣля 1893 г. за № 1408, слѣдующаго содержанія: „По указу Его Императорскаго Величества, Святѣйшій Правительствующій Синодъ слушали: 1) представленіе Вашего Преосвященства, отъ 23 февраля сего года за № 1745, объ обращеніи 1432 руб., оставшихся свободными отъ закрытія въ 1892 году по Костромской епархіи, съ введеніемъ

новаго штата, нѣкоторыхъ священноцерковнослужительскихъ вакансій въ причтахъ, на жалованье священникамъ бѣднѣйшихъ въ той же епархіи приходовъ, зараженныхъ расколомъ, согласно приложенной къ этому представленію вѣдомости, и 2) отзывъ Хозяйственнаго при Св. Синодѣ управленія, отъ 12 марта сего года № 4369, о томъ, что къ удовлетворенію означеннаго ходатайства Преосвященнаго Костромскаго со стороны Хозяйственнаго управленія препятствій не встрѣчается. Приказали: Согласно представленію Вашего Преосвященства и заключенію Хозяйственнаго управленія, Святѣйшій Синодъ опредѣляетъ: 1432 рубля, оставшіеся свободными отъ закрытія въ 1892 году по Костромской епархіи сверхштатныхъ священноцерковнослужительскихъ вакансій, назначить на содержаніе священникамъ бѣднѣйшихъ въ той же епархіи приходовъ, зараженныхъ расколомъ, согласно приложенной къ представленію Вашего Преосвященства вѣдомости, о чемъ и увѣдомить Ваше Преосвященство указомъ, а въ Хозяйственное при Св. Синодѣ управленіе передать выписку изъ сего опредѣленія. Съ утвержденія Его Преосвященства, приказали: 1) указъ Св. Синода, отъ 5 апрѣля сего года за № 1408, и вѣдомости подъ №№ 1 и 2, объявить для свѣдѣнія духовенству Костромской епархіи чрезъ напечатаніе въ Костромскихъ Епархіальныхъ Вѣдомостяхъ и особыми печатными указами дать знать тѣмъ священникамъ, коимъ назначено жалованье съ 1-го января 1892 г. изъ мѣстныхъ казначействъ; 2) вѣдомость, подъ № 1, объ остаткахъ содержанія сельскаго духовенства Костромской епархіи въ размѣрѣ 1432 рублей, состоящихъ свободными по случаю закрытія, со введеніемъ новаго штата, нѣкоторыхъ священноцерковнослужительскихъ вакансій въ причтахъ, сообщить Костромской казенной палатѣ и просить оную сдѣлать распоряженіе, чтобы вышеозначенная сумма, начиная съ 1 января 1892 г., ежегодно была выдаваема священникамъ приходовъ, означенныхъ въ вѣдомости подъ № 2; 3) тѣмъ священникамъ, коимъ назначено дополнительное жалованье, предписать

указами, чтобы назначенный окладъ жалованья они означали въ подлежащихъ пунктахъ клировыхъ вѣдомостей, а благочинные, по установленному порядку, доносили консисторіи по-полугодно о полученіи, за вычетомъ 2%, жалованья и могущихъ быть остаткахъ по какимъ либо перемѣнамъ. Апрѣля 29 дня 1893 года.

ВѢДОМОСТЬ № 1. Объ остаткахъ отъ содержанія духовенства при нѣкоторыхъ церквахъ Костром. епархіи, состоящихъ свободными, по случаю закрытія, со введеніемъ новаго штата, нѣкоторыхъ священноцерковнослужительскихъ вакансій, положенныхъ по штатамъ 1855—56 гг.

| Наименованіе уѣздовъ, селъ и церквей Костромской епархіи | Годовой окладъ жалованья. | |
|---|---|---|
| | Священническій. | Псаломщическій. |
| | Рубли. | Рубли. |
| *Костромскаго уѣзда.* | | |
| Воскресенской ц. с. Любовникова . | „ | 24 |
| Тихвинской с. Сойкина . . | „ | 24 |
| Знаменской с. Кузнецова . . | „ | 24 |
| Николаевской с. Трестина . . | „ | 24 |
| Николаевской с. Грудева . . | „ | 24 |
| Ильинской с. Здѣмірова . . | „ | 24 |
| Итого . | „ | 144 |
| *Нерехтскаго уѣзда.* | | |
| Троицкой с. Сыпановой слободы . | „ | 36 |
| Флоровской с. Флоровскаго . . | „ | 24 |
| Троицкой с. Краснаго-Сумароковыхъ . | „ | 24 |
| Срѣтенской с. Срѣтенскаго . . | „ | 24 |
| Богородицкой с. Строевой горы . | „ | 24 |
| Преображенской с. Спасъ-Нозоги . | „ | 24 |
| Предтеченской с. Ивановскаго . . | „ | 24 |
| Николаевской с. Фрянькова . . | „ | 24 |
| Всѣхсвятской с. Широкова . . | „ | 24 |

| | | |
|---|---|---|
| Покровской с. Краснаго-Поливановыхъ . | „ | 24 |
| Итого . | „ | 252 |
| *Солигаличскаго уѣзда.* | | |
| Рождественской с. Починка . . | „ | 24 |
| Благовѣщенской с. Неронова . . | „ | 24 |
| Итого . | „ | 48 |
| *Буйскаго уѣзда.* | | |
| Одигитріевской с. Ушакова . . | „ | 24 |
| *Макарьевскаго уѣзда.* | | |
| Вознесенской с. Тимошина . . | „ | 36 |
| Николаевской с. Макарова . . | „ | 36 |
| Николаевской с. Тепринова . . | „ | 24 |
| Преображенской с. Пелегова . . | „ | 24 |
| Ильинской Стараго-погоста . . | „ | 2 |
| Успенской с Дороѳеева . . | „ | 24 |
| Казанской с. Шадрина . . | 120 | „ |
| Казанской с. Мамонтова . . . | „ | 24 |
| Тихвинской с. Ильинскаго . . | „ | 24 |
| Николаевской с. Кондомы . . | „ | 4 |
| Итого . | 120 | 220 |
| *Галичскаго уѣзда.* | | |
| Николаевской с. Холму . . | „ | 24 |
| Покровской с Смольницъ . . | „ | 36 |
| Введенской с. Дурцова . . | „ | 24 |
| Происхожденской с. Русакова . . | „ | 24 |
| Казанской с. Новаго . . | „ | 24 |
| Успенской с. Дубянъ . . | „ | 24 |
| Николаевской с. Сельца . . | „ | 24 |
| Богословской с. Богословскаго . . | „ | 24 |
| Николаевской, что на Быстрыхъ . | „ | 24 |
| Троицкой с. Сигонтина . . | „ | 24 |
| Итого . | „ | 252 |

| | | |
|---|---|---|
| *Юрьевецкаго уѣзда.* | | |
| Знаменской с. Башкина . . | „ | 36 |
| Воскресенской с. Лучкина . . | „ | 24 |
| Троицкой с. Троицкаго . . | „ | 24 |
| Вознесенской с. Вознесенскаго . . | „ | 24 |
| Успенской с. Бортницъ . . | „ | 24 |
| Итого . | „ | 132 |
| *Чухломскаго уѣзда.* | | |
| Николаевской, что на Острову . . | „ | 24 |
| Одигитріевской быв. г. Судая . . | „ | 24 |
| Дмитріевской с. Иды . . | „ | 24 |
| Итого . | „ | 72 |
| *Кинешемскаго уѣзда.* | | |
| Христорождественской с. Гребней . | „ | 24 |
| Покровской с. Новлянскаго . . | „ | 24 |
| Казанской с. Филяй . . | 40 | 20 |
| Итого . | 40 | 68 |
| *Ветлужскаго уѣзда.* | | |
| Введенской с. Конева . . | 40 | 20 |
| Итого . | 40 | 20 |
| А всего . . | 200 | 1232 |
| | | 1432 |

ВѢДОМОСТЬ № 2. О назначеніи нѣкоторымъ священникамъ раскольническихъ и бѣдныхъ приходовъ Костром. епархіи жалованья изъ остатковъ отъ содержанія духовенства епархіи, свободныхъ отъ закрытія священноцерковнослужительскихъ при церквахъ вакансій.

| Наименованіе уѣздовъ, селъ и церквей, священникамъ коихъ назначается жалованье. | Нынѣ получаемый священниками годовой окладъ жалованья. | Размѣръ получаемаго оклада жалованья, или добавки къ получаемому. | Итого слѣдуетъ къ выдачѣ. |
|---|---|---|---|
| *Костромскаго уѣзда* | | | |
| 1) Преображенской ц. с. Спаса-Вежъ свящ. | 90 | 54 | 144 |
| 2) Воскресенской—села Куникова свящ. | 72 | 72 | 144 |
| 3) Богородицкой—села Богородицкаго свящ. | 72 | 24 | 96 |
| *Макарьевскаго уѣзда.* | | | |
| 4) Христорождествен.—с. Гарей 1-му свящ. | „ | 144 | 144 |
| 5) Успенской—села Успенскаго 1-му свящ. | 108 | 36 | 144 |
| 6) Казанской—села Соличнаго свящ. | 90 | 54 | 144 |
| 7) Воскресенской—с Ширмакши 1-му свящ | „ | 72 | 144 |
| „ „ 2-му свящ. | „ | 72 | |
| 8) Казанской—села Шадрина свящ. | 120 | 24 | 144 |
| 9) Рождества Богород.—с. Якунькина свящ. | 108 | 36 | 144 |
| *Варнавинскаго уѣзда.* | | | |
| 10) Троицкой—села Карпова 1-му свящ. | 60 | 84 | 144 |
| „ „ 2-му свящ. | 60 | 36 | 96 |
| 11) Крестовоздвиженской—с. Тонкина свящ. | „ | 144 | 144 |
| 12) Вознесенской—села Черной 1-му свящ. | 96 | 48 | 144 |
| „ „ 2-му свящ. | „ | 96 | 96 |
| *Кинешемскаго уѣзда.* | | | |
| 13) Преображенской—села Берегова свящ. | „ | 144 | 144 |
| 14) Воскресенской—села Корбицъ свящ. | 90 | 54 | 144 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 15) Покровской—села Пеньковъ свящ. | „ | 46 | 46 |
| 16) Георгіевской—села Дебова свящ. | „ | 96 | 96 |
| *Юрьевецкаго уѣзда.* | | | |
| 17) Воскресенской—села Макатова 2-му свящ. | „ | 96 | 96 |
| Итого | 966 | 1432 | 2398 |

II. О наградахъ за заслуги по дух. вѣдомству *(изъ опредѣленія Костром. д. консисторіи, отъ 4 мая 1893 г. № 1662).*

Костромская д. консисторія слушали дѣло о награжденіи въ текущемъ 1893 г., лицъ духовнаго званія за заслуги по духовному вѣдомству ко дню священнаго коронованія Ихъ Императорскихъ Величествъ. Съ утвержденія Его Преосвященства, приказали: за усердную и полезную службу церкви Божіей и доброе поведеніе въ текущемъ 1893 г. ко дню священнаго коронованія Ихъ Императорскихъ Величествъ 15-го мая наградить *I) скуфьею* священниковъ: 1) г. Костромы Ильинской церкви Іоанна *Сперанскаго*; 2) г. Костромы Богородицкой, что въ Кузнецахъ, ц. Александра *Троицкаго*; 3) ц. с. Селифонтова Василія *Карелина*; 4) с. Романова, *Костромскаго уѣзда*, Николая *Городкова*; *Солигаличскаго уѣзда*: 5) с. Вяльцева Іоанна *Аннинскаго*; 6) с. Герасимова Василія *Яблокова*; 7) с. Холму Геннадія *Полетаева*; *Юрьевецкаго уѣзда:* 8) с. Георгіевскаго, что на р. Лухѣ, Іоанна *Иванова*; 9) пос. Пучежа Капитона *Дроздова*; *Кологривскаго уѣзда:* 10) с. Пищей Никанора *Добровольскаго*; 11) с. Ухтубужа Павла *Шелутинскаго*; *Нерехтскаго уѣзда:* 12) с. Яблонной пустыни Василія *Целебровскаго*; 13) с. Ильинскаго-Шихматовыхъ Іоанна *Калинникова*; 14) с. Бартенева Николая *Весина*; 15) с. Погрѣшина Василія *Благовѣщенскаго*; 16) с. Шехны Николая *Алякритскаго*; 17) с. Никольскаго, на Стрѣльнѣ, Александра *Виноградова*; 18) с. Писцова Алексѣя *Юбѣдимскаго*; *Ма-*

*карьевскаго уѣзда*: 19) с. Коршунскаго Іоанна *Краснопѣвцева*; 20) с. Бобушкина Петра *Махровскаго*; *Галичскаго уѣзда*: 21) с. Богчина Іоанна *Протопопова*; *Кинешемскаго уѣзда*: 22) с. Углеца Василія *Назаретскаго*; 23) пог. Введенскаго Димитрія *Рябинина*; 24) слоб. Рѣшмы Леонида *Краснопѣвцева*; 25) с. Георгіевскаго Алексѣя *Архангельскаго*; 26) с. Никольскаго на Мѣрѣ Петра *Поликарпова*; *Чухломскаго уѣзда*: 27) с. Каликина Павлина *Кудрина*; *Варнавинскаго уѣзда*: 28) с. Уреня Іоанна *Софійскаго*; 29) с. Черной Лавра *Аквилева*; 30) с. Бѣлышева Александра *Анѳисова* и 31) *Нерехтскаго уѣзда* с. Кувакина Порфирія *Соловьева*; *II)—набедренникомъ*: *Костромскаго уѣзда*: 1) села Шунги Василія *Наградова*; 2) Митрофаніевской церкви г. Костромы Александра *Птицина*; *Солигаличскаго уѣзда*: 3) с. Чудца Венедикта *Толскаго*; 4) с. Георгіевскаго на Старомъ Михаила *Звѣрева*; *Кологривскаго уѣзда*: 5) с. Верхнемежскаго Николая *Левашева*; 6) с. Верхнемежскаго Іоанна *Сперанскаго*; 7) *Нерехтскаго уѣзда* с. Денисовскаго Павла *Перовскаго*; 8) *Макарьевскаго уѣзда*, с. Скоробогатова Александра *Кастальева*; 9) *Буйскаго уѣзда* Богородицкой, что въ Шушкодомѣ, ц. Николая *Соколова*; *Кинешемскаго уѣзда*: 10) с. Корбицъ Іоанна *Яблокова*; 11) с. Батманъ Димитія *Весновскаго*; 12) с. Никольскаго на Мѣрѣ, Александра *Смирнова*; 13) *Ветлужскаго уѣзда* с. Одоевскаго Николая *Неклюдова* и 14) *Чухломскаго уѣзда* с. Бушнева Геннадія *Корнилова*; III) діакону села Никольскаго на р. Мѣрѣ Петру *Бѣлицкому*—за отлично хорошее поведеніе, благоговѣйное служеніе и исправное веденіе церковныхъ документовъ преподать благословеніе Его Преосвященства со внесеніемъ въ формулярный о службѣ его списокъ; IV) настоящее опредѣленіе консисторіи напечатать для свѣдѣнія въ Костромскихъ Епархіальныхъ Вѣдомостяхъ.

III. Объ исправности веденія обыскныхъ книгъ *(журналъ Костромской д. консисторіи апрѣля 27 д. 1893 г. № 875)*.

Слушали актъ свидѣтельства обыскныхъ книгъ церквей селъ N N, по которому оказалось: 1) по селу N. Книга выдана въ

1879 г. января 10 дня, шнуръ и печать въ ней цѣлы. Замѣчены неисправности: по 1-му п. обыска. Женихъ—запасной рядовой, или запасной унтеръ-офицеръ, почти вездѣ писанъ просто рядовымъ, безъ означенія состоянія его въ запасѣ, или, какъ напр., въ обыскахъ 1887 г. № 7, 1892 г. № 1..., временно-отпускнымъ (въ билетѣ и онъ—запасной), что не одно и тоже. А такъ какъ однихъ изъ нихъ (запасныхъ) по закону вѣнчать разрѣшается, другихъ же, состоящихъ на службѣ или во временномъ отпуску—нѣтъ, то такая неточная запись въ обыскѣ званія жениха можетъ наводить сомнѣніе на правильность повѣнчанія брака, особенно въ случаѣ затери копій съ билетовъ. По 8 п. Не было истребовано отъ жениховъ, состоящихъ въ запасѣ, билетовъ ихъ къ обыскамъ подъ №№ 7-мъ 1887 г., 4 и 5-мъ 1884 г. Женихъ иноприходный вѣнчанъ по одному паспорту, безъ вѣдѣнія отъ его духовнаго отца—1885 г. № 9 и проч. Въ подписи замѣчено много нарушеній установленнаго порядка: во многихъ обыскахъ за жениха, невѣсту и поручителей подписывалось одно лицо, чего ни въ какомъ случаѣ допускать не слѣдуетъ, а въ обыскѣ 1891 г. подъ № 11 женихъ подписался за невѣсту. По разсмотрѣніи документовъ, приложенныхъ къ книгѣ, оказались неоплаченными гербовымъ сборомъ: а) вѣдѣніе священника села N отъ 24 января 1879 г.; б) вѣдѣніе священника села N, за № 20 (1879 г.); в) выписка изъ метрикъ отъ 27 января 1882 г. за № 13; г) вѣдѣніе священника села N отъ 2-го апрѣля 1882 г, за № 11, и отъ 5 іюня 1883 г. за № 9; д) выписка изъ метрикъ села N, выданная за неимѣніемъ при церкви священника—дьячкомъ 1882 г., за № 1; е) вѣдѣніе причта села N отъ 14 мая 1883 г. за № 7 и ж) вѣдѣніе священника села N, данное въ 1890 г. 2) По селу N. Книга выдана въ 1859 г. января 21. Печать есть, а шнуръ изорванъ и первый листъ, по мѣстамъ, обклеенъ бѣлою бумагою, почему всего написаннаго на этомъ листѣ обыска прочесть нельзя. Въ обыскахъ 1892 года подъ №№ 5, 6, 7 и многихъ другихъ не показано

о женихѣ, какого онъ прихода. Въ обыскѣ того же года подъ № 8 показанъ вѣнчаннымъ временно-отпускной солдатъ, которыхъ вѣнчать не дозволено; замѣчено, что причты называютъ временно-отпускными—запасныхъ, но провѣрить этого въ отношеніи къ указанному браку нельзя: коніи съ билета въ числѣ документовъ не значится, хотя и говорится въ обыскѣ, что билетъ къ обыску былъ предъявленъ. Въ обыскѣ того же года подъ № 2 значится, что о невѣстѣ прилагается вѣдѣніе отъ ея духовнаго отца, но въ числѣ документовъ этой бумаги нѣтъ. Обыскъ 1891 г. подъ № 5 писанъ небрежно, съ поправками, которыя трудно разобрать. Упоминаемаго въ обыскѣ вѣдѣнія о невѣстѣ отъ ея духовнаго отца въ числѣ документовъ нѣтъ. Женихъ и невѣста къ обыску не подписались. Подъ обысками того же года №№ 2 и 4 также нѣтъ подписи жениха и невѣсты. Подъ обыскомъ того же года № 3—нѣтъ подписи жениха, невѣсты и поѣзжанъ по женихѣ. Въ обыскѣ 1891 г. № 1, женихъ значится временно-отпускнымъ рядовымъ, а въ вѣдѣніи священника села N—запаснымъ рядовымъ; коніи съ билета нѣтъ. Подпись жениха сдѣлана между строкъ, оговорки же нѣтъ. Въ подписи подъ обыскомъ 1890 г. окт. 22, за жениха, невѣсту и поѣзжанъ, не означено именъ ихъ; далѣе за поѣзжанъ начата новая подпись, но она не окончена; имѣется еще подпись вмѣсто поѣзжанъ „Михая“ и Іосифа, но отчествъ ихъ не означено. Кромѣ сего, женихъ Сергѣй Андреевъ въ обыскѣ писанъ холостымъ, а въ вѣдѣніи причта села N—вдовымъ и притомъ запаснымъ рядовымъ, а не временно-отпускнымъ, какъ сказано въ обыскѣ. Подъ обыскомъ 1890 г. іюня 20 подпись сдѣлана такъ небрежно, что ее трудно разобрать, и нѣтъ подписи жениха, а поѣзжане по невѣстѣ не означены поименно. И въ прочихъ обыскахъ весьма много неисправностей. Вообще книга ведена на столько неправильно и небрежно, что многимъ изъ обысковъ нельзя придавать значенія документа. Подписи благочиннаго объ освидѣтельствованіи книги имѣются, но ни о какихъ неисправностяхъ въ нихъ

не упоминается. 3) По селу N. Книга выдана 31 августа 1863 года. Шнуръ, печать и листы въ ней цѣлы. Копій съ билетовъ брачившихся нижнихъ воинскихъ чиновъ въ представленныхъ документахъ нѣтъ. Подъ обыскомъ 1888 г. № 5, женихъ подписался за своихъ поручителей. Въ подписи подъ обысками того же года №№ 1, 2, 3, 4 и другихъ не означено именъ и отчествъ жениха и невѣсты. Подъ обыскомъ 1887 г. № 1, поручитель по невѣстѣ значится одинъ. Подъ обысками 1887 г. №№ 1, 2 и 3 значится подпись одного псаломщика N. Подъ обысками 1885 г. №№ 2, 3 за жениха, невѣсту и поручителей по нимъ подписалось одно лицо, и прочія неисправности въ этомъ родѣ. Приписямъ сдѣланы оговорки. Надписи благочиннаго объ освидѣтельствованіи книгъ имѣются. 4) По селу N. Книга выдана въ 1889 г. Шнуръ и печать въ ней цѣлы. Подъ обыскомъ 1889 г. № 1, за жениха, невѣсту и поручителей по нимъ подписалось одно лицо, при чемъ имени жениха и невѣсты не означено. Такая же недостаточная подпись имѣется подъ многими другими обысками. Подъ обыскомъ того же года № 2, за всѣхъ подписался женихъ. Подъ обыскомъ 1890 г., № 1, подписался за невѣсту—женихъ. Другаго рода неисправностей въ книгѣ не замѣчено. Допущенныя поправки оговорены. Подпись благочиннаго объ освидѣтельствованіи книги имѣется. Приказали: 1) освидѣтельствованныя обыскныя книги церквей селъ NN возвратить въ сіи церкви для храненія въ ризницахъ; 2) за допущенныя въ книгахъ неисправности, соединенныя по селу N съ такою небрежностію къ дѣлу, что многимъ изъ обысковъ нельзя придавать значенія документа, наложить, согласно 193 ст. уст. дух. консисторій, слѣдующія взысканія: а) на причтъ села N, въ виду важности замѣченныхъ въ книгѣ неисправностей—штрафъ въ размѣрѣ восьми руб., подоходно, на вдовъ и сиротъ духовнаго вѣдомства, со внесеніемъ въ послужные списки; б) причту села N сдѣлать замѣчаніе на первый разъ безъ внесенія въ послужные списки, и в) причтамъ селъ NN внушить—быть болѣе ак-

куратными въ веденіи документовъ; независимо отъ сего за выдачу предбрачныхъ документовъ, неоплаченныхъ гербовымъ сборомъ, взыскать на основаніи 105 ст. уст. о герб. сборѣ: съ священника села N (вѣдѣніе отъ 5 іюня 1883 г. № 9)—60 коп. съ причта села N (вѣдѣніе отъ 14 мая 1883 г. № 7)—60 коп. и съ священника того же села N (вѣдѣніе дано въ 1890 г.)—80 коп.; прочія же замѣченныя нарушенія правилъ о гербовомъ сборѣ, за силою 10-лѣтней давности со времени совершенія ихъ (ст. III-я уст.), оставить безъ взысканія. О приведеніи сего рѣшенія въ исполненіе предписать благочинному указомъ, съ тѣмъ, чтобы онъ штрафныя деньги 8 руб. представилъ непосредственно въ попечительство, которое о наложенномъ штрафѣ увѣдомить, а наложенное на священниковъ и причтъ села N взысканіе въ размѣрѣ 2 р., въ возмѣщеніе причиненнаго казнѣ убытка—въ консисторію; 3) благочинному священнику N за небрежное освидѣтельствованіе обыскныхъ книгъ безъ указанія причтамъ о допущенныхъ неисправностяхъ, примѣнительно къ 404 ст. улож. о наказ., сдѣлать строгое замѣчаніе безъ внесенія на первый разъ въ послужной списокъ. Независимо отъ сего, въ предупрежденіе подобныхъ неисправностей въ веденіи обыскныхъ книгъ по другимъ приходамъ, настоящее опредѣленіе опубликовать въ Епархіальныхъ Вѣдомостяхъ. Опредѣленіе сіе утверждено епархіальнымъ Преосвященнымъ мая 3 дня 1893 года.

## Отъ Правленія Костромской духовной семинаріи

симъ объявляется къ свѣдѣнію духовенства Костромской епархіи, что съ 25 іюня 1892 г. по 10 мая 1893 г. Правленіемъ получены деньги на содержаніе параллельныхъ (епархіальныхъ) классовъ семинаріи отъ слѣдующихъ лицъ:

| | За какое время. | Показано. Церквей. | Показано. Причтовъ. | Руб. | Коп. |
|---|---|---|---|---|---|
| 4 іюля отъ благоч. Нерехт. 1 окр. свящ. Іоанна Груздева . | За 1892 г. | 5 | 5 | 22 | 50 |
| — бл. Нер. 2 окр. свящ. Петра Рыболовскаго . | За 189²/₃ уч. г. | 11 | 12 | 54 | „ |
| — бл. Юрьев. 6 окр. свящ. Капитона Дроздова . | Тоже. | 11 | 16 | 58 | 50 |
| 14 іюля—бл. Костр. 5 окр. свящ. Алексія Соколова . | Тоже. | 12 | 14 | 63 | „ |
| 17 іюля—бл. Кинеш. 4 окр. свящ. Леонида Краснопѣвцева | Тоже. | 14 | 15 | 67 | 50 |
| — бл. Кинеш. 2 окр. свящ. Николая Орлова . | Тоже. | 10 | 11 | 49 | 50 |
| бл. Юрьев. 2 окр. свящ. Ѳеодора Крылова . | За 1892 г. | 9 | 11 | 49 | 50 |
| — бл. Юрьев. 4 окр. свящ. Василія Вилинскаго . | За 189²/₃ уч. г. | 11 | 14 | 63 | „ |
| — бл. Юрьев. 5 окр. свящ. Василія Панова . | Тоже. | 18 | 27 | 121 | 50 |
| — бл. Солигал. 2 окр. прот. Александра Каллистова | Тоже. | 15 | 17 | 76 | 50 |
| — бл. Варнав. 2 окр. свящ. Александра Кроткова . | За 1892 г. | Не показано. | | 78 | 50 |
| — бл. Ветл. 1 округа свящ. Александра Предтеченскаго | Непоказано. | 9 | 19 | 85 | 50 |
| — наст. Нерехт. Казанскаго собора прот. Константина Виноградскаго | За 1894 г. | 1 | Не показано. | 9 | „ |
| 24 іюля—бл. Нер. 8 окр. прот. Павлина Ширскаго | За 189²/₃ уч. г. | 14 | 44 | 21 | „ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 24 іюля—бл. Буйск. 1 окр. | | | | | |
| свящ. Николая Агриколянскаго | За 189²/з уч. г. | 11 | 18 | 81 | „ |
| — бл. Макар. 3 окр. | | Не по- | | | |
| свящ. Геннадія Бѣлорукова . | Тоже. | казано. | 16 | 72 | „ |
| 27 іюля—бл. Нер. 10 окр. | | | | | |
| свящ. Андрея Драницына . | Тоже. | 17 | 17 | 76 | 50 |
| 3 августа—бл. Чухл. 2 окр. | | | | | |
| свящ. Евгенія Голубева . | Тоже. | 11 | 11 | 49 | 50 |
| 5 августа—бл. церквей г. Чу- | | Не по- | | | |
| хломы прот. Николая Соболева | За 1892 г. | казано | 5 | 22 | 50 |
| 25 августа—бл. Солигал. 1 окр. | | | | | |
| свящ. Константина Скворцова | Тоже. | 12 | 17 | 74 | 25 |
| — бл. Ветл. 3 окр. | За 189²/з | | | | |
| свящ. Іакова Флоренскаго . | уч г. | 10 | 21 | 94 | 50 |
| 29 августа—бл. Кологр. 1 окр. | | | | | |
| свящ. Александра Лебедева . | Тоже. | 11 | 18 | 81 | „ |
| 3 сентяб.—бл. Костр. 9 окр. | | | | | |
| свящ. Александра Груздева . | Тоже. | 13 | 13 | 58 | 50 |
| — бл. Буйск. 3 окр. | Не пока- | | | | |
| свящ. Николая Казанскаго . | зано. | 16 | 17 | 76 | 50 |
| 5 сентяб.—бл. Кинеш. 7 окр. | За 189²/з | | | | |
| свящ. Николая Вилинскаго . | уч. г. | 13 | 19 | 85 | 50 |
| — бл. Кологр. 3 окр. | | | | | |
| прот. Ѳеоктиста Іорданскаго . | Тоже. | 15 | 24 | 108 | „ |
| — бл. Кинеш. 3 окр. | За 189¹/₂ | | | | |
| свящ. Іоанна Абрамова . | уч. г. | 11 | 12 | 54 | „ |
| 6 сентяб.—бл. Нерехт. 5 окр. | За 189²/з | Не по- | | | |
| свящ. Платона Кроткова . | уч. г. | казано. | 16 | 72 | „ |
| 9 сентяб.—наст. Судиславск. | | | | | |
| Преображ. собора прот. Іоанна | | | Не по- | | |
| Доброхотова . . | Тоже. | 1 | казано. | 9 | „ |
| 16 сентяб.—бл. Юрьев. 1 окр. | | | | | |
| свящ. Николая Скворцова . | За 1892 г. | 5 | 5 | 22 | 50 |
| бл Буйск. 2 окр. | За 189²/з | | Не по- | | |
| свящ. Василія Сапоровскаго . | уч. г. | 12 | казано. | 72 | „ |
| 22 сентяб.—бл. Нерехт. 9 окр. | | | | | |
| прот. Александра Розанова . | Тоже. | 12 | 12 | 54 | „ |
| — бл. Нерехт. 7 окр. | | | | | |
| свящ. Василія Благовѣщенскаго | Тоже. | 18 | 21 | 92 | 25 |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 22 сентяб. — бл. с. Молвитина, свящ. Алексія Іорданскаго . | За 189²/₃ уч г. | 2 | 2 | 9 | „ |
| 23 сентяб. — бл. Юрьев. 3 окр. свящ. 3 окр. свящ. Вас. Розова | Тоже. | 16 | 20 | 90 | „ |
| 28 сентяб.—бл. Ветл. 2 окр. свящ. Іоанна Бѣлорукова . | Тоже. | 14 | 19 | 85 | 50 |
| 9 октября—бл. Костр. 4 окр. прот Капитона Толгскаго . | Тоже. | 13 | 14 | 63 | „ |
| — бл. Галич. 7 окр. свящ. Василія Сигорскаго . | Тоже. | 15 | 18 | 81 | „ |
| — бл. Варнав. 1 окр. свящ. Іоанна Владимірова . | Тоже. | 16 | 29 | 130 | 50 |
| 10 октяб.—членовъ совѣта, завѣд. епарх. общежитіемъ при семинаріи (на жалованье двумъ надзирателямъ) . . | Тоже. | „ | „ | 700 | „ |
| 13 октяб.—бл. Нерехт. 3 окр. свящ. Николая Бѣляева . | Тоже. | 12 | 14 | 63 | „ |
| 25 октяб.—бл. Макар. Христорожд. собора, прот. Іоанна Стафилевскаго . . | Тоже. | 1 | 3 | 13 | 50 |
| 27 октяб.—бл. Галич. 4 окр. свящ. Петра Покровскаго . | Тоже. | 13 | 14 | 63 | „ |
| — бл. Костром. 1 окр. прот. Павла Горскаго . | Тоже. | 16 | 19 | 81 | „ |
| 30 октяб.—бл. Юрьевец. Спасовходскаго собора, прот. Платона Михайловскаго . | Тоже. | 3 | 3 | 13 | 50 |
| — наст. Костр. каѳедр. Успенскаго собора, прот. Іоанна Поспѣлова . . | За 1893 г. | 1 | 4 | 18 | „ |
| 4 ноября—бл. Варнав. Троицкаго собора, прот. Павла Птицына . . . | За 189²/₃ уч. г. | 1 | 3 | 14 | „ |
| 6 ноября—бл. Кологр. 2 окр. прот. Іоанна Кандорскаго . | Тоже. | 18 | 27 | 121 | 50 |
| 10 ноября—бл. Нерехт. 6 окр. свящ. Николая Румянцева . | Тоже. | 16 | 20 | 90 | „ |
| 13 ноября—бл. Галич. 1 окр. прот. Григорія Снѣгирева . | Тоже. | 13 | 15 | 63 | „ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 16 ноября—бл. Костр. 2 окр. прот. Евгенія Соколова . | За 189²/₃ уч. г. | 17 | 24 | 94 | 50 |
| 28 ноября—бл. Костр. 3 окр. свящ. Іоанна Мухина . | Тоже. | 12 | 13 | 58 | 50 |
| — бл. Макар. 5 окр. свящ. Димитрія Ювенскаго . | Тоже. | 15 | 18 | 81 | „ |
| 9 декаб.—бл. Кинеш. 6 окр. свящ. Василія Миловидова . | За 1892 г. | 7 | 7 | 31 | 50 |
| 11 декаб.—бл. Костр. 6 окр. свящ. Ардаліона Игнатовскаго | За 189²/₃ уч. г. | 14 | 14 | 63 | „ |
| 16 декаб.—бл. Галич. 5 окр. свящ. Никтополіона Комаровскаго | Тоже. | 14 | 14 | 63 | „ |
| 27 декаб.—бл. Кинеш. 1 окр. прот. Александра Горицкаго . | Тоже. | 11 | 14 | 63 | „ |
| — бл. Кинеш. 2 окр. свящ. Іоанна Говоркова . | Тоже. | 8 | 9 | 40 | 50 |
| — бл. Макар. 1 окр. свящ. Александра Горицкаго | Тоже. | 11 | 16 | 72 | „ |
| — бл. Макар 4 окр. свящ. Іоанна Горскаго . | За 2-ю пол. 189²/₃ уч. г. | 17 | 30 | 65 | 25 |
| 28 декаб.—бл. Костром. 7 окр. свящ. Николая Павлинскаго . | За 189²/₃ уч. г. | 14 | 17 | 76 | 55 |
| 18 января 1893 г. бл. Макар. 2 окр. свящ. Владиміра Дружинина . . . | Тоже. | 14 | 18 | 81 | „ |
| 21 января—бл. Чухлом. 4 окр. свящ. Михаила Ювенскаго . | Тоже. | 13 | 18 | 81 | „ |
| 22 января—бл. Нерехт. 8 окр. прот. Павлина Ширскаго . | Тоже. | 14 | 14 | 42 | „ |
| 25 января—бл. Кинеш. 8 окр. свящ. Николая Анонимова . | Тоже. | 10 | 13 | 58 | 50 |
| 27 января—бл. Нерехт. 4 окр. свящ. Ѳеодора Островскаго . | Тоже. | 16 | 16 | 72 | „ |
| 28 января—бл. Нерехт. 11 окр. свящ. Александра Орлова . | Тоже. | 13 | „ | 58 | „ |
| 3 марта—бл. Галич. 2 окр. свящ. Сергія Рязановскаго . | Тоже. | 18 | 18 | 81 | „ |
| | | | | 4956 | 80 |

## Отъ министерства финансовъ.

На основаніи Высочайше утвержденнаго 13 ноября 1892 года Положенія Комитета Министровъ, окончательнымъ срокомъ для обмѣна государственныхъ кредитныхъ билетовъ прежнихъ образцовъ 50 р., 25 р., 10 р., 5 р., 3 р. и 1 р. достоинствъ, выпущенныхъ на основаніи Высочайшаго указа 13-го февраля 1868 года, а равно и 25 руб. билетовъ, выпущенныхъ на основаніи Высочайшаго Указа 20 октября 1880 года, назначено 1-е мая 1894 г.

По истеченіи этого срока, кредитные билеты прежнихъ образцовъ не будутъ принимаемы въ казенные платежи и не обязательны къ обращенію между частными лицами.

Признаки кредитныхъ билетовъ, обмѣнъ и обращеніе коихъ прекращается 1 мая 1894 года:

1) Выпущенныхъ по указу 13 февраля 1868 года:

50 р. дост. съ портр. Императора Петра I-го.
25 „ „ Царя Алексѣя Михаиловича.
10 „ „ Царя Михаила Ѳедоровича
5 „ „ Великаго Князя Димитрія Донскаго
3 „ „ | годъ выпуска помѣщенъ по сре-
1 „ „ | динѣ оборотной стороны битетовъ.

2) Выпущенныхъ по указу 20 октября 1880 года:

25 рублеваго достоинства—бѣлаго цвѣта безъ всякихъ украшеній и печати на оборотной сторонѣ.

---

## Отчетъ о дѣйствіяхъ Попечительнаго совѣта о бѣдныхъ г. Кинешмы, за 28-й годъ существованія онаго, съ 14 марта 1892 г. по 14 марта 1893 г.

Обращая вниманіе на нравственныя нужды бѣднѣйшаго населенія города изъ низшаго сословія и имѣя въ виду, что въ средѣ этой малолѣтнія дѣти остаются внѣ всякихъ заботъ о воспитаніи, а дѣти школьнаго возраста большею частію пріучаются

къ нищенству, Попечительный совѣтъ нашелъ болѣе цѣлесообразнымъ и соотвѣтствующимъ назначенію своего учрежденія устройство для дѣтей школы, и открывъ таковую при соборѣ въ октябрѣ мѣсяцѣ 1891 г., въ настоящемъ отчетномъ году свои заботы сосредоточивалъ главнымъ образомъ на упорядоченіи школы. Въ этихъ видахъ, заботясь о болѣе успѣшномъ веденіи учебнаго дѣла, нашелъ необходимымъ вмѣсто одного учителя, совмѣщавшаго обязанности и законоучителя, имѣть при школѣ особаго законоучителя, каковымъ теперь состоитъ священникъ Димитрій Левиковъ. Затѣмъ, стараясь снабдить школу всѣми классными и учебными принадлежностями, совѣтъ заботился пріобрѣтать, независимо отъ необходимыхъ учебниковъ, соотвѣтственныя пониманію и нравственному развитію обучающихся разныя брошюры и книжки для учительской библіотеки съ тѣмъ, чтобы оными желающіе могли пользоваться и внѣ школы. Такихъ брошюръ и книгъ въ теченіе двухъ лѣтъ минувшаго и настоящаго года— пріобрѣтено для школьной библіотеки: книгъ 239 экземпляровъ 15-ти названій и 40 брошюръ 14-ти названій. Неограничиваясь этимъ, совѣтъ въ отчетномъ году положилъ основаніе библіотеки при соборѣ изъ книгъ религіозно-нравственнаго содержанія, могущихъ быть пособіемъ и для священниковъ при собесѣдованіяхъ съ народомъ, и разныхъ брошюръ для народнаго чтенія. Изъ первыхъ пріобрѣтено 325 экземпляровъ 19-ти названій; послѣднихъ 212 брошюръ 18-ти названій. Кромѣ того, совѣтомъ роздано народу Троицкихъ листковъ и другихъ брошюръ въ теченіе отчетнаго года болѣе тысячи. Озабочиваясь пособіемъ религіозно-нравственнымъ нуждамъ, совѣтъ не относился безучастно и къ матеріальнымъ нуждамъ бѣдныхъ. Такъ, въ виду того, что въ школѣ, совѣтомъ открытой и содержимой, обучаются дѣти по преимуществу бѣдныхъ родителей, въ теченіе отчетнаго года роздалъ обучающимся дѣтямъ, мальчикамъ для рубашекъ, а дѣвочкамъ для платьевъ, около двухъ сотъ пятидесяти аршинъ ситцу, и до сорока головныхъ платковъ для дѣвочекъ, каковые предметы по-

жертвованы разными благотворителями. Особенно же нуждающимся изъ учащихся въ школѣ, чрезъ ихъ родителей, выдалъ деньгами двадцать шесть рублей. Кромѣ того, совѣтъ въ теченіе отчетнаго года дѣлалъ ежемѣсячное пособіе тремъ бѣднѣйшимъ семействамъ и давалъ временныя пособія при разныхъ несчастныхъ случаяхъ, каковы: болѣзни и нужды при погребеніи бѣдныхъ. На эти пособія совѣтъ въ теченіе года употребилъ пятьдесятъ четыре рубля (54 р.).

При этомъ совѣтъ, имѣя въ виду неудовлетворительное по тѣснотѣ помѣщеніе для школы, вслѣдствіе чего при началѣ учебнаго года около 30 человѣкъ, желающихъ помѣстить дѣтей въ школу, остались безъ удовлетворенія,—изыскивалъ средства и заготовлялъ матеріалъ для устройства при соборѣ нарочитаго для школы зданія, и въ настоящее время на благотворительныя средства заготовилъ 60 тысячъ кирпичу и лѣсъ, потребный для внутренней отдѣлки школьнаго зданія.

Къ началу учебн. 1892—1893 г. оставалось въ школѣ:

| | |
|---|---|
| мальчиковъ . . | 15 |
| дѣвочекъ . . | 7 |

Предъ началомъ учебнаго 1892—1893 г. поступило:

| | |
|---|---|
| мальчиковъ . . | 14 |
| дѣвочекъ . . | 6 |

Въ теченіе учебнаго 1892—1893 г. выбыло:

| | |
|---|---|
| мальчиковъ . . | 3 (одинъ умеръ) |
| дѣвочекъ . . | 1 |

Состоитъ въ школѣ на лицо:

| | |
|---|---|
| мальчиковъ . . | 26 |
| дѣвочекъ . . | 12 |

Законоучителемъ состоитъ священникъ Срѣтенской кладбищенской церкви г. Кинешмы, Дмитрій Левиковъ, съ годичнымъ окладомъ въ 100 руб. Учителемъ состоитъ студентъ семинаріи Иванъ Альтовскій, съ окладомъ въ триста руб. Учителемъ пѣнія состоитъ бывшій ученикъ семинаріи IV кл. Алексѣй Крутиковъ, съ окладомъ въ 60 руб.

**Отчетъ о приходѣ, расходѣ и остаткѣ суммъ, бывшихъ въ распоряженіи Попечительнаго совѣта о бѣдныхъ города Кинешмы, за 28-й годъ существованія онаго, съ 14 марта 1892 года по 14 марта 1893 года.**

## ПРИХОДЪ.

| | |
|---|---|
| Отъ прошедшаго 1891—1892 г. оставалось: | |
| 1. Билетами кредитныхъ учрежденій . | 12000 р. |
| 2. По книжкѣ сберегательной кассы . | 102 р. |
| 3. Наличными деньгами . . | 166 р. 50 к. |
| Къ тому въ 1892—1893 г. поступило: | |
| 1. % на капиталъ 11900 р. за годъ . | 560 р. 49 к. |
| 2. % на капиталъ 100 р. за 5 лѣтъ съ 20 ноября 1887 г. по 20 ноября 1892 г. . | 30 р. 44 к. |
| 3. Начислено % по книжкѣ сберегательной кассы за 1892 годъ . . . | 6 р. 47 к. |
| 4. Возвращено 5-ти % налога за 1892 г. | 26 р. 32 к. |
| 5. Высыпано изъ кружки Богородицкой ц. при домѣ призрѣнія бѣдныхъ . . | — 65 к. |
| 6. Пожертвовано: о. протоіереемъ Александромъ Горицкимъ 10 р, Ник. Ив. Коковинымъ 10 р., Ал. Ал. Коковиною съ семействомъ 12 р., священниками: Левиковымъ 5 руб., Кліентовымъ 5 руб., Розинымъ 2 руб., Реформатскимъ 1 р., Альбовымъ 3 р, Флеровымъ 1 р., Надеждинымъ 1 р., Успенскимъ 1 р., Богоявленскимъ 3 руб., Николаевскимъ 1 р., а всего . . | 55 р. |
| 7. Пожертвовано разными лицами . | 35 р. 47 к. |
| Итого . . | 714 р. 84 к. |
| А всего съ остаточными . | 881 р. 34 к. |

## РАСХОДЪ.

| | |
|---|---|
| 1. На жалованье: законоучителю за 5 мѣсяцевъ . . . . | 41 р. 65 к. |
| 2. Учителю за 13 мѣсяцевъ . . | 325 р. |
| 3. Учителю пѣнія за 6 мѣсяцевъ . | 30 р. |
| 4. За картины священной исторіи . | 6 р. |
| 5. Выписано книгъ . . . | 37 р. 47 к. |
| 6. Употреблено на классныя принадлежности | 23 р. 35 к. |
| 7. За переплетъ разныхъ книгъ . | 15 р. 15 к. |
| 8 Употреблено на отопленіе классной комнаты, примывку въ оной половъ . . | 25 р. |
| 9. Уплачено за составленіе плана на предполагаемое зданіе для церковно-приходской школы | 15 р. |
| 10. Выдано пособія: Бобковой 14 р., Пановой 14 р., Турунтаевой 8 р., Синицыной 6 р., Бѣлкину 4 р., Дымовой 6 р., на похороны 2 р., бѣднымъ ученикамъ и ученицамъ школы предъ праздникомъ Пасхи 26 р., а всего . | 80 р. |
| Итого въ теченіе 1892—1893 г. израсходовано . . | 598 р. 62 к. |

Затѣмъ въ остаткѣ къ 14 марта 1893 г.

| | | |
|---|---|---|
| 1. Билетами кредитныхъ учрежденій . | 12000 р. | |
| 2. По книжкѣ сберегательной кассы . | | 211 р. 78 к. |
| 3. Наличными деньгами . . | | 172 р. 94 к. |
| Всего же: билетами кредитныхъ учрежденій и наличными деньгами двѣнадцать тысячъ триста восемьдесятъ четыре рубля семьдесятъ двѣ копѣйки . . . . | | 12384 р. 72 к. |

Предсѣдатель совѣта протоіерей *Александръ Горицкій.*

На семъ отчетѣ резолюція Его Преосвященства: „1893 г. мая 4. Дѣйствія попечительства, судя по отчету, заслуживаютъ одобренія“.

## Уставъ общества трезвости, открытаго при Троицкой церкви села Чмутова, Галичскаго уѣзда 7-го января 1891 г.

Общество трезвости при Троицкой церкви села Чмутова открыто съ тою цѣлію, чтобы желающіе бросить водку, избавиться отъ пьянства и вести жизнь вполнѣ трезвую могли чрезъ вступленіе въ это общество—подъ кровомъ святой церкви, съ помощію благодати Божіей, при братской поддержкѣ другъ друга, подкрѣпляемые обѣтомъ воздержанія, произносимымъ въ церкви съ цѣлованіемъ св. иконы Іоанна Крестителя и братскими молитвами—твердо держаться трезвости, могли смѣло бороться съ искушеніями и противостоять соблазнамъ, и такимъ образомъ искоренять въ себѣ страсть къ водкѣ. Трезвенники, кромѣ того, берутъ на себя обязательство стараться общими силами ослабить пьянство и праздничные разгулы въ приходѣ и распространить трезвость въ народѣ.

*Правила общества трезвости.*

1. Членъ общества трезвости не долженъ пить никакихъ спиртныхъ напитковъ: водки, винъ и заводскаго пива, развѣ при болѣзни, по совѣту врача, и съ благословенія своего духовнаго отца.

2. Для укрѣпленія себя въ трезвости вступающій въ общество даетъ слѣдующее обѣщаніе: „Я, рабъ Божій (имя рекъ), призывая въ немощи своей помощь Божію и всѣхъ Его святыхъ, обѣщаюсь въ теченіе такого-то времени не пить никакихъ спиртныхъ напитковъ, и на томъ цѣлую святую икону Іоанна Крестителя". Священникъ старшій членъ общества служитъ молебенъ Покровителю общества трезвости святому Предтечѣ Господню, и вновь вступившему члену даетъ образокъ Іоанна Крестителя на память объ обѣтѣ трезвости.

3. Имена всѣхъ трезвенниковъ записываются въ особую тетрадь и поминаются священникомъ о здравіи: а) на проскомидіи каждой литургіи; б) при служеніи молебновъ для вновь всту-

нающихъ въ общество и в) на общихъ молебнахъ въ дни празднованія въ честь святаго Предтечи. Послѣ смерти трезвенника онъ поминается за упокой на каждой литургіи до истеченія срока обѣта на трезвость, и въ теченіе сорокоуста въ одинъ изъ праздничныхъ дней по усопшемъ при собраніи трезвенниковъ служится панихида.

4. Обѣтъ воздержанія отъ спиртныхъ напитковъ дается на время, какое пожелаетъ вступающій.

5. Въ своемъ домѣ трезвенникъ можетъ держать вино, можетъ угощать другихъ. но безъ принужденія, и въ своемъ домѣ не долженъ допускать безобразныхъ попоекъ, но всего бы лучше и желательнѣе, чтобы трезвенникъ совсѣмъ не имѣлъ въ домѣ водки.

6. Трезвенникъ долженъ заботиться о привлеченіи въ общество другихъ лицъ увѣщаніемъ, или чтеніемъ о вредѣ пьянства и водки.

7. Трезвенникъ долженъ привлекать также и молодыхъ людей, чтобы заблаговременно предостеречь ихъ отъ увлеченія водкой, чтобы они съ молодости привыкли къ трезвой жизни.

8. Въ общество вступаютъ лица обоего пола, какъ своего прихода, такъ желающіе и чужеприходные.

9. Если кто либо, при вступленіи въ общество, пожертвуетъ что нибудь, то всякая жертва записывается въ тетрадь, и на эти деньги покупаются образки для раздачи трезвенникамъ книжки о вредѣ водки и пьянства тоже для раздачи, и книги религіозно-нравственнаго содержанія для чтенія, если будетъ возможность, то желательно на остаточныя деньги открыть при церкви складъ для продажи книжекъ религіозно-нравственнаго содержанія.

10. Въ случаѣ несчастія съ кѣмъ либо изъ трезвенниковъ, напримѣръ, болѣзни его, или потери лошади и чего либо подобнаго, трезвенники, во главѣ со священникомъ, безвозмездно помогаютъ ему своимъ трудомъ, для этого послѣ общаго совѣта и

согласія назначается какое либо время, въ которое желающіе и собираются на святое дѣло помощи брату, находящемуся въ несчастіи. Эту помощь можно оказывать и въ праздничные дни послѣ службы и обѣда.

11. Да утвердитъ Господь каждаго изъ членовъ въ трезвости, и да поможетъ бороться съ искушеніями! Но если кто неустоитъ и нарушитъ обѣтъ трезвости, тотъ долженъ скорѣе принести покаяніе предъ отцемъ духовнымъ для успокоенія совѣсти и снятія съ себя грѣха; при чемъ онъ подвергается эпитиміи по усмотрѣнію духовника, и если достоинъ будетъ, то сподобляется и святаго причастія, и опять повторяетъ свой обѣтъ. Но, милостивъ Господь, при Его помощи легко бороться съ искушеніями, только бы трезвый братъ никогда не забывалъ своего обѣта и цѣлованія святой иконы!

---

**Содержаніе оффиціальной части.** Распоряженія епархіальнаго начальства: 1) объ обращеніи остатковъ, свободныхъ по случаю закрытія въ 1892 г. нѣкоторыхъ священно-церковнослужительскихъ вакансій въ Костр. епарх. на жалованье священникамъ бѣднѣйшихъ, зараженныхъ расколомъ, приходовъ; 2) о наградахъ за заслуги по духовному вѣдомству; 3) объ исправности веденія обыскныхъ книгъ. Отъ правленія Костр. дух. семинаріи. Отъ Министерства Финансовъ. Отчетъ о бѣдствіяхъ попечительнаго совѣта, о бѣдныхъ г. Кинешмы за 28-й годъ существованія онаго. Уставъ общества трезвости, открытаго при Троицкой ц. с. Чмутова, Галич. у. Годичный благочинническій отчетъ благочин. 1-го Макарьевскаго окр. свящ. А. Горицкаго; (стр. 41—48).

*Редакторы: Семинаріи Ректоръ Архимандритъ Менандръ.*

*Преподаватель Семинаріи В. Строевъ.*

Дозв. цензурою. 10 Мая 1893 г. Кострома. Въ Губернской Типографіи

обучившихся или обучающихся въ школахъ, внушая между прочимъ, что эти книжки могутъ быть лучшимъ для дѣтей подаркомъ во дни ихъ именинъ или къ великимъ праздникамъ. Сами дѣти, какъ я лично съ удовольствіемъ наблюдалъ, въ праздники покупаютъ себѣ книжки на тѣ „копѣйки“, какія даютъ имъ родители въ ихъ распоряженіе. Посему нынѣ въ рѣдкомъ крестьянскомъ домѣ, съ грамотными дѣтьми, не найдется нѣсколькихъ маленькихъ книжекъ или брошюръ, которыя не теряютъ своего интереса, хотя бы и часто прочитывались. Кромѣ приходскихъ церквей, такія книжки покупаются при Макарьевскомъ монастырѣ, въ книжномъ складѣ уѣзд. отдѣленія епарх. учил. совѣта, откуда пріобрѣтаются книги и для церковныхъ складовъ.

д) Церковныя библіотеки, очень скудныя вообще, а особенно книгами религіознонравственнаго содержанія, доступными для простаго народа, въ настоящемъ году пополняются на средства церквей, съ затратою отъ 5 до 25 руб. въ годъ, какъ разрѣшено епархіальнымъ начальствомъ 23 ноября 1891 г. за № 12064, по особому ходатайству благочиннаго. Изъ книгъ для народнаго чтенія составляется особый отдѣлъ церковныхъ библіотекъ, который поручается и особому смотрѣнію одного изъ священниковъ, или діакону. Такимъ книгамъ ведется особый каталогъ и выдача ихъ прихожанамъ для чтенія, какъ и обратное полученіе аккуратно записываются въ особой тетради. Доселѣ пріобрѣтены книги по преимуществу историческаго и повѣствовательнаго содержанія, но исключительно нравственно-учительныя, сравнительно дешевыя и въ нѣсколькихъ экземплярахъ. Ревностные священники, принимая возвращаемыя въ библіотеку книги, спрашиваютъ о содержаніи прочитанныхъ книгъ, а выдавая новыя книги, даютъ наставленія,—какъ слѣдуетъ читать ихъ съ пользою не только для себя, но и для домашнихъ. Нѣкоторые священники округа *(указаніе)*, въ поощреніе усердно и толково читающихъ, дарятъ имъ книги, купленныя на собственныя средства.

Любовь къ чтенію въ народѣ замѣтно возрастаетъ, такъ какъ и

число людей грамотныхъ съ каждымъ годомъ увеличивается. Теперь приходскимъ священникамъ особенно необходимо позаботиться какъ объ удовлетвореніи народной потребности въ чтеніи, такъ и о выборѣ книгъ для чтенія; а въ этомъ случаѣ книжные склады при церквахъ и особая народная библіотека при нихъ, для безплатнаго народнаго чтенія, несомнѣнно, принесутъ великую пользу. Въ этой надеждѣ, благочинный и настаиваетъ, чтобы при всѣхъ церквахъ округа были учреждены книжные склады, а церковныя библіотеки поскорѣе пополнялись подходящими для народа духовнонравственными книгами.

Съ прошлаго 1891 г. священники округа заботятся и объ открытіи въ своихъ приходахъ ц.-пр. школъ и школъ грамоты, располагая и убѣждая прихожанъ къ посильнымъ жертвамъ на содержаніе ихъ и безмездно исполняя въ нихъ обязанности преподавателей. Такъ, въ октябрѣ мѣсяцѣ прошлаго 1891 г., стараніями священника *(указаніе)* открыта въ селѣ *(указаніе)* ц.-пр. школа на 50 человѣкъ и въ приходѣ 3 школы грамоты съ 85 учащимися. Въ первой безплатно обучаютъ приходскіе три священника и діаконъ, а въ послѣднихъ, за малое вознагражденіе, подысканные и даже подготовленные священникомъ мальчики изъ учениковъ одной земской школы. Всѣ школы Устьнейскаго прихода, благодаря дѣятельному участію почтеннаго земскаго начальника 1-го участка Александра Павловича Купреянова, относительно содержанія достаточно и прочно обезпечены суммою въ 300 р., каковую прихожане церкви с. Устьнейскаго, по убѣжденію г. Купреянова, приговоромъ обязались ежегодно доставлять въ распоряженіе завѣдующаго школами старшаго приходскаго священника. Въ январѣ мѣсяцѣ настоящаго 1892 года открыта ц.-пр. школа при церкви с. Красногорскаго стараніями свящ. Розанова, при участіи мѣстнаго благочиннаго, который два раза нарочно во дни праздничные былъ въ церкви сего села, чтобы убѣдить прихожанъ дать посильныя средства на содержаніе школы. Свящ. Розановъ безплатно уступилъ свой домъ для школы,

а труды преподаванія приняли на себя безвозмездно мѣстные два священника, діаконъ и псаломщикъ. Нынѣ и стараніями приходскихъ же священниковъ открыты школы грамоты въ приходахъ селъ: Макарова, Булина, Покровскаго и Вознесенскаго. Заслуживаютъ по школьному дѣлу особаго вниманія слѣдующія обстоятельства: въ маѣ сего года помѣщеніе ц.-пр. школы въ с. Устьнейскомъ сгорѣло; во всемъ селѣ остались цѣлыми отъ пожара только три дома. Свящ. Сергій Воскресенскій, съ крайнимъ стѣсненіемъ для себя и своего семейства, остался на зиму только въ двухъ маленькихъ комнатахъ, а остальное помѣщеніе въ домѣ уступилъ подъ школу. Въ с. Булинѣ открылъ школу грамоты въ своемъ же помѣщеніи свящ. Василій Красногорскій, и самъ, маститый старецъ 69 лѣтъ, занимается обученіемъ дѣтей, безъ всякаго вознагражденія за трудъ. Какъ въ ц.-пр. школахъ, такъ и въ школахъ грамоты приходскіе священники тщательно слѣдятъ, чтобы дѣти не только обучались грамотѣ, но и воспитывались нравственно въ церковно-христіанскомъ направленіи. Для сего, если не сами священники состоятъ преподавателями въ школахъ, они не рѣдко посѣщаютъ ихъ и, бесѣдуя съ учениками и учителями, тѣхъ и другихъ располагаютъ къ аккуратному посѣщенію церкви во дни воскресные и праздничные, подготовляютъ ихъ къ пѣнію и чтенію въ церкви и вообще наставляютъ ихъ въ правилахъ христіанской жизни. Къ сожалѣнію, этого нельзя сказать о всѣхъ священникахъ округа.

Усиленная и разумная просвѣтительная дѣятельность лучшей части приходскихъ священниковъ округа въ общемъ мало-по-малу развиваетъ нашъ темный простой народъ и въ частности просвѣтляетъ религіозное народное сознаніе, оживляетъ церковную жизнь народа и улучшаетъ его нравы. Причты округа свидѣтельствуютъ, между прочимъ, слѣдующее: „воспріемники при крещеніи въ нынѣшнемъ году большею частью знали Символъ вѣры, иные очень твердо, другіе не совсѣмъ правильно, а въ прежнее время и плохо-то знали рѣдкіе“. „Предразсудки и суевѣрія ослабѣваютъ; до-

вѣріе и уваженіе къ духовенству крѣпнутъ съ каждымъ годомъ; кабаки въ приходскихъ селеніяхъ закрываются и пьянство уменьшается; любовь прихожанъ къ храму Божію возрастаетъ и крѣпнетъ и число бывающихъ у исповѣди и св. причастія постепенно и значительно увеличивается" и проч.

3. Всѣ священники округа, кромѣ престарѣлаго священника села *(указаніе)*, сами составляютъ по нѣсколько проповѣдей въ годъ, отъ 3-хъ до 10-ти, и представляютъ на цензуру мѣстному благочинному. О числѣ представленныхъ на цензуру проповѣдей дѣлаются отмѣтки въ клировыхъ вѣдомостяхъ, съ обозначеніемъ общаго количества сказанныхъ поученій и бесѣдъ.

4. Окончившій нынѣ курсъ ученія въ Костром. дух. семинаріи и не поступившій еще на мѣсто Павелъ Преображенскій говорилъ нѣсколько проповѣдей.

5. Открытаго немиролюбія въ церковныхъ причтахъ, крупныхъ ссоръ и продолжительной вражды между членами причтовъ въ настоящемъ году не было усмотрѣно. Случайныя недоразумѣнія и несогласія въ причтахъ, особенно между діаконами и псаломщиками, бываютъ; но онѣ разрѣшаются и кончаются по большей части мѣстными священниками, и только въ рѣдкихъ случаяхъ благочиннымъ. Священники, гдѣ ихъ два или три, доселѣ живутъ между собою въ мирѣ и добромъ согласіи, единодушно совершая служеніе церкви Божіей. Въ отношеніи общаго поведенія всѣ священники округа достаточно соотвѣтствуютъ своему званію и жизнію своею не подаютъ повода къ какимъ либо нареканіямъ со стороны прихожанъ. Отличительная черта священниковъ округа—трезвость.

Нѣкоторые діаконы иногда позволяютъ себѣ нескромное обращеніе и непокорность въ отношеніи священниковъ, и надменность съ псаломщиками, особенно: села *(указаніе)* и церкви *(указаніе)*, которые къ тому же и не всегда трезвы.

Псаломщики церквей округа вообще по службѣ исправны и ведутъ себя очень хорошо. Только не всегда трезвы два псалом-

щика *(указаніе)*, изъ которыхъ одинъ состоитъ подъ судомъ и слѣдствіемъ за петрезвость и неприличное поведеніе въ церкви, во время совершенія брака 5 октября сего года; другой подверженъ временнымъ и непродолжительнымъ запоямъ; но очень скроменъ и по службѣ, кромѣ случаевъ запоя, вполнѣ исправенъ.

6. Духовенство округа на свое содержаніе имѣетъ постоянныя средства: а) оклады жалованья отъ казны, въ размѣрахъ отъ 96 до 250 р. на причтъ, кромѣ причтовъ церквей ружной Макарьевской быв. г. Унжи и Ильинской кладбищенской, каковые обезпечены значительными денежными взносами; б) земельные надѣлы отъ 36 до 340 десятинъ при церкви; в) денежные доходы за требоисправленія и отъ церковныхъ службъ, въ видѣ проскомидныхъ и другихъ приношеній; г) проценты съ капиталовъ, въ разное время и разными лицами внесенныхъ на вѣчное время за поминовеніе усопшихъ и д) сборы въ приходахъ зерновымъ и печенымъ хлѣбомъ, масломъ, яицами, овечьей шерстью, льномъ и даже овсяною крупою и солодомъ.

Наименьшая сумма всѣхъ средствъ содержанія приходскихъ причтовъ, не исключая и выгодъ отъ земли, равняется 280 руб. въ годъ, при двухчленномъ составѣ причта, или: священнику 210 руб. и псаломщику 70 р. въ годъ; а наибольшая сумма восходитъ до 2500 р., въ с. Устьнейскомъ, при семичленномъ составѣ причта, или: по 180 р. каждому псаломщику и по 540 руб. каждому священнику. Лучшими по средствамъ содержанія причтовъ слѣдуетъ по справедливости почитать приходы: соборной Воскресенской ц. г. Унжи и селъ Устьнейскаго и Покровскаго. Достаточны также и средства причта церкви Ильинской кладбищенской. Въ общемъ же, въ способахъ содержанія духовенство округа затрудняется и по большей части бѣдно. Достовѣрно извѣстно, что изъ 16 священниковъ округа только четыре безбѣдно содержали и содержатъ дѣтей въ учебныхъ заведеніяхъ и имѣютъ запасныя денежныя средства; діаконы и псаломщики, имѣющіе семейства, положительно только существуютъ, удовле-

творяя кое-какъ только насущныя потребности и ничего не имѣя на черный день. Самое хозяйство сельское у нихъ въ безпорядкѣ и въ упадкѣ: домы собственные тѣсные, скота имѣютъ очень мало, а у нѣкоторыхъ нѣтъ даже и коровы, какъ у бобыля крестьянина; одежда плохая, у многихъ діаконовъ нѣтъ даже теплыхъ рясъ и вся домашняя обстановка очень неприглядна. Обѣдненіе духовенства по справедливости слѣдуетъ объяснить прежде всего обѣдненіемъ мѣстнаго населенія, которое, въ свою очередь, произошло вслѣдствіе многихъ причинъ, каковы: семейные раздѣлы, плохіе урожаи хлѣбовъ и травъ, упадокъ энергіи по производству сельскихъ работъ, роскошь въ одеждѣ, частію пьянство и проч. Будучи сами бѣдны, крестьяне слишкомъ неохотно увеличиваютъ денежное вознагражденіе своимъ приходскимъ причтамъ за тѣ или другія приходскія требы и по большей части держатся въ этомъ случаѣ тѣхъ же порядковъ, какіе были лѣтъ 20—25 назадъ, когда всѣ предметы постояннаго потребленія были много дешевле, и самый образъ жизни сельскаго духовенства, какъ и другихъ сословій, былъ проще. Съ другой стороны причина обѣдненія духовенства кроется и въ самомъ духовенствѣ, въ его нерадѣніи и лѣности въ дѣлахъ собственнаго хозяйства Одни въ погонѣ за удобствами жизни, а другіе изъ ложнаго стыда нынѣ совсѣмъ отстаютъ отъ личныхъ трудовъ въ полевыхъ и другихъ работахъ по сельскому хозяйству, хотя бы и имѣли для этого свободное время и достаточныя силы. Даже у псаломщиковъ дѣлается почти все или по найму, или помочами, соединенными съ денежными расходами: обработка полей, уборка сѣна, заготовленіе дровъ и проч. Другіе отдаютъ свои участки церковной земли въ аренду за деньги или изъ половины урожая и такимъ образомъ окончательно испортили не вполнѣ плодородную землю.

На мой взглядъ, не только не благоразумно, но и предосудительно поступаютъ діаконы и псаломщики, что сами лично не занимаются сельскимъ хозяйствомъ и семейныхъ своихъ къ тому

не пріучаютъ. Совершенно не лишне бы было и священникамъ обратить на это обстоятельство надлежащее вниманіе. Въ селѣ *(указаніе)* священникъ *(указаніе)*, имѣя уже 67 л. отъ роду, доселѣ еще самъ пашетъ, коситъ и молотитъ и живетъ достаточно, безъ всякаго въ тоже время ущерба въ отношеніи служебныхъ обязанностей, тогда какъ псаломщики въ томъ же селѣ, и одинъ даже малосемейный, бѣдствуютъ.

Еще бѣдственнѣе положеніе священноцерковнослужителей заштатныхъ, ихъ вдовъ и сиротъ. Всѣ они, если не получаютъ пенсіи, живутъ по преимуществу скудными средствами, получаемыми въ приходахъ въ видѣ зерноваго хлѣба и другихъ сельскихъ продуктовъ, при малыхъ денежныхъ пособіяхъ отъ епархіальнаго попечительства и отъ дѣтей или другихъ родственниковъ, если между ними есть люди достаточные и истинно родственные. Бываютъ случаи, когда сироты духовнаго вѣдомства собираютъ милостыню наряду съ прочими.

Изъ заштатныхъ священнослужителей и ихъ вдовъ получаютъ пенсіи: 1 діаконъ, 1 вдова священника и 1 вдова діакона.

Имѣющихъ право на пенсію и оной не получающихъ въ округѣ нѣтъ; изъ получавшихъ пенсію въ настоящемъ году никто не померъ.

7. Изъ 16 священниковъ округа 15 окончили курсъ семинаріи и 1 изъ V кл. семинаріи. Діаконовъ въ округѣ всего 11; изъ нихъ вышедшихъ изъ низшихъ классовъ семинаріи 4 и изъ училищъ 7. Псаломщиковъ въ округѣ 14,—всѣ изъ училищъ.

Діаконовъ на вакансіи псаломщиковъ 3.

Сверхштатныхъ 1 псаломщикъ.

Жалованье отъ казны получаютъ: священниковъ 10, діаконовъ штатныхъ и штатное діаконское жалованье 3, штатное жалованье псаломщиковъ 4 діакона и 11 псаломщиковъ.

Всего на содержаніе духовенства въ округѣ отпускается жалованья отъ казны 1781 р. 64 к.

Въ округѣ заштатныхъ: священниковъ нѣтъ, діаконъ 1, псаломщиковъ 2. Вновь въ 1892 г. опредѣленъ 1 священникъ.

8. Отъ прихожанъ на священноцерковнослужителей никакихъ жалобъ, заслуживающихъ вниманія, не было.

9. Священники округа имѣютъ награды: камплавку 2, скуфью 6 и набедренникъ 3.

Особенно отличаются въ округѣ священники: ревностнымъ, разумнымъ и успѣшнымъ назиданіемъ прихожанъ, съ заботливостію о христіанскомъ просвѣщеніи приходскихъ дѣтей селъ *(указаніе)*; кротостію, нестяжательностію и особою участливостью въ духовныхъ нуждахъ прихожанъ священникъ села *(указаніе)*; точностію и благоговѣніемъ въ совершеніи богослуженія и приходскихъ требъ и трудолюбіемъ священникъ села *(указаніе)*.

Раскольниковъ въ округѣ нѣтъ; случаевъ обращенія въ православіе изъ иновѣрія не было.

## О пастве.

1. При церквахъ округа всѣхъ прихожанъ 22219; въ томъ числѣ муж. пола 10507 и жен. 11712. Всѣ прихожане издревле православные.

2. Духовное состояніе населенія округа въ общемъ все еще находится на низкой степени. Въ большинствѣ крестьяне вѣруютъ полно, правильно и твердо, но больше сердцемъ; и не только по личному и разумносознательному убѣжденію въ правотѣ своихъ вѣрованій, сколько по родовому наслѣдству. Запасъ знаній изъ области православнаго вѣроученія у народа еще слишкомъ малъ и понятія его въ этой области очень узки и сбивчивы. Замѣтны лишь слабые, первые признаки просвѣтленія религіознаго народнаго сознанія и оживленія церковной жизни и только въ приходахъ, священники которыхъ особенно ревностны въ дѣлѣ пастырскаго учительства, и по преимуществу въ молодомъ, подрастающемъ поколѣніи. Частію недостатокъ энергіи нѣкоторыхъ приходскихъ священниковъ, а главное недостатокъ народныхъ школъ

# ОТДѢЛЪ II. ЧАСТЬ НЕОФФИЦІАЛЬНАЯ.

## Поученія на 10 заповѣдей.

## Поученіе 2-е.

О внутреннемъ законѣ Божіемъ или совѣсти и о внѣшнемъ законѣ Божіемъ или заповѣдяхъ Божіихъ.

Въ прошлый разъ мы бесѣдовали о томъ, что православному христіанину для достиженія вѣчнаго блаженства нужно съ правою вѣрою соединять и правую жизнь, т. е., дѣлами своими благоугождать Богу и быть исполнителями Его святой воли.

Но какъ мы можемъ знать, какія дѣла наши угодны Богу и какова Его воля? Побесѣдуемъ нынѣ объ этомъ.

Чтобы мы могли распознавать дѣла добрыя отъ худыхъ и дѣлами добрыми благоугождать Богу, Богъ далъ намъ святой законъ Свой. Вначалѣ человѣкъ въ самой природѣ души своей получилъ отъ Бога ясное начертаніе закона. Ибо когда Господь создалъ тѣло перваго человѣка изъ земли и вдохнулъ въ бездыханное еще лице его дыханіе жизни, то вмѣстѣ съ этимъ дыханіемъ всѣялъ въ естество его, какъ говорятъ св. отцы, нѣчто божественное, какъ бы нѣкій помыслъ, имѣющій въ себѣ, подобно искрѣ, и свѣтъ и теплоту,—свѣтъ, чтобы различать добро отъ зла, и теплоту, чтобы согрѣвать сердце любовію къ добру. Это—законъ Божій внутренній, потому что Господь положилъ его во внутреннѣйшемъ святилищѣ души нашей—сердцѣ; это законъ естественный, потому что онъ составляетъ неотъемлемую часть нашего естества. Мы называемъ этотъ законъ *совѣстью*, данною намъ отъ Бога для того, чтобы мы совѣщались съ нею въ дѣлахъ своихъ и, что она одобряетъ,—считали добромъ, а что осуждаетъ она, считали зломъ Нѣтъ человѣка, который бы не имѣлъ совѣсти, хотя и не всѣ живутъ по совѣсти

и хранятъ чистоту ея. Она, какъ голосъ Божій, раздающійся въ душѣ, то призываетъ насъ къ добрымъ дѣламъ и говоритъ намъ: „люби ближняго!“ „помоги ему!“ “защити!“ и т. п., то запрещаетъ злое, удерживаетъ отъ него: „не тронь—это чужое!“ „не лги!“ „не дѣлай вреда другому!“ и т. п. Все, что мы дѣлаемъ по совѣсти, есть наша добродѣтель; а то, что дѣлаемъ противъ совѣсти, есть грѣхъ, беззаконіе. Когда мы слушаемся этого голоса совѣсти и дѣлаемъ доброе или уклоняемся отъ совершенія зла, тогда въ совѣсти своей слышимъ одобреніе себѣ, а когда дѣлаемъ что либо противъ совѣсти, тогда совѣсть, какъ судія, порицаетъ насъ и обличаетъ. Совѣсть же и воздаетъ намъ за дѣла наши: награждаетъ или наказываетъ—награждаетъ миромъ душевнымъ, радостію и довольствомъ, наказываетъ скорбію, досадою, укорами, терзаніями.

Такъ совѣсть наша, вложенная внутрь насъ Богомъ, должна бы быть для насъ и законодателемъ, возвѣщающимъ намъ волю Божію, и судіею, обличающимъ дѣла наши, и мздовоздаятелемъ за дѣла наши; она должна бы быть для насъ и волею Божіею, и Окомъ Его, и намѣстницею Его правосудія. Но съ тѣхъ поръ какъ человѣкъ подвергся порчѣ грѣха, сталъ въ немъ тускнѣть и темнѣть и этотъ небесный свѣтъ; вмѣстѣ съ другими богодарованными силами и способностями души, помрачилась и исказилась въ душѣ его и совѣсть. Что теперь мы видимъ въ людяхъ? Только не многіе, любящіе Бога или боящіеся Его, слушаютъ голоса своей совѣсти и когда слышатъ въ себѣ этотъ голосъ, призывающій къ добру, говорятъ: *готово сердце мое, Боже, готово!* а при всякомъ соблазнѣ ко грѣху говорятъ, какъ говорилъ праведный Іосифъ: *како совершу глаголъ сей злый и согрѣшу предъ Богомъ?* Не многіе могутъ только *соуслаждаться* внутреннему закону, но не имѣютъ силы воли исполнить его. Большая часть выдумываетъ для себя разные предлоги, чтобы совсѣмъ не исполнять его, и вмѣсто того, чтобы жить такъ, какъ нужно жить по совѣсти, живутъ по волѣ сердецъ своихъ,

т. е. по своимъ самолюбивымъ прихотямъ и страстямъ, считая добромъ не то, что одобряетъ совѣсть, а то, что имъ нравится или что выгодно. Иные совсѣмъ извратили въ себѣ понятія о добромъ и зломъ; оттого считаютъ скупость бережливостью, расточительность—щедростью, гнѣвъ—чувствомъ благороднаго негодованія, месть—чувствомъ справедливости, нарушеніе поста—заботою о сохраненіи здоровья, отдаютъ деньги за большія проценты и называютъ это благоразумнымъ „обезпеченіемъ“ себя и т. п. Иной совсѣмъ усыпилъ въ себѣ совѣсть, не чувствуетъ въ себѣ ея голоса и обличеній; другой хотя и сознаетъ свои пороки и беззаконія, но не спѣшитъ очистить свою совѣсть раскаяніемъ и исправленіемъ, продолжаетъ прилагать грѣхи ко грѣхамъ, чтобы вслѣдъ затѣмъ до конца испить и чашу гнѣва Божія, если только благодать Божественная не коснется его. Такова теперь наша совѣсть!

Но Господь милосердый не оставилъ человѣка—грѣшника самому себѣ, но снова и еще яснѣе открылъ передъ нимъ Свою волю и законъ въ краткихъ и ясныхъ заповѣдяхъ. Когда Онъ увидѣлъ, что люди, все болѣе и болѣе предавалсь порокамъ и заблужденіямъ, перестали слушаться внутренняго закона совѣсти, который Онъ вложилъ въ ихъ душу, и исказили этотъ законъ, тогда Онъ изъ всего развращеннаго рода человѣческаго избралъ праведнаго Авраама и произвелъ отъ него особый избранный народъ еврейскій, которому и изрекъ свои заповѣди. Этотъ народъ онъ поселилъ сначала въ Египтѣ, здѣсь заставилъ его понести тяжелое и горькое рабство египетское, чтобы онъ, познавъ тяжесть рабства чувственнаго, позналъ тяжесть и рабства духовнаго—рабства грѣху и тѣмъ охотнѣе возжелалъ бы благаго ига заповѣдей Божіихъ. Онъ потомъ послалъ этому народу и избавителя вождя Моисея, который вывелъ его изъ Египта, чтобы поселить въ особой плодоносной странѣ, еще ранѣе обѣтованной ему. И вотъ когда этотъ народъ, подъ предводительствомъ Моисея, шелъ изъ Египта въ обѣтованную ему землю чрезъ

пустыню и остановился при горѣ Синаѣ, тогда Богъ позвалъ Моисея на гору, а народу повелѣлъ хранить себя въ особой чистотѣ. И въ одинъ день внезапно гора покрылась густыми облаками, а вершина ея—огнемъ. Страшный громъ и молнія привели народъ въ трепетъ. Наконецъ послышался изъ облаковъ небесный голосъ, изрекшій божественныя заповѣди. Вотъ эти заповѣди: 1-я: *Азъ есмь Господь Богъ твой; да не будутъ тебѣ бози иніи развѣ Мене.* 2-я: *Не сотвори себѣ кумира, и всякаго подобія, елика на небеси горѣ, и елика на земли низу, и елика въ водахъ, подъ землею: да не поклонишися имъ, ни послужиши имъ.* 3-я: *Не пріемли имене Господа Бога твоего всуе.* 4-я: *Помни день субботній, еже святити его: шесть дней дѣлай и сотвориши въ нихъ вся дѣла твоя; въ день же седьмый суббота Господу Богу твоему.* 5-я: *Чти отца твоего и матерь твою, да благо ти будетъ и да долголѣтенъ будеши на земли.* 6-я: *Не убій.* 7-я: *Не прелюбы сотвори.* 8-я: *Не укради.* 9-я: *Не послушествуй на друга твоего свидѣтельства ложна.* 10-я: *Не пожелай жены искренняго твоего, не пожелай дому ближняго твоего, ни села его, ни раба его, ни рабыни его, ни вола его, ни осла его, ни всякаго скота его, ни всего, елика суть ближняго твоего.*

Такія заповѣди изрекъ Господь Своему избранному народу еврейскому и повелѣлъ Моисею начертать ихъ на двухъ каменныхъ доскахъ или скрижаляхъ. Но не для одного народа еврейскаго онѣ даны были Богомъ, а и для всѣхъ насъ; потому что въ сущности своей онѣ—тотъ же законъ, который есть въ душѣ каждаго человѣка и который мы называемъ совѣстію, только яснѣе раскрытый и выраженный. „Ибо", говоритъ святитель Тихонъ, „что совѣсть непогрѣшительная возбраняетъ, то возбраняетъ и законъ Божій. Совѣсть бо добрая согласна закону Божію. Законъ Божій говоритъ: не убій, не укради и проч., тоже слышимъ и въ совѣсти своей, и она тебѣ тоже говоритъ. Итакъ берегись дѣлать то, что совѣсть запрещаетъ, да не уязвивши совѣсть, уязвишь душу твою". Потому-то и Господь нашъ І. Хрис-

тосъ, отмѣнивъ весь законъ Моисеевъ, не только не отмѣнилъ заповѣдей, данныхъ Богомъ чрезъ Моисея, но училъ понимать ихъ и исполнять совершеннѣе, нежели до Него ихъ понимали. „Не думайте", говорилъ Онъ, „что Я пришелъ нарушить законъ или пророковъ,—не нарушить пришелъ Я, но пополнить. Ибо истинно говорю вамъ, доколѣ не прейдетъ небо и земля, ни одна іота или ни одна черта не прейдетъ изъ закона, пока не исполнится все" (Мѳ. 5, 17. 18). А какъ Онъ училъ понимать заповѣди? Онъ училъ, что христіанамъ нужно не только дѣлать то, что повелѣваютъ заповѣди, но и стараться дѣлать больше, лучше и совершеннѣе того. „Вы слышали", говорилъ Онъ, „что сказано было древнимъ: не прелюбодѣйствуй". А Я говорю вамъ, что всякій, кто смотритъ на женщину съ вожделѣніемъ, уже прелюбодѣйствовалъ съ нею въ сердцѣ своемъ.... Еще слышали вы, что сказано древнимъ: не преступай клятвы, но исполняй предъ Господомъ клятвы твои. А Я говорю вамъ: не клянись во все.. Вы слышали, что сказано: люби ближняго и ненавидь врага твоего. А Я говорю вамъ: любите и враговъ вашихъ, благословляйте проклинающихъ васъ, благотворите ненавидящимъ васъ и молитесь за обижающихъ васъ и гонящихъ васъ" (Мѳ. 5, 27—28; 33—34; 43—44). Такъ, по ученію Христову, мы должны понимать и исполнять заповѣди Божіи; должны смотрѣть не на букву ихъ, а на самый духъ, на самую сущность ихъ. Ибо если праведность наша будетъ состоять только въ томъ, что мы не будемъ дѣлать дѣлъ, запрещаемыхъ заповѣдями, то мы не взойдемъ въ царство небесное. Такую праведность имѣли фарисеи и книжники. Но Господь сказалъ о такой праведности: „говорю вамъ, если праведность ваша не превзойдетъ праведности книжниковъ и фарисеевъ, то вы не взойдете въ царство небесное" (Мѳ. 5, 20).

Итакъ, чтобы знать волю Божію и дѣлами своими благоугождать Ему, мы, бр., имѣемъ всѣ средства. Мы можемъ слышать волю Божію и внутри насъ, въ совѣсти своей, и читать

ее въ заповѣдяхъ Божіихъ. Будемъ слушаться своей совѣсти и поступать такъ, какъ она требуетъ, и не будемъ ничего дѣлать противнаго ей. А свою совѣсть будемъ провѣрять ясными заповѣдями Божіими. Для сего всѣмъ намъ необходимо поучаться заповѣдямъ Божіимъ, вникать въ ихъ духъ и самую сущность, чтобы быть совершенными сынами Божіими, достойными царства небеснаго.

## О важности и необходимости знанія медицины пастырями церкви и пополненія церковныхъ библіотекъ изданіями и руководствами медицинскаго содержанія.

Гиппократъ, который называется отцемъ медицины, сказалъ: „всѣ люди должны знать медицину“. Не знаемъ, осуществится ли когда желаніе мудраго врача, но не подлежитъ сомнѣнію то, что всѣ люди, даже простые поселяне, желаютъ знать медицину, желаютъ проникнуть въ тайну ея. Вотъ больной: и всякъ наперерывъ спѣшитъ помочь ему, предлагая ему тѣ или другіе совѣты, лекарства, о которыхъ или слыхали, или даже сами испытали на себѣ. Тѣмъ полезнѣе, необходимѣе для священника, какъ пастыря своего прихода, имѣющаго весьма частое и близкое соприкосновеніе съ больными, имѣть запасъ медицинскихъ свѣдѣній. Положимъ, священникъ есть собственно врачъ духовный и его главная задача—руководствованіе душъ ввѣренной ему паствы къ царствію Божію. Но этотъ святой долгъ не только не запрещаетъ духовному врачу содѣйствовать тѣлесному врачеванію больныхъ, но чрезъ проведеніе въ жизнь паствы своей добрыхъ правилъ нравственности и правильной жизни, какъ главнаго источника здоровья, и въ особенности чрезъ преподаніе въ святыхъ таинствахъ Божіей благодати, врачующей не только душевныя, но и тѣлесныя болѣзни, онъ—духовный врачъ дѣлается уже и врачемъ тѣлеснымъ. Еще болѣе возвысилось бы служеніе пастыря, если бы онъ обладалъ знаніями на-

учной медицины, хотя бы въ размѣрѣ первоначальныхъ и самыхъ необходимѣйшихъ свѣдѣній, и прилагалъ бы ихъ къ дѣлу тамъ, гдѣ требуется неотложная врачебная помощь. Извѣстно, что между святителями и пастырями церкви было не мало искусныхъ врачей. Самъ Пастыреначальникъ Спаситель Христосъ, во время земной жизни, показалъ тысячу примѣровъ сострадания къ болящимъ чрезъ исцѣленіе ихъ отъ болѣзней тѣлесныхъ и св. апостоламъ заповѣдалъ тоже (Марк. 16, 18; Лук. 9, 2).

Медицинскія знанія нужны въ особенности для священниковъ сельскихъ приходовъ и преимущественно такихъ, гдѣ нѣтъ ни врача, ни фельдшера. Въ приходѣ всегда найдется не мало больныхъ, одержимыхъ различными болѣзнями—простыми и болѣе сложными, серьезными; къ нимъ первый призывается священникъ, и онъ первый, казалось бы, могъ подать добрый врачебный совѣтъ. Бываютъ особаго рода болѣзни, какъ, напр.: ударъ, отравленіе, кровотеченіе и др., гдѣ каждая минута угрожаетъ смертію больному, а до врача, или фельдшера 20—25 и болѣе верстъ, и притомъ стоятъ осенняя бездорожица или весенній разливъ водъ,—кто въ такихъ непредвидѣнныхъ и опасныхъ для жизни случаяхъ скорѣе могъ бы подать благовременную помощь, какъ не тотъ же священникъ-пастырь прихода? Случаются нерѣдко между жителями селъ и деревень другія эпидемическаго характера болѣзни, какъ, напр., тифъ. При отсутствіи врачебной помощи, при незнаніи мѣръ, необходимыхъ для предохраненія отъ заразы, болѣзни эти быстро распространяются и сельскіе поселяне являются въ самомъ бѣдственномъ, безпомощномъ, жалкомъ положеніи,—здѣсь опять тотъ же священникъ скорѣе всего могъ бы придти на помощь. Свѣдущій въ медицинѣ пастырь прихода, понявъ родъ болѣзни, немедленно предпринялъ бы рекомендуемыя врачебною наукою мѣры: оберегъ бы себя и свое семейство отъ заразы, остановилъ бы распространеніе ея между приходскими жителями и съумѣлъ бы облегчить страданія больныхъ. Простой сельскій народъ къ намъ,

священникамъ, именно и обращается часто за врачебною помощію. Кому изъ насъ, въ самомъ дѣлѣ, не приводилось слышать при посѣщеніи больныхъ: „батюшка, не знаете ли, чѣмъ помочь больному“? Кто изъ насъ также не знаетъ, съ какимъ довѣріемъ принимаются наши врачебные совѣты окружающими больнаго и какою радостною надеждою на выздоровленіе, при полученіи сихъ совѣтовъ, озаряются лица даже такихъ больныхъ, у которыхъ силы уже истощаются въ борьбѣ съ смертію? Но, съ другой стороны, кто изъ насъ не замѣчалъ и мрачныхъ, печальныхъ, даже отчаянныхъ выраженій на лицахъ больныхъ и вопрошающихъ насъ, когда мы молчимъ, или отзываемся незнаніемъ. Удивительно ли послѣ этого, что простой народъ оставаясь въ безпомощномъ положеніи, часто впадаетъ въ крайности и заблужденія самыя грубыя: тотчасъ же послѣ напутствованія больнаго св. тайнами обращается къ разнымъ наговариваніямъ, нашептываніямъ и даже приводитъ въ домъ больныхъ различныхъ знахарей и знахарокъ. Для пастырей церкви, преданныхъ своему призванію, это—явленія грустныя и нежелательныя... Очевидно, предупредилъ бы таковыя явленія священникъ, если бы съумѣлъ подать благовременную врачебную помощь больнымъ Вмѣстѣ съ симъ мы пастыри возвысили бы и свой авторитетъ, пріобрѣли бы себѣ отъ паствы особое довѣріе, вліяніе, при помощи которыхъ можетъ успѣшнѣе дѣйствовать на степень развитія и религіозно-нравственной стороны прихожанъ.

Не разъ разсылаемыя въ настоящемъ году на имя настоятелей церквей руководственныя наставленія на случай появленія въ приходахъ заразныхъ болѣзней вполнѣ доказываютъ то, что и лица, стоящія во главѣ управленія народомъ, считаютъ насъ, священниковъ, надежными проводниками въ народѣ необходимыхъ медицинскихъ знаній и способными подать больнымъ помощь. Но очевидно, что такихъ краткихъ наставленій, касающихся собственно заразныхъ болѣзней, и притомъ запаздывающихъ, при заболѣваемости народа многими другими болѣзнями,

недостаточно. Откуда же пастырь прихода можетъ безпрепятственно, во всякое время, во всякихъ болѣзняхъ почерпать полезныя медицинскія свѣдѣнія для подаянія благовременной помощи больнымъ? Не подлежитъ сомнѣнію, что изъ воспитанниковъ, кончившихъ курсъ семинаріи лѣтъ 25 и болѣе, когда читалась въ семинаріи элементарная медицина, когда воспитанники дежурили въ семинарской больницѣ, а нѣкоторые и правили должность аптекарей, многіе успѣли усвоить не мало медицинскихъ свѣдѣній, и теперь, будучи пастырями, примѣняютъ свои знанія къ больнымъ прихожанамъ. Намъ извѣстны даже такіе почтенные пастыри, которые имѣютъ собственныя домашнія аптечки и съ пользою служатъ больнымъ. Съ исключеніемъ изъ семинарской программы медицины, нынѣ единственнымъ путемъ для пріобрѣтенія священниками медицинскихъ свѣдѣній служитъ собственный трудъ ихъ, чтеніе ими такихъ книгъ и руководствъ, которыя самымъ простымъ, наглядным образомъ могли бы уяснять родъ и признаки болѣзней и ихъ леченіе простыми, доступными пособіями и лекарствами. Гдѣ же взять средствъ для пріобрѣтенія такихъ руководствъ? По скудости нашихъ собственныхъ средствъ и въ виду общей пользы приходской, мы указали бы на церковныя библіотеки, могущія служить вѣрнымъ, надежнымъ складомъ и книгъ медицинскаго содержанія, и полагали бы, что отсутствіе въ настоящее время въ церковныхъ библіотекахъ таковыхъ книгъ составляетъ не малый пробѣлъ. Доселѣ, дѣйствительно, выписка изданій и руководствъ медицинскаго содержанія на церковный счетъ не практиковалась; въ теченіе слишкомъ 25-тилѣтней нашей службы намъ не приводилось получать отъ мѣстной епархіальной власти ни дозволенія, ни запрещенія на то, и наши собраты рѣшаютъ этотъ вопросъ различно: одни незнаніемъ, а другіе неимѣніемъ права. По нашему личному убѣжденію, какъ нѣтъ ничего неприличнаго для духовнаго пастыря знать медицинское искусство и помагать, по возможности, въ болѣзняхъ тѣлесныхъ, такъ точно не было бы неприлично,

незаконно и храму, при которомъ служитъ таковой врачъ, пріобрѣтать на счетъ церкви изданія и руководства медицинскаго содержанія для блага того самаго народа, изъ щедротъ котораго составляется церковная сумма. Напротивъ, это всегда служило бы великимъ благомъ какъ для пастырей, такъ и для пасомыхъ. Имѣя подъ руками руководства, священникъ могъ бы, если иногда и не вполнѣ, то покрайней мѣрѣ отчасти, понявши болѣзнь, дать совѣтъ—какъ обходиться съ больными и какія принять мѣры къ ослабленію и леченію ея. И сами прихожане могли бы читать эти руководства *). Намъ извѣстны и примѣры, когда епархіальная власть разрѣшала выписывать духовенству на церковный счетъ медицинскія руководства. Такъ, преосвященный Вологодскій на журналѣ одного благочинническаго собранія о желаніи пріобрѣтать руководства медицинскаго содержанія положилъ такую резолюцію: „съ удовольствіемъ разрѣшаю просимое и даже прошу исполнить это на дѣлѣ“ (Волог. Епарх. Вѣд. за 1869 г. № 17).

Въ каталогъ книгъ, рекомендуемыхъ для пріобрѣтенія въ церковныя библіотеки по Нижегородской епархіи, внесена книга: „Популярная гигіена“, соч. Карла Реклама, проф. медицины въ Лейпцигѣ (Календ. для духовенства 1879 г.).

Свящ. *Ѳ. Митинскій.*

---

*) Въ этихъ цѣляхъ, всего полезнѣе было распространеніе свѣдѣній по гигіенѣ. Съ распространеніемъ этихъ свѣдѣній, понятно, менѣе ощутительна была бы нужда и въ медицинѣ. *Ред.*

— *По поводу трехлѣтія со дня открытія церковно-приходскаго попечительства при Николаевской ц. с. Широкова, Ветлужскаго у.* Село Широково существуетъ съ 1865 года. Церковь въ немъ однопрестольная, освящена въ честь св. Николая Мирликійскаго и съ самаго начала прихода еще первая. Не отличаясь ни красотою архитектуры, ни удобствомъ помѣщенія для молящихся, она имѣетъ видъ весьма убогій и построена изъ двухъ уже отжившихъ свой вѣкъ деревянныхъ церквей, пожертвованныхъ и перевезенныхъ изъ сосѣдняго с. Холкина. Небольшое, приходящее въ ветхость, низкое, почти безъ всякихъ внѣшнихъ украшеній зданіе, окрашенное въ кирпичную краску, съ низкой же колокольней, двумя бѣлыми, приплюснутыми главами и небольшими крестами,—вотъ незатѣйливый видъ настоящаго Широковскаго храма. Но главный недостатокъ этого храма,—тѣснота въ сравненіи съ численностію прихода, которая ощущается даже и въ небольшіе праздники. Все это побудило мѣстныхъ священниковъ (каковыхъ теперь при церкви два) озаботиться устройствомъ въ с. Широковѣ новаго каменнаго храма, который бы вполнѣ удовлетворялъ потребностямъ прихода. Но такъ какъ наличныхъ средствъ для сего ни въ церкви, ни у прихожанъ не имѣлось, то священники, послѣ нѣкотораго разсужденія, рѣшили открыть церковно-приходское попечительство, которое бы поставило первой и главной своей заботой—устройство новаго храма. Рѣшивъ такимъ образомъ открыть попечительство, священники старались склонить къ этому и прихожанъ и съ этою цѣлію при всякомъ удобномъ случаѣ заводили въ приходѣ о семъ слово. Когда сдѣлалось яснымъ, что большая часть прихода согласна на предложеніе священниковъ,—то назначенъ былъ день церковно-приходскаго схода и на немъ, послѣ указанія на убожество мѣстнаго храма и на неотложность открытія по сему поводу попечительства, прочитано и разъяснено было положеніе о церковно-приходскихъ попечительствахъ и послѣ сего уже безъ труда составлены были приговоръ прихожанъ и прошеніе къ Преосвященному Костромскому, о разрѣшеніи открыть въ с Широковѣ церковно-приходское попечительство. По полученіи желаемаго разрѣшенія, избраны были предсѣдатель и члены попечительства, а по утвержденіи ихъ епарх. начальствомъ, 26-го декабря 1890 г. состоялось и открытіе попечительства. На литургіи въ означенный день младшимъ священникомъ произнесено было, по поводу открытія попечительства, поученіе, въ которомъ выяснена главная цѣль открытія попечительства и сдѣланъ призывъ къ жертвѣ

на устройство новаго храма. Послѣ литургіи, въ церкви же (за неимѣніемъ пока другаго помѣщенія) открыто было первое засѣданіе попечительства, при чемъ младшій священникъ избранъ былъ въ должность казначея попечительства. И вотъ, дѣятельность попечительства началась... Въ нынѣшнемъ 1893 г. исполнится первое трехлѣтіе существованія церковно-приходскаго попечительства при Николаевской церкви с. Широкова, поэтому небезъинтересно будетъ знать о результатахъ его дѣятельности. Сдѣлано-ли поименованнымъ попечительствомъ хотя нѣчто въ продолженіи трехлѣтняго его существованія и является ли такимъ образомъ хотя небольшая надежда на достиженіе поставленной попечительствомъ цѣли? На эти вопросы уже и теперь, при сравнительно краткомъ срокѣ существованія попечительства, можно отвѣтить утвердительно. За истекшій срокъ попечительствомъ на пріобрѣтенныя имъ средства заготовлено для новаго храма 200000 кирпича, при чемъ устроены для изготовленія кирпича два огромныхъ сарая и двѣ обжигательныя печи,—затѣмъ, заказанъ гражданскому инженеру Шкалину планъ для имѣющаго строиться новаго храма (за планъ уплачено 150 руб.) и кромѣ сего въ настоящее время скоплено на сооруженіе новаго храма почти $1^1/_2$ тыс. рублей деньгами, которыя и хранятся въ сберегательной кассѣ госуд. банка. Помимо главной цѣли своей—устройства новаго храма, попечительство старается по мѣрѣ возможности о достиженіи и другихъ побочныхъ цѣлей. Такъ, въ 1891 г. имъ устроена при церкви новая пятистѣнная сторожка, въ которой теперь ведутся внѣбогослужебныя собесѣдованія и бываютъ собранія попечительства, а въ 1892 г. исправлена пришедшая въ ветхость каменная часовня, находящаяся въ с. Широковѣ (на оба предмета попечительствомъ истрачено болѣе 200 рублей). Средства попечительства составляются: изъ пожертвованій собираемыхъ по подписному листу и въ кружку на сооруженіе новаго храма (кружка эта обыкновенно выставляется въ храмѣ каждый праздникъ въ то время, когда священникъ послѣ литургіи даетъ народу цѣловать св. крестъ, при этомъ держитъ кружку одинъ изъ членовъ попечительства, который и встаетъ для сего около амвона, рядомъ съ священникомъ), но больше всего пожертвованія бываютъ хлѣбомъ, который собирается по деревнямъ членами попечительства. Есть также пожертвованія холстомъ и другими предметами. Помимо всего этого, прихожане, одобряя дѣйствіе попечительства и сочувствуя благимъ цѣлямъ его, составили два приговора, изъ которыхъ по каждому

слѣдуетъ выбирать по 50-ти копѣекъ съ каждой ревизской души въ приходѣ. Сборъ этотъ тоже производится членами попечительства (жаль только, что раскладку по 50 коп. еще не всѣ пока уплатили, по причинѣ послѣднихъ неурожаевъ). Наконецъ, для увеличенія средствъ на сооруженіе новаго храма и для скорѣйшаго устройства его, причтомъ и прихожанами Никол. ц. с. Широкова въ 1892 г. испрошена была у епарх. начальства, пока на одинъ годъ, книга для сбора пожертвованій по разнымъ губерніямъ. Приходъ попечительскихъ суммъ, а равно также и расходъ ихъ исправно записываются казначеемъ попечительства въ особыя шнуровыя книги, скрѣпленныя въ Костромской дух. консисторіи. Отчетъ о приходѣ и расходѣ суммъ и вообще о дѣятельности попечительства въ концѣ каждаго года читается прихожанамъ, которые,—видя цѣлость жертвуемыхъ суммъ и благоразумное употребленіе ихъ,—на дѣлѣ убѣдились теперь въ пользѣ попечительства, вполнѣ полюбили его и не рѣдко большое „спасибо“ говорятъ своимъ пастырямъ за его учрежденіе. Изъ сказаннаго о попечительствѣ при Николаевской ц. с. Широкова видно, что не безплодно всетаки его существованіе. И если бы не открыто было означенное попечительство, то и до сихъ поръ дѣло объ устройствѣ новаго храма въ с. Широковѣ нисколько бы не подвинулось впередъ (не говоря уже о другихъ нуждахъ прихода), а теперь хотя начало этому благому дѣлу положено. Нельзя по этому не пожелать отъ души, чтобы означенное попечительство и впредь не ослабѣвало въ своей дѣятельности,—дабы, при помощи Божіей, достигнута была въ возможной скорости прежде всего главная цѣль попечительства, а затѣмъ не оставлены бы были безъ вниманія и другія нужды прихода. Вообще нужно признаться, что церковно-приходскія попечительства по истинѣ доброе дѣло! Много пользы могутъ принести они, при усердномъ, конечно, отношеніи къ дѣлу членовъ ихъ! Епархіальныя начальства, вполнѣ оцѣнивъ пользу церковно-приходскихъ попечительствъ, желаютъ, чтобы они заводились при каждой церкви. Особенно же много могутъ помочь попечительства бѣднымъ нуждающимся церквамъ и приходамъ. Дай Богъ, поэтому, чтобы полезныя и благотворительныя учрежденія эти заводились по возможности въ каждомъ селѣ! *(С. К. О.).*

# ОБЪЯВЛЕНІЕ.


**КОЛОКОЛО-ЛИТЕЙНЫЙ ЗАВОДЪ**

СЕРАПІОНА НИКОЛАЕВИЧА

**ЗАБѢНКИНА,**

**въ селѣ Шунгѣ, близъ гор. Костромы.**

Принимаю отливку новыхъ и переливку старыхъ колоколовъ, для церквей, различнаго вѣса, съ ручательствомъ за полное ихъ достоинство, какъ въ качествѣ, такъ и звукѣ. Съ заказами лично или письменно, прошу адресоваться, какъ указано выше.

*С. Н. ЗАБѢНКИНЪ.*

4—4


---


**Содержаніе неоффиціальной части.** Поученія на заповѣди Божіи—поученіе 2-е. О важности и необходимости знанія медицины пастырями церкви и пополненія церковныхъ библіотекъ изданіями и руководствами медицинскаго содержанія. По поводу трехлѣтія со дня открытія церковно-приходскаго попечительства при Николаевской п. с. Широкова, Ветлужскаго у. Объявленіе. *Приложеніе* „Галичская десятина“ стр. 161—168.


---


*Редакторы: Семинаріи Ректоръ, Архимандритъ Менандръ.*

*Преподаватель Семинаріи В. Строевъ.*

Дозв. цензурою. Мая 9 дня 1893 г. Кострома. Въ Губернской Типографіи.

3 двоеженцовъ всего рубль 28 алтынъ съ деньгою взято. Того жъ года по книгамъ за рукою попа Ивана вѣнечныхъ пошлинъ съ 3 отроковъ 7 алтынъ 3 деньги взято. Данныя и вѣнечныя деньги платили: Солдовскаго монастыря игуменъ Герасимъ 149—150 г., попъ Семіонъ 151, 155, 157, 159—161 г., князь Васильевъ крестьянинъ Волконскаго 152 г.

164 г. положено дани 5 рублей 18 алтынъ съ деньгою заѣзда гривна.

Съ 188 г. въ Усольской. § 21.

---

184 г. сентября 9 подалъ къ подпискѣ Соли Галицкія монастыря Успенія Пр. Б. Солдовскаго монастыря Жуковы пустыни грамоту свою настольную игуменъ Іоасафъ да онъ же подалъ 4 грамоты Соли Галицкія соборныя церкви Успенія Пр. Б. грамота попа Ивана Андронникова, грамота діакона Семіона Ѳедорова, съ Чухломы Аврамієва монастыря чернаго попа Кипріана, приходскія церкви св. вел.муч. Парасковеи грамота попа Семіона Калистратова.

## 96.

Церковь Богоявленіе Господа Бога и Спаса нашего Іисуса Христа влосеве рамене, дани двенадцать алтынъ двѣ денги, десятильничихъ гривна.

Генваря въ 30 день на пынѣшнеи на 136 годъ тѣ денги *взято.*

143 г. по росписи Степана Никитина прибыла церковь Богоявленія Господня въ Лосевѣ Раменьѣ, дани 12 алтынъ 2 денги, заѣзда 3 алтына 2 деньги и іюня въ день тѣ деньги взято, платилъ Степанъ Никитинъ.

164 г. положено дани рубль 6 алтынъ 2 деньги заѣзда гривна.

Съ 188 г. въ Усольской. § 11.

---

## 97.

Церковь преображеніе Спасово монастырь на рѣкѣ на Волче Александровы пустыни, дани вдвое семьнадцать алтынъ. десятильничихъ и заѣзда двѣ гривны.

Генваря во 30 день на нынѣшній на 136 годъ тѣ деньги *взято*.

137 г. генваря 12 тѣ деньги взято, платилъ игуменъ Варлаамъ. Данныя и вѣнечныя пошлины платили: старецъ Ѳеодосей 147 г, чорной попъ Корнилъ 148 г., попъ Владиміръ 150 г., князь Васильева крестьянинъ Волконскаго 152 г., Успенскаго монастыря бѣлой попъ Семіонъ 155 г.

164 г. положено дани 14 алтынъ 4 деньги, заѣзда гривна.

Съ 188 г. въ Усольской. § 22.

---

122 г. февраля 5 запечатана грамота жаловольная Галицкаго уѣзда Усольской осады Олександровы пустыни Лосева Раменья игумену Варламу съ братьею на манастырскую вотчину, пошлины 7 руб. съ полтиною для бѣдности *) и по приказу постельничего и намѣстника Костентина Ивановича Михалкова для разоренья пошлинъ не взято.

## 98.

Церковь Живоначальныя Троицы в ашугомѣ вселѣ Троецкомъ дани вдвое два рубля тридцать два алтына две денги. десятильничихъ две гривны.

И декабря въ 3 день на нынѣшній на 136 годъ тѣ деньги *взято*. Денги платилъ боярина Михаила Борисовича Шеина крестьянинъ Ивашко Бурковъ **].

140 г. по книгамъ за рукою попа Василья съ 10 отроковъ да съ 1 троеженца да съ 1 двоеженца рубль 2 алтына 4 деньги взято. Данныя и вѣнечныя пошлины платили: боярина Михаила Борисовича

*) Пробѣлъ, а послѣдующія слова „и по приказу..“писаны другою рукою. П. К. Безпошлинная кн. 1 л. 72.

**) Двойная.

Шеина крестьянинъ Ивашко Бурковъ 136 г., Якова Дашкова крестьянинъ 147 г., Дмитрія Плещѣева крестьянинъ 148 г., попъ Владиміръ 150 г. попы Иванъ и Прохоръ 158—161 г.

164 г. положено дани 7 руб. 15 алтынъ 4 денги заѣзда гривна. Съ 188 г. въ Усольской. § 23.

## 99.

Церковь Живоначальныя троицы Сергиева монастыря вселѣ Гнѣзниковѣ на рѣкѣ на Костромѣ да церковь Аѳонасия и Кирилла Александрѣискихъ чюдотворцовъ, дани шестьнадцать алтынъ полчетверти денги десятильничихъ гривна.

137 г. Троицкая *).

## 100.

Церковь Николы чюдотвоца на погостѣ въ верховье на рѣкѣ на Костромѣ, дани вдвое три рубли тринадцать алтынъ, десятильничихъ две денги.

И сентября въ 28 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ денги *взято*, платилъ попъ Иванъ **).

137 г. февраля 29 тѣ денги взято, платилъ тое жъ церкви попъ Моисѣй. 139 г. марта 9 по книгамъ Усольской осады церкви Николая чуд., что въ Верховьѣ, на р. Костромѣ, за рукою попа Ксенофонта прошлаго 138 г. съ 8 отроковъ 20 алтынъ, да нынѣшняго 139 г. съ 2 отроковъ 5 алтынъ взято. 140 г. по книгамъ за рукою попа Ксенофонта 139 г. съ 7 отроковъ да съ 2 двоеженцевъ 26 алтынъ 3 денги, да 140 г. съ отрока 2 алтына 3 денги взято. Данныя

*) Въ Десятинѣ Троицо-Сергіева монастыря вотчинъ сей церкви нѣтъ, въ 164 г. въ сей же десятинѣ прибыла вновь. См. церковь Аѳонасья и Кирилла въ селѣ Гнѣзниковѣ, а съ 188 г. писалась въ Усольской десятинѣ.

**) Двойная.

и вѣнечныя пошлины платили: попъ Иванъ 136 г., Александра Воейкова крестьянинъ Митко Петровъ 143 г., попъ Ксенофонтъ 156—161 г.

164 г. положено дани 5 руб. 7 алтынъ 2 деньги заѣзда гривна.

Съ 188 г. въ Усольской. § 24.

## 101.

## Судайская осада.

Церковь святыя мученицы пятницы вотцкие волости, дани вдвое рубль девятнадцать алтынъ четыре денги, десятильничихъ и заезда две гривны *).

Генваря въ 30 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ денги *взято*.

137 г. генваря 23 тѣ деньги взято, платилъ попъ Иванъ. 143 г. по книгамъ за рукою попа Гаврилы вѣнечныхъ пошлинъ 142 г. съ 3 отроковъ 7 алтынъ 3 денги да съ похоронной гривна, да 143 г. съ 2 отроковъ 5 алтынъ взято, платилъ церковной Рождественской дьячекъ Томилко Поповъ. Данныя и вѣнечныя пошлины платили: Рождественской дьячекъ Томилко Поповъ 143 г., князь Григорія Андрѣевича Хованскаго человѣкъ 147—157, Городецкаго чудотворца Аврамія монастыря черной старецъ Іона 152 г., боярина Бориса Александровича Репнина человѣкъ 155 г., попы Калистратъ 156, 157 и 160 г., Гавріилъ 158, 159 и 161 г.

164 г. положено дани 2 руб. 8 алтынъ заѣзда гривна, писать Воскресеніе Христово.

Съ 188 г. въ Усольской. § 25.

---

152 г. марта 23 запечатана благословенная грамота по челобитью Судайскія осады Витція волости Пятницкихъ поповъ Гавріила и Калистрата на два престола Благовѣщенія Пресв. Богородицы, да другой престолъ св. вел. муч. Парасковѣи нарицаемыя Пятницы, пошлины 2 гривны взято.

---

*) Двойная.

## 102.

Церковь святаго мученика Георгія на погосте Вмитине верховье, дани двадцать четыре алтына две денги, десятильничихъ и заѣзда гривна.

Генваря въ 30 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ денги *взято*· 164 г. положено дани 2 руб. 12 алтынъ заѣзда гривна.

Съ 188 г. въ Усольской. § 7.

## 103.

Церковь Святаго Пророка Ильи высоко сельские волости, дани вдвое два рубли четыре алтына четыре денги, десятильничихъ две гривны

Генваря въ 30 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ денги *взято* *).

137 г. декабря 17 тѣ деньги взято, платилъ боярина Михаила Борисовича Шеина человѣкъ Иванъ Бунковъ. 138 г. декабря 10 Судайскія осады церкви св. пр. Ильи Высокосельскія волости вѣнечныхъ нынѣшняго 138 г. съ 4 отроковъ пошлинъ 10 алтынъ взято. 139 г. марта 16 по книгамъ Судайской осады церкви Ильи пророка вѣнечныхъ пошлинъ прошлаго 138 г. съ 2 отроковъ 5 алтынъ, да нынѣшняго 139 г. съ 5 отроковъ 12 алтынъ 3 деньги. 140 г. по книгамъ съ 3 отроковъ 7 ал. 3 д. да прошлаго 139 г. съ 3 отроковъ 3 д. взято. 143 г. по росписи за рукою попа Игнатія 142 г. вѣнечныхъ пошлинъ съ 3 отроковъ 7 ал. 3 д. да съ двоеженца полпяты алтына взято. 143 г. съ 2 отроковъ да съ двоеженца 9 ал. 3 д. взято, платилъ Томилко Поповъ. Данныя д. и вѣнечныя пошлины платили: попы Иванъ да Богданъ 143 г., Михаило Скобельцева крестьянинъ 147 г. Бориса Бахтеярова крестьянинъ 148 г., попъ Василей 151, 155—156 г. попъ Иванъ да Василей 160—161.

*) Двойная.

164 г. положенно дани 3 руб. 14 алтынъ 3 деньги заѣзда гривна.

184 г. Воскресенія Христова да въ придѣлѣ пророка Ильи.

Съ 188 г. въ Усольской. § 26.

## 104.

Церковь рождество пречистые Богородицы Тормановские волости, дани рубль девятнадцать алтынъ зденгою, десятильничихъ и заезда гривна.

Генваря въ 30 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ деньги *взято*.

164 г. положенно дани 3 руб. 12 алтынъ заѣзда гривна.

Съ 188 г. въ Усольской. § 8.

## 105.

Церковь Благовѣщение пречистые Богородицы всудае на посадѣ, дани вдвое три рубли шестнадцать алтынъ. десятильничихъ две гривны.

И декабря въ 26 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ деньги *взято*, платилъ попъ Семіонъ *).

137 г. генваря 31 тѣ деньги взято. платилъ черной попъ Селивестръ. 139 г генваря 4 по книгамъ Судайскія осады церкви Благовѣщенія Пр. Богор., что въ Судаѣ на посадѣ, вѣнечныхъ прошлаго 138 г. съ 2 отроковъ съ 2 двоженцевъ 14 алтынъ взято да нынѣшняго 139 г. съ 3 отроковъ 7 алтынъ 3 денги взято. Данныя и вѣнечныя пошлины платили попъ Игнатій 148, 156 г., Юрій Романчуковъ 150 г., Гаврило Племянниковъ 151 г., князь Семенъ Шелешпальской 155 г., попы: Игнатей 156 г. Кириллъ 158—161 г.

164 г. положено дани 3 руб. 15 алтынъ 4 деньги заѣзда гривна.

Съ 188 г. въ Усольской. § 4.

*) Двойная.

184 г. генваря 24 подана къ подпискѣ пригородка Судая церкви Благовѣщенія Пр. Б. грамота попа Родіона Лазарева, другая грамота того же уѣзда Судайскія осады церкви Николая чуд. грамота попа Василія Ѳеодулова.

## 106.

Церковь преображеніе Спасово вшарта. повской волости на погосте, дани вдвое рубль четырнадцать алтынъ две денги, десятильничихъ две гривны.

Генваря въ 12 день на нынѣшнеи на 136 годъ тѣ денги *взято* *).

139 г. генваря 4 по книгамъ Галицкія десятины церкви преображенія Спасова, что въ Шартановской волости, вѣнечныхъ прошлаго 138 г. съ 2 отроковъ да съ 2 двоеженцевъ пошлинъ 14 алтынъ взято. 140 г. по книгамъ за рукою попа Поликарпа 139 г. съ 4 отроковъ 10 алтынъ да 140 г. съ 1 отрока 2 алтына 3 денги взято, 143 г. по книгамъ 139 г. вѣнечныхъ пошлинъ съ 2 отроковъ ад съ 2 двоеженцовъ пошлинъ 14 алтынъ взято. Данныя и вѣнечныя пошлины платили: Юрій Романовъ Чулковъ 143 г. Иванъ Романчуковъ 148 г., попъ Владиміръ 150 г., Юрьевъ человѣкъ Романчукова 151 г., дьячекъ Осинко Анисиновъ 155 г., попъ Игнатій 156 г., попъ Іосифъ 158 и 160 гг.

164 г. положено дани рубль 17 алтынъ 5 денегъ заѣзда гривна.

Съ 188 г. въ Усольской. § 27.

## 107.

Церковь Святаго мученика Дмитрея селунскаго выдцкой волости, дани тринадцать алтынъ две денги, десятильничихъ и заѣзда гривна.

Генваря въ 30 день на нынешнеи на 136 годъ тѣ деньги *взято*.

164 г. положено дани рубль 21 алтынъ 5 денегъ заѣзда гривна.

184 г. въ Высоцкой волости.

Съ 188 г. въ Усольской. § 9.

*) Двойная.

## 108.

Церковь николы чудотворца на погосте вохтомские волости, дани вдвое рубль тритцать алтынъ четыре денги десятильничихъ две гривны.

Генваря въ 5 день на нынешнеи на 136 годъ тѣ денги *взято* платилъ Алесѣевъ человѣкъ Головина Ѳектисъ Елизаровъ *).

137 г. генваря 31 тѣ денги взято, платилъ тоежъ церкви попъ Михайло. 140 г. по книгамъ за рукою попа Ѳеодора съ 3 отроковъ да съ двоеженца вѣнечныхъ пошлинъ 12 алтынъ взято. Данныя и вѣнечныя пошлины платили: князь Даниловъ человѣкъ Гагарина Максимко Сафоновъ 143, 150 г., князь Ивана Барятинскаго человѣкъ 147 г., Сергѣй Макаровъ 148 г., попъ Ѳедоръ 151, 156—157 г., стольника князь Петрова человѣкъ Долгорукова 155 г., попъ Ѳедулъ 156, 161 г.

164 г. положено дани рубль 5 денегъ заѣзда гривна.

Съ 188 г. въ Усольской. § 28.

## 109.

Церковь рожество христово на погосте водцкие волости, дани вдвое дватцать алтынъ, десятильничихъ две гривны.

Генваря въ 31 день на нынешнеи на 136 годъ тѣ денги *взято*, платилъ Герасимъ Савастовъ.

137 г. генваря 2 тѣ деньги взято, платилъ діячокъ Микитка Романовъ. Данныя и вѣнечныя пошлины платили: попъ Михаилъ 143 г. боярина князя Ивана Васильевича Голицына княгини Ульяны Ивановны человѣкъ 148, 150—151 г., Городецкаго монастыря чудотворца Аврамія старецъ Іона 152 г., черной попъ Іона 155 г., попъ Андроникъ 156—169 г.

164 г. отмѣтки ни какой нѣтъ.

Съ 188 г. въ Усольской. § 29.

---

*) Двойная.